P.O. : Regd. No.: L-29/JK-432/23-25

RNI No. : JKBIL/2011/38654 ₹ 10

ओ३म्

वर्ष : 14 अंक : 1 अप्रैल 2024 – सितम्बर 2024

वेद ईश्वरीय वाणी

अर्द्ध-वार्षिक

''वयं सोमिनः पथः मा प्रगाम मा यज्ञात्''

प्रभु हम तेरे अध्यात्म ऐश्वर्य वाले मार्ग से और यज्ञ से पृथक् न चलें

(ऋग्वेद 10/57/1)

ओ३म्

शिशु पर वेद माता की कृपा

आयुष्मान **इयान**, सुपुत्र श्री गौरव मित्तल, का जन्म तिथि 12 अक्तूबर 2022 को, इनके नाना जी, **पूजनीय श्री स्वामी राम स्वरूप, योगाचार्य जी**, के निवास स्थान, वेद मन्दिर, योल कैन्ट, ज़िला कांगड़ा में हुआ। इयान की माता, श्रीमती ऋचा कौशिक मित्तल गर्भावस्था में ही अपनी ससुराल से अपने पिताजी के निवास स्थान पर आ गई थी जहाँ हर समय वेद-मन्त्रों की गूँज से वातावरण ब्रह्ममय सा होता रहता है। यहीं पर इयान नें तीसरे-चौथे महीने की आयु से ही वेद-मन्त्रों के प्रभाव से, कुछ अलौकिक दृश्य दिखाने प्रारम्भ कर दिए थे जिनका वर्णन यहाँ स्थान की कमी के कारण नहीं किया जा सकता। हाँ! इयान के अद्‌भुत नज़ारे वीडियो एवं फोटोग्राफस में कैद हैं; जो देखता है आश्चर्य चकित हो जाता है।

इस अल्पायु में भी इयान अपने नाना जी का बिना पलक झपके, वेद मंत्र उच्चारण करते हुए, लगातार दर्शन करता रहता था एवं वेद मन्त्र भी एकाग्रचित्त होकर सुनता था। वेद ईश्वरीय वाणी है। इयान को ईश्वरीय वाणी सुनकर एवं वेद मन्त्रों की आहुतियाँ डलते हुए देखकर सुख महसूस होता है और इयान का ध्यान केवल अपने नाना जी, यज्ञ की अग्नि और आहुतियों पर ही होता है। तीन माह की आयु से ही इयान ने अपनी माता, नाना-नानी जी एवं संगत के साथ बैठकर नित्य प्रातः-साँय काल का यज्ञ/अग्निहोत्र करना कभी नहीं छोड़ा। केवल सात माह की आयु में ईयान ने ''ओ३म् स्वाहा'' कहना प्रारम्भ कर दिया था और स्वयं आहुतियाँ डालता रहा। वीडियो में सबने देखा है कि इयान किस तरह यज्ञ के पवित्र धुएँ (सोम) को कितने प्रेम से सूंघता है एवं आनन्दित होता है। इस छोटी सी आयु में भी वह अपनी माता के चरणों में सिर रखकर प्रणाम करता है तथा छोटे-बड़े, जो भी मिलते हैं, उन्हें नमस्ते करता है।

इयान सचमुच अद्‌भुत है और उसका सर्वोत्कृष्ट अलौकिक प्रेम वेद विद्या से है क्योंकि इयान वेद मन्त्रों को ध्यान से सुनता है। इयान को ''वेद ईश्वरीय वाणी'' पत्रिका के सब सदस्यों का आशीर्वाद।

साध्वी गीतांजलि

(बी.एस.सी, एल.एल.बी)

सह संपादक, वेद ईश्वरीय वाणी

वेद ईश्वरीय वाणी

वर्ष : 14 अंक: 1 अप्रैल 2024 – सितम्बर 2024 अर्द्ध–वार्षिक

शुद्ध प्रभु की उपासना शुद्ध वेद-मन्त्रों से करो

ओ३म् ओ३म्

"एतोन्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना ।
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु ।।"

(सामवेद मन्त्र 350)

हे मित्रों! *(एत उ)* आओ हम *(शुद्धेन साम्ना)* शुद्ध सामगान द्वारा *(शुद्धैः उक्थैः)* शुद्ध स्तुति मन्त्रों से *(वावृध्वांसम्)* सबसे महान् *(शुद्धम्)* शुद्ध *(इन्द्रम्)* परमेश्वर की *(स्तवाम)* स्तुति करें। *(शुद्धैः)* शुद्ध स्तोत्रों से *(आशीर्वान्)* आशीर्वाद युक्त परमेश्वर *(नु)* शीघ्र *(ममत्तु)* हम सब पर प्रसन्न होए।

ईश्वर शुद्ध है, उससे उत्पन्न वेद मन्त्र भी शुद्ध हैं। मनुष्य की बुद्धि से निकले श्लोक आदि शुद्ध नहीं होते। हाँ! ऋषि बुद्धि ऋतम्भरा अर्थात् सत्य में स्थापित होने से शुद्ध है। भाव है कि हम शुद्ध प्रभु की स्तुति केवल शुद्ध वेद-मन्त्रों से करें।

Worship the purest God with purest Ved Mantras

Vedas preach that God is the purest entity. Worship him only with purest Ved Mantras to obtain His pious blessings.

स्वयं एवं समाज कल्याणार्थ नित्य अग्निहोत्र करें

वेद ईश्वरीय वाणी

मुद्रक, स्वामी एवं प्रकाशक	संपादक	सह संपादक	उप-संपादक
राज कुमार गुप्ता	स्वामी राम स्वरूप 'योगाचार्य' (01892236107)	साध्वी गीतांजली (01892236107)	सुप्रिया गन्दोत्रा (9906092521)

प्रकाशन: शिवा एन्कलेव, लेन नं. -3, रूप नगर, जम्मू - 180013 (जम्मू व कश्मीर)
डी.डी. ग्रिप्रोग्राफिक्स : 3-एकता आश्रम न्यू रिहाड़ी, जम्मू -180005 (जम्मू व कश्मीर) से मुद्रित

ओ३म्

विषयानुक्रमणिका

- शुद्ध प्रभु की उपासना शुद्ध वेद-मन्त्रों से करो..... सामवेद मंत्र 350 — 1
- संपादकीय - वेदों में वर्णित विशुद्ध राजनीति — स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' — 3
- Tamso ma Jyotirgamaya — Sadhvi Geetanjali — 8
- आचरणवान् ज्ञानी बनो — ऋचा कौशिक मित्तल — 13
- YES BIG BOSS — Anoo Malhotra — 16
- श्रीमद्भगवद्गीता - एक वैदिक रहस्य — स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' — 21
- Promise — Seema Dogra — 29
- Medical Science in Atharvaved — 31
- उनकी फकीरी में ही गज़ब की अमीरी है — डॉ. वीना राज गुप्ता — 32
- Correspondence between Swami Ji & S. Khushwant Singh Ji — 33
- गुरू-शिष्य संवाद — स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' — 37
- बात जो दिल को छू गई — शीतल गुप्ता — 41
- वेदों को जानें — स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य' — 43
- Faith Will Move Mountains — Sapna Dogra — 47
- जुआ — स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' — 49
- शुचि दक्षः — पी.आर.मेहरा — 54
- विद्वानों के संग से जाना कि सर्वश्रेष्ठ कर्म क्या है — अंजना दिवान (इंडोनेशिया) — 57
- परमेश्वर विद्वानों के निकट और अविद्वानों.... — स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' — 60
- पौर्णमासी और अमावस्या.... तिथियाँ — 62
- Sugarcane — Sugandh 'Sudhi' — 63
- Subscription Form

संपादकीय

वेदों में वर्णित विशुद्ध राजनीति

ऋग्वेद मन्त्र 10/53/6 में परमेश्वर ने सब मनुष्यों को उपदेश दिया है कि प्रत्येक नर–नारी ***''मनुः भव''*** मननशील हों अर्थात् ईश्वर से उत्पन्न वेद विद्या का मनन–चिन्तन करें और वेदों में दी हुई शिक्षा को आचरण में लाकर सत्य का अनुभव करें–सुखी रहें। विश्व के सबसे पुरातन एवं सनातन तथा प्रत्येक आदि सृष्टि की रचना के प्रारम्भ में ईश्वर से उत्पन्न सत्य चार वेदों का ज्ञान परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य से आदि सृष्टि के चार ऋषियों के हृदय में, मनुष्य कल्याणार्थ, प्रकट किया है। चार ऋषियों से यह ज्ञान ब्रह्मा को प्राप्त हुआ और ब्रह्मा से गुरु–शिष्य परंपरा में यह ज्ञान आज तक जिज्ञासुओं को प्राप्त होता आ रहा है।

जिस समय चारों वेद पृथिवी पर आए उस समय नवीन सृष्टि में कोई भी वेद का ज्ञाता नहीं था, सभी नर–नारी अज्ञानी थे। उस समय कोई अन्य पुस्तक आदि भी नहीं थी। जब उस समय मनुष्य ज्ञान से पूर्णतः शून्य था तब उस समय किसी भी ज्ञानवान् नर–नारी आदि के होने अथवा किसी पुस्तक आदि के होने का प्रश्न ही नहीं था। जब ब्रह्मा से चली गुरु–शिष्य परंपरा में वेद ज्ञान को प्राप्त हुए मनुष्य तपस्वी, समाधिस्थ पुरुष, योगी एवं ऋषि–मुनि पद को प्राप्त होने लगे एवं वेदों के ज्ञाता, मनु भगवान् पृथिवी के प्रथम राजा घोषित हुए तब मनु भगवान् ने वेदानुसार प्रजा का पालन–पोषण प्रारम्भ किया और उनके जीवन में सुख–शांति लाए, जो बिना राजा के सुख–शांति दूर–दूर तक दृष्टिगोचर नहीं होती थी। ***मनु भगवान् विद्वान् थे, जानते थे कि यदि प्रजा को वेदों का ज्ञान नहीं होगा तो मनुष्य का उद्धार होना एवं ज्ञानी होना, सुखी होना पूर्णतः असम्भव होगा। अतः उन्होंने अपने शासन में वेद विद्या का प्रसार किया। उन्होंने मनु–स्मृति जैसी महान् वेद–विद्या युक्त पुस्तक को भी मानव कल्याणार्थ लिखा।*** समय की गति कभी रुकती नहीं है। कालान्तर में अर्थात् लगभग द्वापर के अन्तिम चरण में वेद विद्या का सूर्य अस्त होने लगा और हमारी भारतीय भाषा संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति, जिसमें मुख्यतः चार वेद, नौ उपनिषद्, वाल्मीकि रामायण, संस्कृत व्याकरण शास्त्र आदि, ऋषियों द्वारा

लिखित छः शास्त्र इत्यादि आते हैं, उन कई ग्रन्थों में झूठ भर दिया गया। अतः मनु–स्मृति भी इससे अछूती ना रही। इसमें भी हमारी संस्कृति–सत्य विद्या का नाश करने के लिए विरोधी तत्त्वों ने मनचाहा झूठ भर दिया जिसका वर्णन, लेख बड़ा होने के कारण, यहाँ नहीं किया जा सकता। हाँ! मैं यहाँ यह सलाह अवश्य दूंगा कि श्री गोविन्द राम हासानन्द जी, नई सड़क, दिल्ली के यहाँ ***''विशुद्ध मनु–स्मृति''*** विक्रय की जाती है। ***हम सब भारतीयों को केवल वही मनु–स्मृति पढ़नी चाहिए, वह सत्य है।***

ऊपरलिखित लेख का प्रारम्भ हमने ***''मनुः भव''*** अर्थात् वेदों का मनन करो, इन पदों से किया है। यहाँ यह विचारणीय विषय है कि पिछले तीन युगों में, जब तक घर–घर वेद ज्ञान था एवं उस वेद ज्ञान पर मनन–चिंतन तथा वैदिक शिक्षाओं पर आचरण होता रहा तब तक मनुष्य के जीवन का उज्ज्वल निर्माण एवं विषयों पर नियन्त्रण रहा। इस प्रकार नित्य वैदिक साधना करते हुए नर–नारी अपने कर्म–बन्धनों को ईश्वर कृपा द्वारा संसार नदी को पार करने में समर्थ होते रहे और मोक्ष पद प्राप्त किया।

ऋग्वेद मन्त्र 1/8/8 का भाव है कि जैसे फल–फूलों से युक्त आम और अमरूद आदि वृक्ष मनुष्यों को सुख देते हैं उसी प्रकार ईश्वर से उत्पन्न वेद वाणी मनुष्य को बहुत प्रकार की विद्याएँ देती हैं, जिसे जानकर मनुष्य परमानन्द प्राप्त करता है। अतः जिसने भी चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त किया उसे अत्याधिक विद्या का लाभ हुआ और उसने सुखी जीवन में प्रवेश किया, वह ईश्वर की कृपा के आश्रय में रहा। उसे यह भी ज्ञान प्राप्त हुआ कि वेद अनन्त विद्या का भण्डार है। विश्व में कोई ऐसा पदार्थ आदि नहीं है जिसका वर्णन वेदों में ना हो। स्वाभाविक है कि शुद्ध राजनीति का वर्णन भी ईश्वर ने वेदों में ही किया है। अन्य कहीं भी शुद्ध राजनीति का वर्णन नहीं है जो मनुष्य को सुख और शांति, मोक्ष पद, आदि दे सके। वेदों से ही पिछले तीन युगों के राजाओं ने राजनीति का ज्ञान लिया और इस राजनीति का ज्ञान देने वाले, उस समय के ऋषि–मुनि, तपस्वी आदि ही थे। फलस्वरूप प्रजा तीन युगों तक सुखी रही।

कलियुग के प्रारम्भ में जब से यह वेद विद्या पृथिवी से विलुप्त प्रायः होती चली गई तब से पृथिवी पर रहने वाले प्राणियों के दुर्भाग्य का प्रारम्भ हुआ। क्योंकि जैसे सूर्य के अस्त होने पर प्रकाश लुप्त हो जाता है इसी प्रकार वेदों में उपदेश है कि वेद विद्या के विलुप्त होने से सुख–शांति, निरोगता, दीर्घायु आदि अनेक सुखों का भी अन्त होता चला जाता है। सुख–शांति आदि तो केवल वेद–मार्ग पर चलकर ही प्राप्त होती है। तो

प्रसंग चल रहा था— राजनीति का।

राजनीति का ज्ञान भी वेदों में भरपूर है। अत: जैसा ईश्वर ने ***ऋग्वेद मन्त्र 1/22/15*** में कहा ***''स्योना पृथिवी भवानृक्षरा निवेशनी''*** अर्थात् यह दूर–दूर तक फैली हुई पृथिवी प्राणी को अत्यंत सुख देने वाली और जिसमें दु:ख देने वाले कांटे तक भी ना हों तथा जिसमें सुखपूर्वक प्राणी प्रवेश कर सकें, ऐसी होती है। आगे कहा— ***''यच्छा न: शर्म सप्रथः''*** अर्थात् इस प्रकार पृथिवी हम सबको सुखकारक पदार्थों के साथ उत्तम सुख प्रदान करती है। इस वेद मन्त्र से प्राणी के ऊपर ईश्वर की अत्यंत कृपा एवं दया का भाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

अत: राजा का कर्तव्य है कि वह उक्त वेद मन्त्र के अनुसार राजनीति को बर्ते जिसमें प्राणी को दु:ख देने वाले कांटे तक भी ना हों। क्योंकि उक्त ***ऋग्वेद मन्त्र 1/8/8*** में परमेश्वर ने यह भी उपदेश किया है कि वेद वाणी राज्य की प्राप्ति के लिए, राज्य कर्मों में चित्त देने वालों को सुख देने वाली होती है। अत: राजा एवं उसके जितने भी मन्त्रीगण आदि हैं, वे ईश्वर द्वारा प्रकाश की हुई अनन्त ज्ञान–युक्त, अमर वेद वाणी, जो अनन्त विद्याओं का भण्डार है, उस वेदवाणी का प्रचार–प्रसार देश में करें जिससे सब मनुष्यों को परम आनन्द प्राप्त हो। जो धर्मात्मा राजनेता होते हैं, वे ही वेदों का प्रकाश और पृथिवी पर राज्य करने में समर्थ होते हैं। ***यजुर्वेद मन्त्र 9/27*** में ईश्वर की आज्ञा है कि राजा स्वयं श्रेष्ठ सूर्यादि गुणों से सम्पन्न, वेद विद्या का ज्ञाता तथा धार्मिक विद्वान् होकर विद्या एवं धर्म की वृद्धि करे तथा अविद्या एवं अधर्म की निवृत्ति करे।

यजुर्वेद मन्त्र 9/24 एवं 25 में परमात्मा द्वारा निम्न उपदेश दिया गया है:–

1. जो राज्य में सनातन राजनीति (वेदों में कही राजनीति) को जानकर राज्य का संरक्षण कर सके, उसी को राजा बनाओ।
2. जो कर देने वाले से कर दिलावे, वह मन्त्री बनने के योग्य है।
3. जो शत्रुओं को पकड़ सके, उसे सेनापति बनाओ।
4. राजा वेदादि शास्त्रों का ज्ञाता, सच्ची नीति का ज्ञाता एवं वेदों द्वारा सकल विद्याओं का जानने वाला हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1/77/3 का भाव है कि मनुष्य को चाहिए कि जो सबसे अधिक शुभ गुण, कर्म एवं स्वभाव वाला है और सबका उपकार करने वाला सज्जन मनुष्य है, उसे ही राजा मानें।

ऋग्वेद मन्त्र 1/79/6 का भाव है कि सज्जन राजा धार्मिक लोगों की रक्षा करे और दुष्टों को दण्ड देकर राज्य की रक्षा करे। फलस्वरूप ही जनता निडर रहती है।

यजुर्वेद में राजा को ***''सहस्रशः रुद्राः''*** अर्थात् असंख्य शत्रुओं को रुलाने वाला कहा है।

राजा की राजनीति वेद—विरुद्ध कदापि ना हो कि राजा राज्य पाने के लिए अपराधियों / हिंसक मनुष्यों का सहारा ले। राजा/राजनेता की प्रयुक्त नीति हो जिसमें प्रजा भयरहित होकर विद्या प्राप्ति एवं धार्मिक शिक्षा के लिए कृषि एवं अन्य पदार्थों तथा विद्या की उन्नति के लिए यज्ञानुष्ठान आदि करें। पिछले युगों की जनता का राजा वेद का ज्ञाता, धार्मिक पुरुष होता था। जैसे— राजा दशरथ के विषय में वाल्मीकि ऋषि ने बालकाण्ड, चौथे सर्ग में कहा है—

''तस्यां पुर्यामयोध्यायां वेदवित्सर्वसंग्रहः।
दशरथो महातेजाः बसञ्जगदपालयत्।।''

अर्थात् उस अयोध्या नगरी में वेदार्थ को जानने वाले, सब वस्तुओं का संग्रह करने वाले, (अर्थात् उनके राज्य में अन्न—धन आदि किसी भी वस्तु की कमी नहीं थी), महा तेजस्वी चक्रवर्ती राजा दशरथ प्रजा का पालन करते थे।

भाव यह है कि महाभारत, वाल्मीकि रामायण एवं उपनिषद् आदि ग्रन्थों के अध्ययन द्वारा ज्ञात होता है कि सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर पिछले तीन युगों के राजा, मन्त्री एवं प्रजा, सब वेदों के ज्ञाता होते थे, फलस्वरूप ही वे सुखी थे। वाल्मीकि रामायण में आगे यह भी प्रमाण दिया है कि अयोध्या नगरी में सब मनुष्य प्रसन्न, धर्मात्मा, बहुश्रुत, अपने—अपने धन से संतुष्ट, निर्लोभी एवं सत्यवादी थे। कोई भी गरीब नहीं था। सब धन—धान्य से युक्त थे। अयोध्या में कोई भी मनुष्य कामी, कंजूस, निर्दयी, मूर्ख एवं नास्तिक नहीं था। विपरीत में यदि हम सम्पूर्ण विश्व की राजनीति पर दृष्टि डालें (जिसमें वेद—विद्या का नामो—निशान नहीं है) तब ज्ञात होता है कि जो स्थिति राजा दशरथ के राज्य की थी, जिसमें जनता सुखी थी, उसके विपरीत आज विश्व की जनता दु:खी नज़र आ रही है और अपराधों का भी बोल बाला है।

यह दु:खों, परेशानियों एवं अशांति आदि का वातावरण, वेद ज्ञान के अभाव में समाप्त होने वाला नहीं दिखाई देता। कारण यह है कि वेद कहता है कि राजा वेदों का ज्ञाता हो एवं अपनी राजनीति द्वारा प्रजा का पालन—पोषण करने तथा राज्य की रक्षा करने में समर्थ हो। कदापि स्वार्थवश धन एवं सत्ता हथियाने के लिए अपराधी व्यक्तियों को शरण ना दे। वेदों के उपदेश के अनुसार वेद—विद्या के प्रसार एवं धर्म (कर्तव्य पालना) की रक्षा के लिए ही राजा एवं उसकी राजनीति का विधान है। फलस्वरूप ही प्रजा धन

सम्पदा, सुख–शांति द्वारा सुखी जीवन व्यतीत करती है। यदि वेद–विद्या एवं वेद–विद्या के द्वारा धर्म का ज्ञान नहीं होगा तो जिस वैदिक राजनीति के द्वारा धर्म की रक्षा होती रही है, प्रजा का अच्छा पालन–पोषण होता रहा है, दुष्टों का नाश होता रहा है, श्रेष्ठ–जनों का पालन–पोषण होता रहा है, उसका विशुद्ध स्वरूप वेद विद्या में वर्णित राजनीति के अभाव में जाना नहीं जा सकता। राजनीति स्वयं धर्म या अधर्म नहीं है। राजनीति तो पिछले युगों की भांति राजा द्वारा धर्म रक्षा, प्रजा की रक्षा, सत्य की रक्षा आदि का ज्ञान देने का एवं अधर्म का नाश करने का स्रोत्र है। वर्तमान में प्रश्न राजनीति को धर्म या धर्म को राजनीति से अलग करने का कदापि नहीं है अपितु प्रश्न यह है कि राजा एवं राजनेता यदि स्वार्थी, लोभी तथा आलसी आदि होकर, पुरुषार्थ हीन होकर, धर्म एवं अधर्म को समझने के लिए, राजाओं द्वारा वेद विद्या का अध्ययन एवं उस पर आचरण करना कहीं त्याग तो नहीं रहे?इस प्रकार आध्यात्मिकवाद त्याग कर नेता गण धर्महीन तो नहीं हो गए?केवल सत्ता को ही स्वार्थ के लिए हथियाने की ही अभद्र राजनीति में पारंगत तो नहीं हो गए?यदि ऐसा है तो प्रजा की किस्मत समझो फूट गई और यदि ऐसा नहीं है तो समझो प्रजा भाग्यशाली है।

अंत में मैं एक छोटी सी बात, समाज के सुख के लिए, लिखना चाहता हूँ कि एक अति वृद्ध माली एक आम का पौधा लगा रहा था। एक राहगीर ने उससे पूछा कि ''बाबा! तुम्हारी तो आयु बहुत अधिक हो चुकी है। यह आम का पौधा जब तक फल देने के लिए बड़ा होगा तब तक तो आप जीवित रहोगे भी नहीं। तब इस पौधे को लगाने का क्या लाभ है?वृद्ध ने उत्तर दिया कि मेरे बाद मेरे बच्चे और जो भी आएगा वह इस आम के फल को ग्रहण करके सुखी होगा। मैं उनके लिए यह आम का पौधा लगा रहा हूँ। भाव यह है कि विश्व के सभी राजनेता यदि आज से ही, ईश्वर से उत्पन्न, चार वेदों में वर्णन की हुई शिक्षा को, राजनीति को, आज से ही अपने–अपने देश में लागू कर दें तो आने वाली सन्तानें इस राजनीति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। यही आज के राजनेताओं का, विश्व का सबसे उत्तम उपकार–युक्त शुभ कर्म होगा।

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

मुख्य सम्पादक

वेद मन्दिर, योल (हि.प्र.)

Sadhvi Geetanjali
Ved Mandir, Yol, H.P.

Vedas knowledge and learned acharya of Vedas and Ashtang Yog are the vitamins of soul. Vedas are recognized as authoritative divine knowledge and all learned consider them as final authority. The logical antithesis is to reject any philosophy that does not conform to Vedas. [Please refer ***Patanjali Rishi's Yog Shastra Sutra 1/7]***. This is the reason that Vedas are not just commandments for Hindus, but they enshrine universal message for entire humanity. Knowledge of Vedas is divine, infinite, immortal and boundless like Almighty God, having originated from Him. Vedas touch each and every aspect of our lives, governing and guiding us towards our ultimate destiny, the immortality – final liberation.

It is here that I would like to mention the precious ***Brihadaarannya-kopnishad shlok1/3/28-***

Asato ma sadgamaya

Lead me from Untruth/ Falsehood to Truth,

Tamaso ma jyotirgamaya

Lead me from Darkness to Light

Mrityor ma amritam gamaya

Lead me from Death to Immortality

Let us deeply reflect over this particular part of the above verse in which Rishi states-

"Tamaso ma jyotirgamaya"

Oh! Learned acharya of Vedas and Ashtang Yog philosophy – lead me from darkness to light i.e., lead me towards enlightened, awakened state of soul through your preach of Vedas and break my veils of ignorance and illusion.

Learned Acharya is personification of purity and perfection. As soon as the seeker comes within the aura of enlightened master, he too starts getting illuminated inside. It is, as if, lit lamp is lighting up many unlit lamps (please refer Rigveda mantra 1/12/6). The fire of knowledge ignited by acharya burns the illusion and ignorance of aspirant.

When our life boat is caught in storm, we should not create another storm by adding to turmoil, lest we capsize. The way out of storm is to remain calm and still. We can ride over storm by anchoring our boat to learned acharya.

Learned acharya when takes the aspirant into his shelter, he then through knowledge of Vedas and Ashtang Yog philosophy purges the soul and body of aspirant of the accumulated filth of vices like anger, pride, lust, greed. God Himself preaches in ***Atharvaveda 1/1/4*** to pay respect and serve sincerely our learned acharya to attain knowledge from him.

I feel blessed to enclose myself under such protective shelter of His Holiness, Swami Ram Swarup Ji Yogacharya, who has transformed the journey of his loving disciples from ordinary to extraordinary passage of immortality. He strongly holds each one of our hands leading us from darkness of illusion/ignorance to light of Vedas knowledge.

Such is the depth of Maharajji's preach that the mental outlook and attitude of maximum of his disciples has shifted from grabbing to giving, from profiteering to offering. Infact, Rishis, the realized souls, since the times immemorial, have been preaching Vedic principles to their disciples in much understandable and simpler ways to lead an ideal and pious life. For instance, Vyas Muniji, in his finest treatise, the Mahabharat, illuminates Vedic knowledge beautifully and symbolically through stories and events.

A symbolic story in Shanti parv of Mahabharat gives deep insight into the Vedic principles that should govern our each and every conduct, ideally –

Once there stood majestically a huge old banyan tree in a dense forest. The tree laiden with fruits and leaves adorning its stems, was inhabited by a wise mouse and a large, hairy cat. The carnivore devoured small rodents and sparrows that took refuge on the banyan tree. The forest was also inhabited by a dreadful hunter who skillfully casted the net in the forest for trapping small animals into it, so as to earn his living. Once the cat got entrapped into the net laiden by the hunter. Cat could foresee his death now.

The mouse on seeing this, fearlessly roamed near about the net, feeding here and there. Then the mouse jumped over the net and started devouring the piece of flesh spread on the net as bait for the animals. The mouse was absolutely sure that he had no threat from the big cat imprisoned in the net. Suddenly, the mouse realized that he was about to be hunted by two of his deadliest enemies – the mongoose and the owl, who were eyeing him greedily from two directions. The

mouse sensed great danger to his life. He calculated that if he ran on ground to reach his mole, in between the mongoose would hunt him down. If he stayed over the net, the owl would eat him away. If somehow, he cut a portion of net to enter within, he would fall prey to the cat. The situation became very critical for mouse with zero chances of survival.

The mouse had great wisdom which enabled him to assess the problem and also seek its

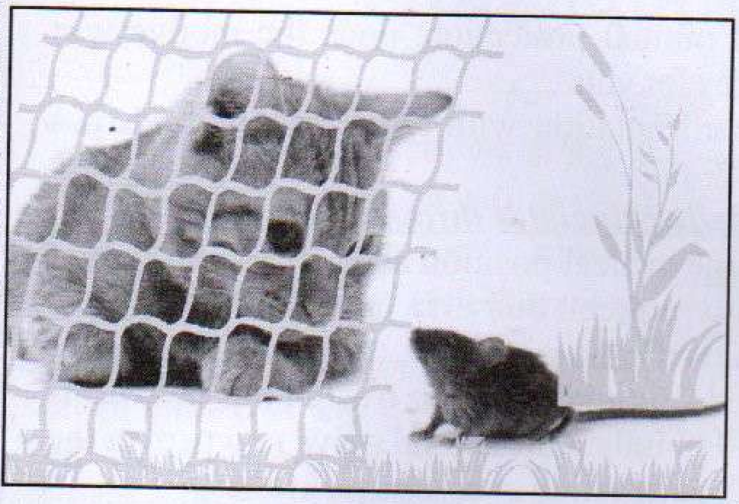

solution patiently. He decided to save his life through mutual cooperation.

Mouse knew that only way to save his own life was to seek cooperation from the cat named Lomesh in lieu of rescuing cat from the clutches of hunter.

The mouse then offered a deal to cat which would mutually benefit the two. Mouse said to him that "if you wish to live long then you shall have to abandon the thought of killing me. You should realize that you cannot escape from this strong net unless I cut all its bindings to liberate you out of it. If you give me the assurance of protection and safety, I promise to liberate you soon from the snare."

Cat immediately consented to the proposal of mutual protection. Mouse then divulged the plan – Mouse said that he would enter the net from behind to save himself from both mongoose and owl and hence took shelter under the protection of cat.

Mouse assured the cat that he would surely be liberated at appropriate time. When the owl and mongoose saw that mouse had taken refuge under the shelter of cat, they got disappointed and dispersed away.

The wise mouse knew the sensitivity of time and place hence he started biting the net slowly. Cat became impatient and asked the mouse to finish the task soon. Mouse assured the cat that all the bindings had been cut except one. This last binding would be cut on the advent of hunter. Mouse kept his word and as soon as the hunter was seen coming, mouse bit upon the last binding and released cat. Cat jumped over the highest branch of tree and mouse ran into the nearest mole. After the disappointed hunter left the place, cat extended the hand of friendship towards mouse, hiding in mole. The mouse wisely opined –

Dear cat, all worldly relations are based on selfishness; once selfish motive is accomplished, friendship and relationships evaporate in thin air.

Hence, friendship and animosity are transient terms.

Our relationship was also based on mutual protection, once the motive was accomplished, I am no more than a prey for you.
Remember, learned never initiate confrontation with an enemy, wicked or a hungry carnivore.

<u>Rishi Vyas reiterated three Vedic principles through this story –</u>

(i). When our enemy is placed in same critical position as us, then one should temporarily ally with enemy to protect oneself. Once, the danger is overcome, then the alliance should be broken at once.

(ii). He who is unfaithful/ incredulous should never be trusted but he who is faithful should also not be trusted blindly. One should strive to win over the trust of others but should refrain from trusting everyone recklessly.

(iii). Those who remain alert by not trusting others, cannot be destroyed by their enemies despite being weak. Those who repose unconditional trust on others, are defeated by their enemies however strong they may be.

Through this inspirational story, Rishi Vyas educates the aspirants with this eternal Vedic philosophy that he who is learned, wise, well-versed with all statesmanship would make all efforts with prudence to win over most critical problem or difficulty.

He would never accept defeat but struggle for victory. Learned Guru showers the knowledge that even the most powerful and strong person should humbly seek truce with his nearest enemy for saving his life.

Remember the nector of Acharya's Vedic preach washes away the poison of vices of a sincere, deserving disciple. When we place needles in front of magnet, ones made of pure iron are attracted faster as compared to impure ones. This is how relation of acharya and disciple works. ***Those who are clear-hearted and focus on gaining Vedic knowledge through sincere service of acharya, reach their ultimate goal faster.***

VTV

आचरणवान् ज्ञानी बनो

ऋचा कौशिक मित्तल
इंजीनियर (बी.टेक.)

काशी में एक गुरु के पास एक ही ग्राम के चार बालक विद्या पढ़ने गए। हर एक ने पृथक्–पृथक् विषय लिया था– व्याकरण, वैद्यक, न्याय, ज्योतिष। जब अपने विचार से पढ़ चुके तो गुरु से प्रार्थना की– ''हमें अब आज्ञा दीजिए हम अब घर जाते हैं।''

गुरु ने कहा– ''अभी एक वर्ष की तुम लोगों को देरी है।''

उन सबने परामर्श किया कि ''पढ़ तो चुके हैं। बेकार में कौन रहे?भाग चलें।'' सब तैयार हो गए, रात को चोरी–चोरी सामान बांधा। एक घोड़ा खरीदा सामान उठाने के लिए। पिछली रात को सामान लाद कर चल पड़े। दिन चढ़े जब किसी ग्राम के पास पहुँचे तो बाहर कुछ अन्तर पर डेरा लगा दिया। अब कर्तव्य–कार्य बाँटने लगे।

''***भाई ज्योतिषी!*** तुम तो घोड़े को चरा लाओ, जंगल है– अपना लग्न लगाकर, आप ही उत्तरदायी हो।''

''***भाई नैयायिक!*** तुम बाज़ार से घी ले आओ।

भाई वैद्यराज! तुम सब्ज़ी ले आओ और शेष ***व्याकरणी महाशय*** ने चूल्हे में आग जला, ऊपर हांडी धर पानी डाल चावल डाल दिए।

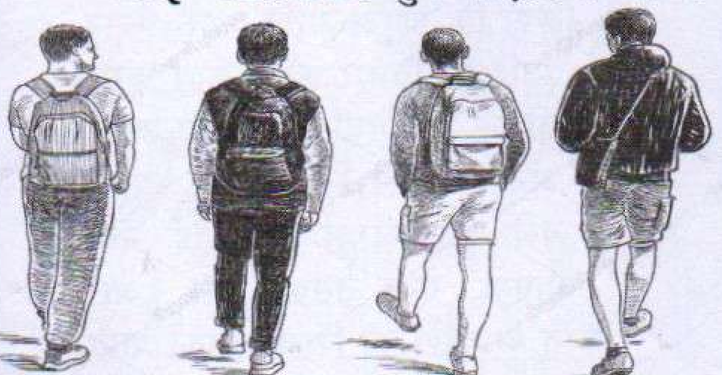

ज्योतिषी ने घोड़ा घास में छोड़ दिया। ***लग्न लगाया कि ग्यारह बजे तक किसी का यहाँ से गुज़रना नहीं होगा।***

दस बजे तक बैठा रहा, विचार किया जंगल है, जहाँ की रास्ता ही नहीं। थोड़ा सो जाऊँ तो क्या भय है?सो गया–नींद आ गई। बारह बजे एक आदमी वहाँ से गुज़रा देखा तो जंगल में घोड़ा खड़ा है। आदमी गाढ़ निद्रा में है। झट घोड़ा खींचा और चलता बना। ज्योतिषी की नींद खुली तो रोने लगा कि घोड़ा नहीं है।

नैयायिक ने घी लिया कटोरे में। हाथ पर धर राह में सोचने लगा– ***''घी कटोरे के सहारे है या कटोरा घी के?''*** सोचते–सोचते कटोरा उलटा कर परखने लगा, घी सारा गिर गया।

वैद्यराज ने सारा बाज़ार ढूंढ मारा, ***गुण–अवगुण विचारता रहा।*** गोभी बादी है, साग खुश्क है, बैंगन गर्म। अन्ततः फिर–फिराकर नीम के पत्ते ले आया कि यही वस्तु इस ऋतु के अनुकूल है।

व्याकरणी जी की हांडी उबलने

लगी। बड़–बड़ करने लगी। कहा– ''यह शब्द तो कहीं नहीं पढ़ा, यह विकार पैदा कर रही है। पढ़ा था ***''जब शब्द में विकार पैदा होने लगे तो मिट्टी से बंद कर दो।''*** मिट्टी की अंजलि डाल दी। चावलों में बड़–बड़ तो बंद हो गई।

अब इकट्ठे हो वाद–विवाद करने लग पड़े। सांय तक लड़ते रहे। अन्तत: एक साधु उधर से गुज़रा। सबने हाल सुनाया। साधु ने समझाया– ***''गुरु अवज्ञा एक महान् पाप है। तुम अनुभवहीन हो, विद्या (ज्ञान) बिना आचरण हानिकारक होती है।''***

संपादक के विचार

ऋचा बेटी ने बहुत सुन्दर कथा से यह समझाने का प्रयास किया है कि ***प्रथम तो गुरु की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।*** चारों विद्यार्थियों को गुरुजी ने एक वर्ष आश्रम में ठहरने की आज्ञा दी थी जिसमें उन्होंने पढ़ी–लिखी, रटी विद्या को आचरण में लाने का ज्ञान देना था। परंतु चारों विद्यार्थियों ने आज्ञा का पालन नहीं किया। विपरीत में आज्ञा लिए बिना आश्रम से चोरी–चोरी भाग गए। उदाहरणार्थ–ज्योतिषी विद्या पढ़ने वाले ने गणना आदि करके लग्न लगाया कि जंगल में ग्यारह बजे तक कोई नहीं आएगा। उसने इसलिए घोड़े को जंगल में अकेला चरने के लिए छोड़ दिया।

दस बजे तक वह घोड़े की रखवाली करता रहा और नींद आने पर दस बजे सो गया क्योंकि उसने विचार किया कि यह जंगल है, यहाँ कोई आने–जाने का रास्ता भी नहीं है। थोड़ा सो लूँ तो क्या भय है?वह सो गया और बारह बजे वहाँ एक यात्री आया। उसने घोड़े को चरता हुआ देखा और ज्योतिषी को सोता हुआ देखा। तुरंत वह घोड़ा लेकर भाग गया। जब ज्योतिषी की नींद खुली तो घोड़े को ना पाकर, वह रोने लगा। यहाँ गुरु ने यही ज्ञान देना था कि जो कर्म तुम्हें सौंपा जाए उसे पूरा करो। निद्रा आना तो एक तमोगुण है। जिसमें तमोगुण होता है, वह प्राणी तो आलसी और दरिद्री होता है। गुरु ने यहाँ यह भी समझाना था कि ***प्रकृति के तीनों गुणों–रज, तम एवं सत्व पर विजय प्राप्त करो तभी सफलता प्राप्त करोगे और पढ़ी हुई विद्या आचरण में आएगी।*** अब ज्योतिषी जी ने ज्योतिष विद्या को तो पढ़–सुन, रट लिया कि गणना आदि करके, लग्न आदि पर विचार करके कार्य करो, तो जो ज्योतिषी ने पढ़ा था उसके अनुसार लग्न निकाल के, ग्यारह बजे तक जंगल में कोई नहीं आएगा, ऐसा उसको ज्ञान हुआ। परंतु आचरण की शिक्षा उसको प्राप्त

नहीं थी कि ग्यारह बजे तक जागना है और घोड़ा लेकर वापिस जाना है। अत: विद्या को आचरण में ना लाने के कारण उसने घोड़ा गवाँ दिया।

दूसरा किस्सा नैयायिक शास्त्र पढ़ने वाले विद्यार्थी का है। उसने भी गुरु की आज्ञा का पालन नहीं किया और विद्या को आचरण में लाना चाहिए, तभी फलीभूत होती है, इसका भी ज्ञान उसे नहीं था। भाव यह है कि उसे घी को परखने की आवश्यकता ही नहीं थी। इस तरह न्यायालय में हर किसी केस पर विचार करने वाली वृत्ति थी; ***विद्या आचरण में नहीं थी*** कि कटोरे में घी लेकर घर जाए। अत: उसने भी घी ज़मीन पर गिराकर बेकार कर दिया।

वैद्यराज भी सब्ज़ी घर पर ले जाने की जगह सोच–विचार ही करते रहे कि गोभी बादी है, इत्यादि और वैद्यराज ने जो गुरु से पढ़ी–लिखी वनस्पति ज्ञान की शिक्षा ली थी के नीम के पत्ते इस ऋतु के अनुकूल हैं, तो वह सब्ज़ी के स्थान पर नीम के पत्ते ले गया। अब नीम के पत्तों की सब्ज़ी तो बनती नहीं है। ***वैद्यराज जी ने गुरु से पूर्ण शिक्षा प्राप्त नहीं की थी अत: उसने भी अर्थ का अनर्थ कर दिया।***

व्याकरण शास्त्र को जो केवल पढ़–सुन, रटकर आया था उसने भी, आचरण में विद्या ना लाने के कारण और गुरु की आज्ञा पालन ना करने के कारण उबलते चावलों का शब्द सुनते हुए, चावलों में मिट्टी डालकर चावलों को खाने के लायक नहीं छोड़ा। ***सांख्य शास्त्र सूत्र 1/23*** में ऋषि ने यह उपदेश दिया है– ***"वाङ्मात्रं न तु तत्त्वं चित्तस्थिते:"*** अर्थात् पढ़ा–सुना, रटा ज्ञान केवल बोलने मात्र के लिए है। ऐसा ज्ञान अनुभवहीन होता है क्योंकि वह केवल चित्त में स्थित्त रहता है। उस ज्ञान का अनुभव नहीं होता इसलिए ऐसा ज्ञान व्यर्थ है, लाभकारी नहीं है।

केनोपनिषद् के ऋषि ने श्लोक 4/8 में समझाया है कि रहस्यमयी ब्रह्म विद्या का आधार तप, दम और कर्म है। तप का अर्थ है तपस्या जैसे वेद सुनना, दान देना, यज्ञ करना, योगाभ्यास करना आदि। दम का अर्थ है, मन एवं इन्द्रियों को वेद मार्ग पर चलकर वश में करना और कर्म का अर्थ है, वेदों में कहे केवल शुभ कर्मों को करना।

उपनिषद् का भाव है कि केवल पढ़–सुन, रटकर जो अपने आपको ब्रह्म ज्ञानी कहते हैं, उनमें अहंकार है और वह तो ब्रह्म विद्या का अनादर करते हैं।

वेद ज्ञान प्राप्त करना ही विद्या का आदर है और वेद ब्रह्म–विद्या के सम्पूर्ण अंग हैं जिससे सत्य स्वरूप परमेश्वर का साधना द्वारा दर्शन होता है।

Anoo Malhotra
Director General
Rural Sanitation (J&K)

Yes BIG BOSS

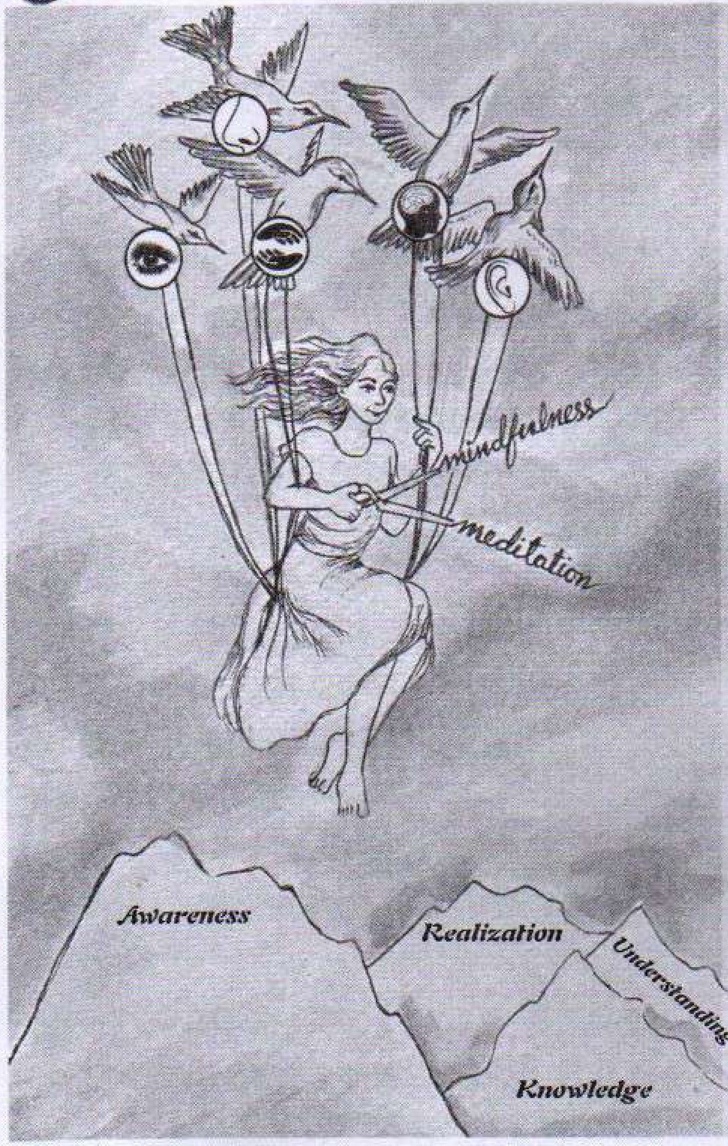

Hello everyone, I am back with another small article and I know the topic reminds us all of a reality show which had almost 17 seasons. I have watched 4-5 episodes of first two seasons and that has set me pondering over the human behaviour and the very common, known and obvious approach of humans which is almost uniform is that all of us want the best for ourselves, all of us want to be winners, all of us want that we must be noticed, all of us want importance, all of us have grievances with God. In short the human nature as it occurs naturally is ***"Self-Centered"*** and I don't say that I am an exception to this and neither most of us are but this marvellous world has some marvellous people who definitely are an exception to this kind of behaviour.

This common behaviour of ours, which is most of all the times self-oriented and self-centred, I don't say it's bad but ***I wish we actually in real sense work on this concept of self and understand that our actual existence is beyond this body made of cells and realize who we are and then be "Self-Centered".*** This is high time we do not let ourselves succumb to our surroundings and our senses which are making us subservient to our immense and powerful existence and have taken away our self respect thus making us conveniently bow before our senses which have been hijacked by our mann and buddhi which are still unwise as they have not learnt to adhere to Vedic principles- which are the storehouse of knowledge and teach us the purpose of life.

The ***Mann and Buddhi*** are far away from the eternal truth enshrined in Vedas and imbibed by a yogacharya who has realized self. Literally every second we are saying Yes, Big Boss to everything coming in the way of our senses, mann and buddhi which get attracted to every petty lure, every temporary happiness, every short spelled desire and make this jivatma fall prey to them and get it entangled in the unending story of life and death which is full of sorrows and shortlived happiness- yes so called happiness as believed by our senses which haven't realized truth.

We have sadly forgotten to differentiate between self i.e., jivatma that is neither created nor destroyed and our body comprising of senses, mann, buddhi which is different from us. Here lies the actual problem and believe me this is a serious identity crisis which we human beings are suffering from.

HAD IT BEEN THAT MY SENSE ORGANS, the mind, the body which has become servant to what they see and observe have succumbed to this maya but

sadly these organs and senses have started bossing over 'me' which is actual me i.e., my actual self i.e., my JIVATMA, which is unique in all individuals unlike my organs/senses which keep changing their form. This jivatma neither changes

its form nor it stops existing.

While leading this beautiful life right from taking birth we see our senses, Mann and Buddhi overshadow the minutest but most powerful jivatma very proudly with every passing moment we have moved on without even realizing that our Jivatma has started saying ***"Yes, Big Boss"*** to these eyes, while our eyes wish to watch good and bad things, Yes, Big Boss to ears, while they want to listen even rubbish, Yes, Big Boss to our nose, tongue, skin once they want to smell enjoy flavours and touches and while succumbing to our senses we stop realizing that the real boss in us i.e., the Jivatma has become servant to senses and the senses which were supposed to work for the welfare and elation of Jivatma as its helpers have started acting like ***"uncle SAM"*** thereby making the Jivatma our actual self a slave to momentary pleasures which have no standing neither today nor tomorrow. These so called bosses of ours have drifted us away from our actual goal and objective of self realization.

Try not listening to these senses, try saying no to them. I don't say that it's easy to say "NO, BIG BOSS" to bosses who have ruled us for centuries and centuries and have become the reason of our birth and rebirth and don't even let us go near to our ultimate goal of "MOKSH", but yes there are ways to deflect from them. Please be aware of them, let them not overshadow us. Dodge them, negotiate with them because this is what they deserve but at the same time, take physical care of them in a way so that they support our true self in achieving what this actually boss i.e., Jivatma is supposed to accomplish.

Lets not loose heart because, its not that difficult also to command the senses, its just that we have to teach them to work as per the Vedic constitution and manage them with techniques which only a Vedic Acharya can teach you. Let us for sure be clear that Vedas, which are the voice of God, circumscribe within their ambit every knowledge be it science, medicine, actions, duties name one and you find it there and only a Vedic Acharya knows it all as his Tapasya for centuries together has made him worth of it.

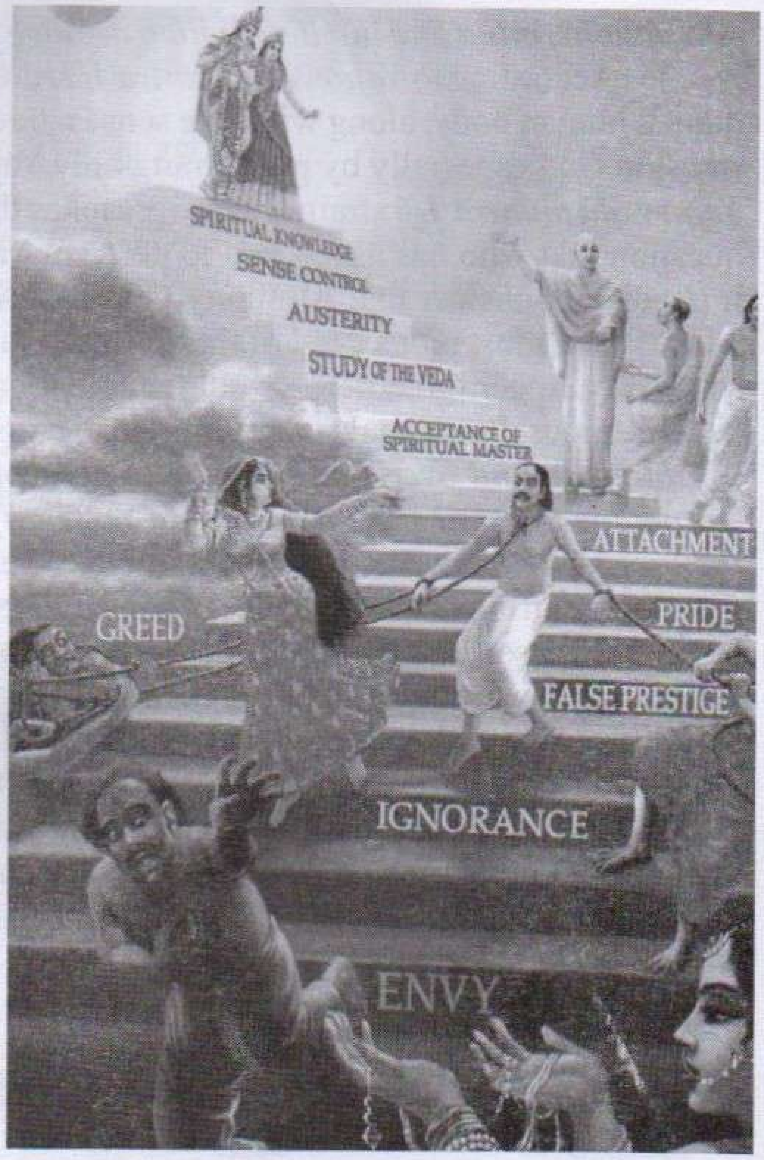

Now if really want our real selves to take over the administration and management part and leash our desires and senses which are Jarh, we need to succumb before a Guru or an Acharya who is the enlightened one. Follow him with all your heart and say "Yes, Big Boss" to his teachings with a pure intent to follow those but of course not blindly. A true guru never minds questions. He is there to remove your doubts. Go have clarity on what he teaches and once you understand, there should be no looking back. He is your boss and say Yes, Big Boss to him not only by lip movement but also imbibing his teachings in lives and following his footsteps and he is only personality who deserves to be told "Yes, Big Boss".

Further insight by the Editor

The 1st paragraph of article written by dear daughter, Anu, relates to selfishness not for him/ her but for human-body which will one day be set on pyre at his final resting place. Keeping in view the said truth, dear daughter wisely turned the matter very well towards everlasting soul who resides within the body. See, the body made from non-alive matter Prakriti, is separate and soul who is alive and self existing [because neither the soul is made from any matter nor anything can be made from the soul] matter is separate.

Body is made of non-alive matter Prakriti, so is about five senses,

perceptions, mind and intellect, which are also made of non-alive matter prakriti.

According to ***Yajurveda mantra 1/1,*** the soul has been provided with above quoted human body, along with five senses, five perceptions, mind and intellect to worship God especially by performing holy Yajyen with ved mantras and see that ***Yajurveda mantra 1/6*** straight away preaches that whenever anybody asks you the question that who has asked you to perform Yajyen with ved mantras? Then you immediately answer that Almighty God has preached us to perform holi Yajyen which is the most pious deed of the world. In this way, the Prakriti made vices like sensuality, anger, greed etc., would automatically leave the soul and soul would become pious. Pious soul is only entitled to worship God. ***In this way, you see, soul would command over five senses and perceptions and not become their slave. Automatically soul shall not become Yes-man of senses. Instead, soul shall give them order to obey.*** Yes, mind and intellect being non-alive matters are far away from eternal truth i.e., knowledge of Vedas. The soul duly indulged in illusion does not know himself and therefore, being slave of mind and intellect, obeys their order. While creating the universe, Almighty God donates the knowledge of four Vedas, to be followed by each human-being, to destroy illusion and realize God, also to live long, happy life. However, due to one or the other reason, soul with human body fails to follow the vedic path and that is why falls prey to vices and gets entangled in unending story of life and death. At this juncture, soul being helpless has no other way but to utter Yes, Big Boss. ***To say Yes, Big Boss, is clear indication of soul to surrender himself before mind and intellect, due to lack of Vedas' knowledge. Otherwise, how a learned and brave soul would surrender?***

If our life is going on at the same track then the next births will be full of sorrows. The rules and regulations framed by God in Vedas which are eternal and everlasting, even cannot be changed. The birth of a human-being will altogether go in vain, if we donot follow Vedas.

That is why, God has given the knowledge of four Vedas to be followed by us to achieve the main goal of human-life i.e., final liberation. Dear daughter, Anu has beautifully written in her article that to achieve the said goal, Vedas preach that a person by becoming an aspirant must go to a learned acharya of Vedas and Ashtang Yog Philosophy to follow.

In this connection, Vedas brief a fundamental that--- knowledge can never be attained until it is given by anyone ***(refer Rigveda mantra 1/22/3).***

VIV

श्रीमद्भगवद्गीता

(एक वैदिक रहस्य)

गतांक से आगे....

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

'तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितृनथ पितामहान्।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄ न्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा।।' (गीता 1/26)

(अथ) उसके बाद (पार्थः) पृथा पुत्र अर्जुन ने (तत्र) वहाँ, युद्ध में (पितृ न्) पिता के समान पुरुषों को (पितामहान्) पितामह के समान, (आचार्यान्) आचार्यों को (मातुलान्) मामों को (भ्रातृ न्) भाइयों को (पुत्रान्) पुत्रों को (पौत्रान्) पौत्रों को (तथा) और (सखीन्) सखाओं को (अपश्यत्) देखा।

अर्थः– उसके बाद पृथा पुत्र अर्जुन ने वहाँ युद्ध में पिता के समान पुरुषों को, पितामह के समान आचार्यों को, मामों को, भाइयों को, पुत्रों को, पौत्रों को और सखाओं को देखा।

'श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि।
तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्।।' (गीता 1/27)

(श्वशुरान्) द्रुपद आदि ससुरों को (च) और (सुहृदः) सुहृदकों—शुभचिन्तकों, मित्रों को (एव) भी (सेनयोः) दोनों सेनाओं के (उभयोः) बीच में (अपि) भी (तान्) उनको (समीक्ष्य) देखकर (सः कौन्तेयः) वह कुन्तीपुत्र अर्जुन (सर्वान् बन्धून्) सब बंधुओं को (अवस्थितान्) युद्ध में स्थिर देखकर।

अर्थः– द्रुपद आदि ससुरों को और सुहृदकों—शुभचिन्तकों, मित्रों को भी दोनों सेनाओं के बीच में देखकर वह कुन्तीपुत्र अर्जुन उन सब बंधुओं को युद्ध में स्थिर देखकर।

'कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।
दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम्।।' (गीता 1/28)

(कृपया, परया) अत्यन्त कृपा के (आविष्टः) वश हुआ (विषीदन्) शोकयुक्त होकर (इदम्) यह (अब्रवीत्) कहा—(कृष्ण) हे कृष्ण (इमम्) इस (स्वजनं) मेरे अपने लोगों को (युयुत्सुम्) युद्ध की इच्छा से (समुपस्थितम्) सम्मुख उपस्थित (दृष्ट्वा) देखकर।

अर्थः– अत्यन्त कृपा के वश हुआ शोकयुक्त होकर यह कहा— हे कृष्ण! इन मेरे अपने लोगों को युद्ध की इच्छा से सम्मुख उपस्थित देखकर।

'सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते।।' (गीता 1/29)

(मम) मेरे (गात्राणि) अंग (सीदन्ति) शिथिल हुए जाते हैं, (च) और (मुखम्) मुख (परिशुष्यति) सब ओर से सूखा जाता है (च) और (मे) मेरे (शरीरे) शरीर में (वेपथु:) कंपकंपी (च) और (रोमहर्ष:) रोमांच (जायते) उत्पन्न होता है।

अर्थ:– मेरे अंग शिथिल हुए जाते हैं, मुख सब ओर से सूखा जाता है और मेरे शरीर में कंपकंपी तथा रोमांच उत्पन्न होता है।

भावार्थ:– अर्जुन ने यहाँ अपने विरुद्ध लड़ने वाली कौरवों की सेना में अपने ही भाई बंधुओं अर्थात् पिता के भाइयों, पितामह भीष्म आदि आचार्य द्रोण, मामा शल्य, शकुनि, भाई दुर्योधन और भाई के पुत्र–पौत्रों इत्यादि को भी देखा जिनकी गोद में खेलकर अर्जुन सहित पाँचों भाई शिक्षा–दीक्षा सहित बड़े हुए थे। कौरवों के समस्त सैनिक और यही सेनानायक कभी अर्जुन के पिता पाण्डु के सेवक थे। ऐसी भयंकर परिस्थिति राम–रावण युद्ध अथवा किसी भी पृथिवी के अन्य युद्ध में उत्पन्न नहीं हुई थी। यह पारिवारिक कलह से उत्पन्न युद्ध था जहाँ एक–दूसरे ने अपने ही खून पर वार करना था। पाण्डवों ने तो युद्ध टालने के लिए ***महाभारत के उद्योग पर्व श्लोक 21/7*** में विदुर सहित स्पष्ट कह दिया था कि यदि धृतराष्ट्र उन्हें केवल पाँच गाँव ही दे दें तो वह युद्ध नहीं करेंगे। परंतु शकुनि, कणिक एवं दु:शासन के दुराग्रह से युद्ध टल न सका। क्योंकि दुर्योधन ने उत्तर में कहा था कि युद्ध के बिना वह सुई की नोक के बराबर भी पृथिवी का टुकड़ा नहीं देगा, पाँच गाँव की तो बात ही क्या?अत: हम ध्यान दें कि दुर्योधन द्वारा युद्ध का निर्णय राज्य का लोभ–लालच, पाण्डवों की यश कीर्ति से राग–द्वेष और कौरवों में वैदिक धर्म का ह्रास तथा फलस्वरूप ऋषि, वेद, यज्ञ की निन्दा, नारी अपमान, जुआ इत्यादि अनेक अशुभ कर्मों में वृत्ति होने के कारण था। कौरवों की ऐसी कुवृत्तियाँ उस समय जग–ज़ाहिर थीं। जैसे भीम को विषपान कराकर दुर्योधन द्वारा पानी में फैंकना। धृतराष्ट्र की आज्ञा से पाण्डवों को राज्य से दूर वारणावत यात्रा पर भेजना और दुर्योधन द्वारा उन्हें वहाँ लाक्षागृह में जलाकर भस्म करने का षड्यंत्र, भीष्म और विदुर द्वारा पाण्डवों को आधा राज्य देने की सम्मति, आधा राज्य पाकर पाण्डवों द्वारा इन्द्रप्रस्थ नगर का निर्माण करना फिर युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ करना जिसमें दुर्योधन का पाण्डवों की कीर्ति को देखकर राग–द्वेष होना। फिर शुरू हुआ शकुनि के छल से जुआ और युधिष्ठिर द्वारा चारों भाई और द्रौपदी का हार जाना। दु:शासन द्वारा भरी सभा में द्रौपदी को केश पकड़ कर घसीटना। द्रौपदी द्वारा धृतराष्ट्र से वर मांगकर दास–दासी भाव से मुक्त होकर, इन्द्रप्रस्थ की तरफ लौटना। इस पर दु:शासन का अपना बड़े भाई दुर्योधन, जो कर्ण एवं शकुनि के पास बैठा था, वहाँ जाना और दुराग्रह–पूर्वक धृतराष्ट्र को पुन: युधिष्ठिर को जुआ

खेलने के लिए बाध्य करना तथा युधिष्ठिर को पुन: हराकर बारह वर्ष के लिए वनों में भेजना और कहा कि तेरहवें वर्ष पाण्डव गुप्त रूप से किसी नगर में रहें। यदि तेरहवें वर्ष वह किसी की जानकारी में आ जाएँ तो दोबारा बारह वर्ष तक वनों में रहें, ऐसी शर्त लगाना। इस निर्णय का भीष्म, द्रोण सभी ने विरोध किया था और गान्धारी ने धृतराष्ट्र को कुल बचाने के लिए कुलकलंक कहकर दुर्योधन को त्यागने का परामर्श दिया था। जिस पर धृतराष्ट्र ने अपनी पत्नी गांधारी को महाभारत के सभापर्व में उत्तर दिया था कि हे देवी! इस कुल का अंत भले ही हो जाए, परंतु मैं दुर्योधन को नहीं रोक सकता। उस समय युधिष्ठिर भाइयों सहित इन्द्रप्रस्थ के मार्ग में बहुत दूर निकल गए थे और जब रास्ते में ही उन्हें धृतराष्ट्र की जुआ खेलने की आज्ञा का संदेश मिला तब पुन: जुआ खेलने का संदेश पाकर अचानक युधिष्ठिर के मुँह से यह वचन निकले थे कि वृद्ध राजा धृतराष्ट्र यह जानते हुए कि मैं उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता। अत: जुए के लिए यह बुलावा हमारे कुल के नाश का कारण है। ऐसी कितनी ही बातें सभापर्व में युधिष्ठिर ने कहीं। अत: यह भ्रांति निर्मूल है कि सत्यवादी युधिष्ठिर जुआ खेलने के आदि थे। उन्होंने बेबस होकर राजा की आज्ञा का पालन मात्र किया था। राजा धृतराष्ट्र की जुआ खेलने की आज्ञा न मानते तब राज–आज्ञा उल्लंघन के आरोप में दण्ड भोगने के अधिकारी बनते इत्यादि।

अपने ही परिवार को युद्ध की इच्छा से सामने खड़ा देख कम्पित शरीर, शिथिल अंग एवं शुष्क मुख से पुन: अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा:–

'गांडीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मन:।।' (गीता 1/30)

(हस्तात्) हाथ से (गाण्डीवम्) गाण्डीव धनुष (स्रंसते) गिरते हैं (च) और (त्वक् एव) त्वचा भी (परिदह्यते) सब तरफ से जल रही है (च) तथा (मे मन:) मेरा मन (भ्रमति इव) घूमने के समान चकराता है (च) और इसलिए (अवस्थातुम्) खड़ा रहने के लिए (न शक्नोमि) समर्थ नहीं हूँ।

अर्थ:– हाथ से गाण्डीव धनुष गिरते हैं और त्वचा भी सब तरफ से जल रही है तथा मेरा मन घूमने के समान चकराता है और इसलिए मैं खड़ा रहने के लिए समर्थ नहीं हूँ।

'निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे।।' (गीता 1/31)

(केशव) हे केशव–कृष्ण (निमित्तानि) लक्षण (च) भी (विपरीतानि) विपरीत–विपरीत (पश्यामि) देखता हूँ (स्वजनम्) अपने परिवारजनों को (आहवे) युद्ध में (हत्वा) मारकर (श्रेय:) कल्याण (च) भी (न अनुपश्यामि) नहीं देखता हूँ।

अर्थ:– हे केशव! मैं युद्ध में विपरीत ही लक्षण देखता हूँ अर्थात् युद्ध करना हितकर नहीं देखता। क्योंकि अपने परिवार को युद्ध में मारकर मैं इसमें कल्याण नहीं देखता।

भावार्थः– ऊपर के श्लोकों में अर्जुन के हाथ से गाण्डीव धनुष का छूटना, सिर चकराना तथा स्थिर खड़े न रह सकना इत्यादि इस बात का संकेत है कि अपने परिवार को युद्ध में लड़ने के लिए खड़ा देख अर्जुन को अपने बचपन की भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य इत्यादि अनेक विद्वानों के साथ वात्सल्ययुक्त घटनाओं का स्मरण होना, उनका आशीर्वाद इत्यादि का स्मरण करके घबरा जाना है। अर्जुन काँप रहा है कि वह इन बुजुर्गों पर एक शत्रु के समान कैसे प्रहार करे। जिस गाण्डीव धनुष के द्वारा अर्जुन ने इससे पहले द्रुपद आदि की सेनाओं का संहार किया, राक्षसों का वध किया, चित्ररथ गंधर्व को पराजित किया, जिस गाण्डीव धनुष के बल पर द्रौपदी को स्वयंवर में जीता, द्रुपद को मारने आए शल्य और कर्ण को पराजित किया, इत्यादि अनेक शूरवीरता के कार्य किए। उसी अर्जुन के हाथ से युद्ध में गाण्डीव धनुष छूटा जा रहा था। यह सब स्वाभाविक है, यह निश्चित है कि चाहे युधिष्ठिर इससे पहले जुए में सब कुछ हार गए था, चाहे उन्हें लाख के घर में जलाने का षड्यंत्र रचा गया था या द्रौपदी का चीर हरण हुआ था। और ऐसी ही अनेक बातों के कारण चाहे पाण्डवों का कौरवों के साथ कितना ही विरोध था परंतु फिर भी अर्जुन के हृदय में कौरव इत्यादि के प्रति अदृश्य प्रेम का भाव था। अभी शत्रुता का भाव पूर्णतः प्रकट नहीं था। अन्यथा ऊपर के दो श्लोकों में कही मोहयुक्त अवस्था अर्जुन की न होती। ***अर्जुन वेदों को सुनने वाला, यज्ञ करने वाला और उसी के अनुसार माता–पिता गुरु (आचार्य) और वृद्धों की सेवा करने वाला था।*** इसके विपरीत दुर्योधन, दुःशासन शकुनि, कणिक इत्यादि कौरवों में प्रारम्भ से ही पाण्डवों के प्रति द्वेष एवं शत्रुता का भाव था। इन कौरवों ने इसलिए इस युद्ध से पहले अनेकों बार पाण्डवों के वध करने और उनके अधिकतर वनवासी जीवन व्यतीत करने का षड्यंत्र बार–बार रचा था।

अतः कौरव तो सचमुच युद्ध करने और पाण्डवों को समाप्त करने आए थे। उन्हें राजगद्दी, ऐश्वर्य का लोभ था। जबकि राजगद्दी कौरवों की नहीं थी। चोर डाकू ही दूसरों के माल को लूटने का प्रयास करते हैं। आज भी हमें भगवद्गीता शिक्षा दे रही है कि शांति से रहने के लिए

दूसरों के अधिकार, माल पर अपना अधिकार न जमाया जाए अन्यथा धर्म लुप्त हो जाएगा, प्रलोभन, लालच फलस्वरूप लड़ाई, दंगा—फसाद शुरु हो जाएगा।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—

'न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा।।' (गीता 1/32)

(कृष्ण) हे कृष्ण (विजयम् न काङ्क्षे) मैं विजय की कामना नहीं करता (च राज्यम्) और राज्य (च सुखानि) और सुखों को (न काङ्क्षे) नहीं चाहता (गोविन्द) हे गोविन्द (नः राज्येन किम्) हमें राज्य से क्या (वा) अथवा (भोगैः) भोगों से क्या (जीवितेन किम्) जीवन से भी क्या प्रयोजन।

अर्थः– हे कृष्ण मैं विजय की इच्छा नहीं करता और मैं न राज्य और न ही सुख की इच्छा करता हूँ। हे गोविन्द! हमें राज्य से भी क्या प्रयोजन अथवा भोगों के भोगने और जीवन से भी क्या प्रयोजन।

'येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च।।' (गीता 1/33)

(नः येषाम् अर्थे) हमने जिनके लिए (राज्यम् भोगाः च सुखानि) राज्य, भोग और सुखादि की (काङ्क्षितम्) इच्छा की थी (ते) वे (इमे धनानि च प्राणान्) यह सब धन और प्राणों के मोह को (त्यक्त्वा) त्यागकर (युद्धे) युद्ध में (अविस्थताः) स्थिर हैं।

अर्थः– हमने जिनके लिए राज्य, भोग और सुखादि की इच्छा की थी वे यह सब धन और प्राणों के मोह को त्यागकर युद्ध में स्थिर हैं।

भावार्थः– ऊपर के दोनों श्लोकों में पिछले तीनों युगों के आध्यात्मिक/धार्मिक जीवन का दर्शन और वर्तमान के भौतिक जीवन का दर्शन है। काँपता हुआ अर्जुन युद्ध के मैदान में श्रीकृष्ण से कह रहा है कि मैं सुखों की, भोगों की और जीवित रहने की इच्छा भी अब नहीं करता। अर्जुन का इन सुखों को त्यागने के प्रति तर्क है कि यह राज्य, सुखादि तो विपक्षी सेना में खड़े भीष्म, द्रोण, सम्बन्धी, प्रजा इन सबके लिए ही थे क्योंकि हम सब एक हैं और मिलकर आज तक राज्य का सुख सब भोग रहे थे और यही सब सुख, धन और जीवन का मोह त्यागकर युद्ध करने मेरे समक्ष खड़े हैं। यही सब युद्ध में यदि मर गए तब मैं राज्य सुख, भोगों को भोग कर क्या करूँगा। अतः मैं स्वयं (अर्जुन) भी जीवित नहीं रहना चाहता। यह सब उचित प्रकार से वैदिक शिक्षा ग्रहण करने का अर्जुन पर प्रभाव था। कृपाचार्य से वैदिक शिक्षा तो कौरवों ने भी पढ़ी थी, लेकिन बचपन से ही पाण्डवों से राग—द्वेष करने के कारण मानव धर्म नहीं समझ पाए अपितु राज्य गद्दी के लोभवश और भी खूंखार होते गए।

आज भी हम प्रायः वेद शास्त्रों एवं मज़हबों की बात करते हैं, एक ही ईश्वर की दुहाइयाँ देते हैं, परंतु उग्रवाद, स्वार्थ, लोभ अहंकारवश जब असहाय, बेकसूर, निहत्थे नर–नारियों, वृद्धों और बच्चों का कत्ले–आम करते हैं तो न जाने उस समय एक ही ईश्वर और ईश्वर सबका पिता है, हम सब प्राणी भाई–बहन हैं, ऐसी दुहाइयाँ कहाँ गुम हो जाती हैं?

इससे यह निश्चित है कि ऐसे धर्म की आड़ में लोभ, स्वार्थ इत्यादि अनेक आडम्बर होते हैं जो धर्म का नाम लेकर इंसानियत का खून करते हैं। उग्रवाद ही क्या, नेता भी धर्म की आड़ में शायद कुर्सी से चिपके पिछले लगभग साठ वर्षों से जनता के जान–माल की रक्षा करने में समर्थ नहीं रहे हैं। क्योंकि नेताओं का मकसद अर्जुन की भांति राज्य स्थापना करना जनता, परिवार इत्यादि को सुख देना नहीं, अपितु कौरवों की तरह सम्भवतः स्वयं कुर्सी हड़पकर भाई–भतीजावाद, नारी–अपमान, बँधुआ–मज़दूरी, अशिक्षा के साथ कुशिक्षा का बोलबाला, प्रदूषण, बेरोज़गारी, अनाज, मकान, कपड़ा इत्यादि की कमी करना है। देश में गरीबी, भ्रष्ट राजनीति इत्यादि अनेक खामियों से परिपूर्ण भारत आज अपनी वैदिक प्रतिष्ठा खो चुका है। यही दूसरा पक्ष है गद्दी के नशे में चूर कौरवों का, जो भ्रष्ट राजनीति द्वारा सदा पाण्डवों के प्राण–हरण, नारी–अपमान, धर्म की अवहेलना इत्यादि करते रहे। ***अथर्ववेद मन्त्र 3/28/1*** में कहा है कि प्रजा से कर प्राप्त करने वाला राजा प्रजा के सुखों को बढ़ाने वाला, कामनाओं को पूर्ण करने वाला तथा प्रजा को नष्ट नहीं होने देता। अगले ही मन्त्र में कहा कि राजा का मौलिक कर्तव्य है कि वह प्रजा की रक्षा करे और बलवानों द्वारा निर्बलों पर अत्याचार न होने दे।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा–

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा।। (गीता 1/34)

(आचार्याः) गुरुजन (पितरः) पितृकुल पुरुष (पुत्राः) पुत्र (च) और (तथा एव) वैसे ही (पितामहाः) दादा (मातुलाः) मामा (श्वशुराः) ससुर (पौत्राः) पोते (श्यालाः) साले (तथा) और (सम्बन्धिनः) रिश्तेदार भी हैं।

अर्थः– गुरुजन, पितृकुल पुरुष, पुत्र और वैसे ही दादा, मामा, ससुर, पोते, साले और रिश्तेदार भी हैं।

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते।। (गीता 1/35)

(मधुसूदन) हे कृष्ण (घ्नतः) मुझे मारने पर (अपि) भी (त्रैलोक्य राज्यस्य) तीन लोक के राज्य के (हेतोः) लिए (अपि) भी (एतान्) इन को (हन्तुम्) मारने के लिए (न इच्छामि) मैं इच्छा नहीं करता

(महिकृते नु किम्) पृथिवी के लिए तो कहना ही क्या?

अर्थ: – हे कृष्ण, मुझे मारने पर भी तीन लोक के राज्य के लिए भी, इन को मारने के लिए मैं इच्छा नहीं करता, पृथिवी के लिए तो कहना ही क्या?

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः।। (गीता 1/36)

(जनार्दन) हे कृष्ण! (धार्तराष्ट्रान्) धृतराष्ट्र के पुत्रों को (निहत्य) मारकर (नः) हमें (का) क्या (प्रीतिः) प्रसन्नता (स्यात्) होगी (एतान्) इन (आततायिनः) आततायियों को (हत्वा) मारकर (अस्मान्) हमें (पापम्) पाप (एव) ही (आश्रयेत्) लगेगा।

अर्थ: – हे कृष्ण! धृतराष्ट्र के पुत्रों को मारकर हमें क्या प्रसन्नता होगी? इन आततायियों को मारकर हमें पाप ही लगेगा।

भावार्थ:– ऊपर श्लोक *34* में 'आचार्य:' और 'पितर:' शब्द वैदिक हैं। ***'आचार्य' का अर्थ है जो सत्य आचार का ग्रहण करने वाला तथा सब विद्या प्राप्त कराता है, वह आचार्य है।*** सत्य स्वरूप होने एवं वेद विद्या का दान करने से परमेश्वर सबका आचार्य है। इसके पश्चात् वैदिक विद्या ग्रहण करके उसका दान करने वाले पूर्व के व्यास, वसिष्ठ आदि ऋषि एवं नूतन ऋषि, मुनि, साधु भी हमारे आचार्य हैं। यहाँ अर्जुन कृपाचार्य को आचार्य कह रहा है जिससे उसने चारों वेद पढ़े। दूसरा द्रोणाचार्य को आचार्य कह रहा है जिससे उसने वेदों में वर्णित शस्त्र विद्या सीखी थी। इन दोनों ही आचार्यों में वेद विद्या परिपूर्ण थी। आज यह कमी प्राय: गुरुओं में है जिसे ***तुलसी ने उत्तरकाण्ड*** में इस प्रकार कहा है:– ***'द्विज श्रुति बेचक'*** अर्थात् गुरुजनों ने अब वेद बेच दिए हैं, वेद के अक्षरों का उन्हें ज्ञान नहीं है। ***दूसरा शब्द पितर है जिसका वैदिक अर्थ है परंपरा से वैदिक विद्या जानने वाला गुरु। दूसरा अर्थ है– पितृवंश के पुरुष।***

अथर्ववेद मंत्र 7/2/1 में कहा कि ऐसा जीवित पितर (गुरु) जो परम्परागत सृष्टि रचना एवं समाधि द्वारा ईश्वर को जानता है वह ही इस पृथिवी पर प्रवचन करे। इस श्लोक में अर्जुन का तात्पर्य केवल पिता के वंश के बुजुर्ग पुरुषों से है। आज हमें भगवद्गीता में कहे वैदिक शब्दार्थों को जानने की अत्यन्त आवश्यकता है जिसके अभाव में हम गीता के गलत अर्थों को ही ठीक समझ कर 'गीता ज्ञान' का अनादर कर सकते हैं अथवा कर रहे हैं। गीता वैदिक ज्ञान भण्डार है। ***वेदों में जीवित पितरों (बुजुर्गों) के तर्पण को सेवा से तृप्त करना कहा है।*** यहाँ स्पष्ट रूप में अर्जुन जीवित पितरों एवं आचार्यों के साथ युद्ध न करने की घोषणा कर रहा है और कह रहा है कि इन जीवित आचार्य, पितर एवं सम्बंधियों को मारकर पृथिवी तो क्या, तीनों लोकों का राज्य भी नहीं चाहिए। क्षत्रिय का युद्ध करना वैदिक धर्म है। परंतु अर्जुन की समस्या यह है कि उसके

सामने खड़े जीवित पितर एवं आचार्यों की देख–रेख, आशीर्वाद एवं शिक्षा–दीक्षा तथा प्रेम पाकर ही वह सभ्य पुरुष कहलाया है, अपने पितामह (दादा) भीष्म की गोद में खेला है। तब प्रत्युत्तर में उनके ऊपर धनुष–बाण से कैसे वार करे? अतः यहाँ मोह–ममता का इतना प्रश्न नहीं, जितना मन में बुजुर्गों के प्रति कृतज्ञता, श्रद्धा एवं प्रेम–भाव का उमड़ना है, जो वेदानुकूल है। हाँ योगेश्वर श्री कृष्ण द्वारा धर्म एवं अधर्म का निर्णय पाकर पश्चात् ही युद्ध किया था। ऐसा विषय आगे आएगा। तीसरा वैदिक शब्द श्लोक ३६ में यहाँ आततायी है। ***मनुस्मृति श्लोक 8/346 एवं 351*** में कहा है कि प्रकाश में अथवा गुप्त रीति से यदि राजा आततायी को दण्ड देने में उपेक्षा करता है अर्थात् दण्ड नहीं देता है, वह राजा शीघ्र ही नष्ट हो जाता है और प्रजा उससे वैर करने लगती है। परंतु स्व–सम्बंधियों, पितरों, आचार्यों एवं पितामह इत्यादि को मारने की अर्जुन यहाँ इच्छा नहीं करता। वस्तुतः पितर, पितामह एवं आचार्य इत्यादि भी युद्ध में मन से अर्जुन के ही साथ हैं। यह भाव भी अर्जुन के मन को युद्ध न करने के लिए वात्सल्य पाश में बाँधे हुए है। अर्जुन धृतराष्ट्र के पुत्रों को आततायी और दुष्ट कह रहा है परंतु फिर भी इनको मारने में वह सुख नहीं मानता और अर्जुन पुनः कह रहा है कि अपने ही जनों को मारकर हम कभी भी सुखी नहीं हो सकते। अतः यहाँ अर्जुन के हृदय में वैर–भाव एवं राग–द्वेष पूर्णतः समाप्त हैं। जिसके अंतःकरण में वैर–विरोध, राग–द्वेष नहीं होता है, वह युद्ध भी नहीं कर सकता। आज के युद्ध और घर–घर की लड़ाई का आधार प्रायः वैर–विरोध, राग–द्वेष एवं सम्पत्ति इत्यादि सांसारिक विषय हैं। परंतु अर्जुन की तो कोई इच्छा ही शेष नहीं रही। इतने सब सद्गुण अर्जुन के और उसके पश्चात् योगेश्वर श्री कृष्ण का अर्जुन को आत्मज्ञान देना तथा पश्चात् अर्जुन का युद्ध करना, ***यजुर्वेद मंत्र 40/2*** का ज्ञान अर्जुन के जीवन में चरितार्थ करता है जिसमें कहा है कि प्राणी वैदिक शुभ कर्मों को करता हुआ ही कर्म से निर्लेप होकर मोक्ष पद प्राप्त करता है। राग–द्वेष इत्यादि अवगुणों से दूर इच्छा–रहित होकर जब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कर्मयोग आदि ज्ञान में सुना कि आत्मा अजर–अमर–अविनाशी है और अधर्म का साथ देने वाले धार्मिक पुरुषों से भी युद्ध करना क्षत्रिय का धर्म स्थापना करने के लिए एक वैदिक धर्म है, उसके बाद ही ज्ञानयुक्त होकर उसने पूर्णतः मान–हानि, हार–जीत इत्यादि इच्छाओं से रहित होकर धार्मिक युद्ध किया। अतः उसका पितरों, पितामह एवं आचार्यों आदि से युद्ध न करने का पहला निर्णय भी वैदिक धर्म पर आधारित था और इन्हीं पितरों का दुर्योधन, धृतराष्ट्र, दुःशासन एवं कणिक आदि धर्महीन, आततायियों का साथ देने से इनसे युद्ध करना भी वैदिक धर्म पर आधारित था। हाँ, यह अवश्य है कि युद्ध करने का वैदिक निर्णय श्रीकृष्ण के वैदिक उपदेश के पश्चात् ही उसके हृदय में प्रतिष्ठित हुआ था। गीता यहाँ ज्ञान देती है कि धर्म के विषय में निर्णय वेद सम्मत होना चाहिए। ***(क्रमशः)***

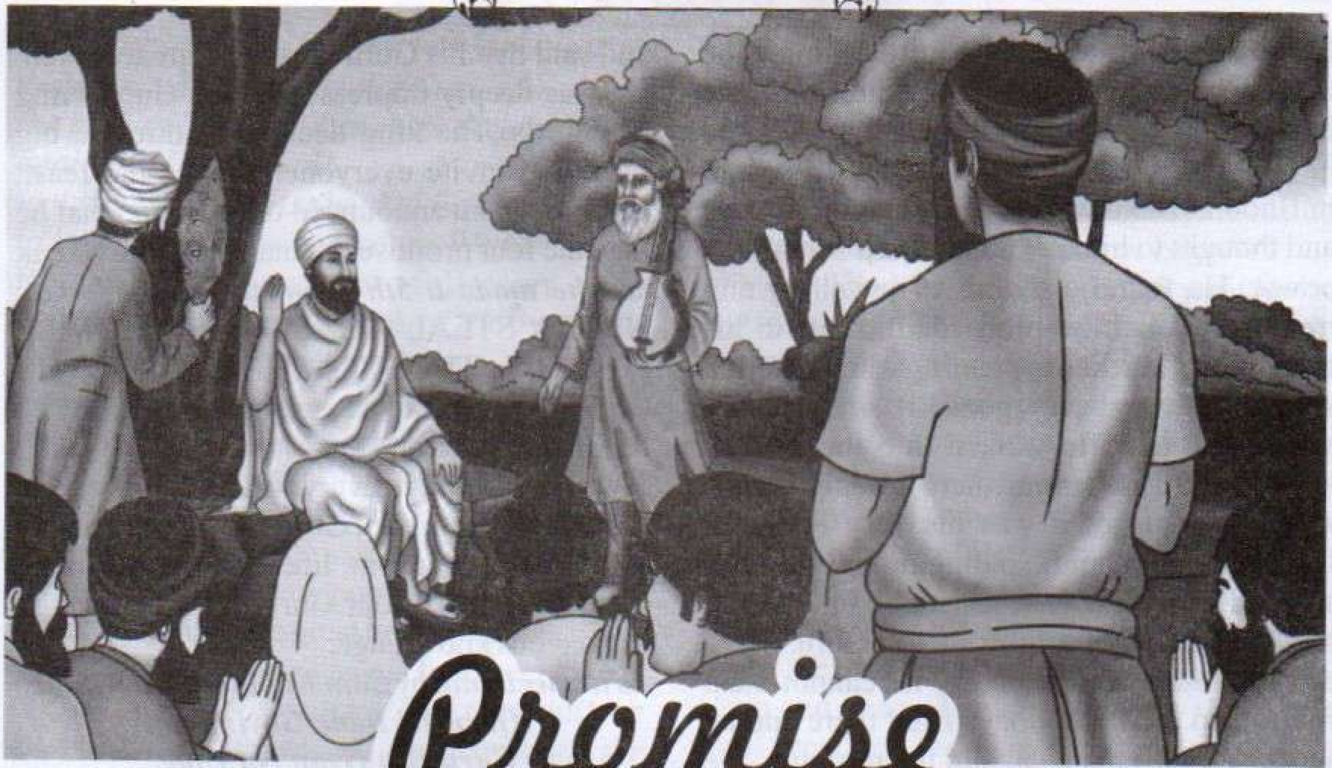

Promise

Seema Dogra

Once *Guru Nanak* was traveling, he came to a village where a robber lived. The robber's name was ***Bhoomi Daku,*** he was a thief. When he saw Guru Nanak, he respectfully pleaded, Guru ji to come and stay with him. Guru Ji took mercy on the thief and agreed to stay with him on one condition that before he comes to his house he has to promise him 4 things:

The first promise is YOU WON'T STEAL FROM POOR PEOPLE. They don't have much so that's not fair.

The second promise is that from now on: YOU ALWAYS HAVE TO SPEAK THE TRUTH.

The third promise is IF YOU GO TO SOMEONE'S HOUSE AND EAT FROM THEIR HOUSE, YOU WILL NOT STEAL FROM THEM.

The fourth promise is YOU WILL NEVER PUT THE BLAME ON SOMEONE ELSE. If you make all these promises, then I will come to your house. Bhoomi Daku promised to keep all 4 promises. So Guru Nanak went to his house and they enjoyed a nice evening together. Bhoomi Daku felt very happy and blessed to have such a wise and spiritual soul grace his house.

Later, forced by habit, Bhoomi Daku went out, as usual, to steal from people. Since he had promised not to steal from the poor, he decided to go and steal from the king's house. When he got to the king's house there were bodyguards blocking the way in. He tried to sneak in when they weren't looking but a bodyguard caught him and asked him that Who he was and the reason for visiting the palace. Bhoomi Daku remembered his promise to tell the truth. So he told the bodyguard that his name is Bhoomi Daku and

had come there to steal from the king. The bodyguard started laughing; he didn't believe him and allowed him in thinking that he might be King's guest. He told the truth and got right in.Bhoomi Daku walked into the king's house and thought to himself about Guru Nanak Ji's power. He found all kinds of jewellery and treasures, which he proceeded to put in his bags. As he kept stealing he smelled something very, very good. It smelled like sweet pudding! He walked into the kitchen and opened the oven and there it was delicious sweet pudding & it was his very favourite food! He could not help digging in ! It tasted so good! But right as he tasted the first bite he remembered his promise to the Guru. If he eats from someone's house, he cannot steal from them. So he left bags right there and he sneaked out of the palace.In the morning, the king noticed some of the pudding missing, and he saw the bag of treasure lying on the ground. King ordered his men to find out who was there and bring him to court. So the king's men went to the town and started asking people, but no one knew anything. After a while the guards did not find anyone and they started beating people. When Bhoomi Daku heard people crying out, he remembered his fourth promise to the Guru.He ran out and requested guards to stop beating innocent people and asked them to arrest him as he was the robber. So they brought him to the king. Bhoomi Daku explained everything to the king, but the king was confused and asked him why he confessed to the crime. He could have gotten away easily. Daku mentioned that his 4th promise to Guru Ji was that he wouldn't put blame on others for his crimes. Innocent people were blamed for his deed and he had to keep his promise. The king was impressed and said that his Guru must be a great person. He was deeply impressed by his Guru. King let him go.The king decided to throw a big feast and invite everyone. During the feast, Bhoomi Daku announced to everyone that he kept the four promises he made to Guru Nanak and ***he made a 5th promise that he*** WILL NEVER STEAL AGAIN, AND he WILL FOLLOW THE TEACHINGS OF THE GURU."Bhoomi Daku ultimately followed the path of truth and honesty that Guru Nanak Ji was preaching to everyone. This was one of the best true stories of Guru Nanak's teachings and its relevance in life. We may remain obliged always to our Guru for having given us precious knowledge.

As it is well said by Sant Kabir on Guru that:

Guru Hi Bade Govind Se.
Guru Bin Gyan Na Upje,
Guru Bin Mitey Na Dosh
Guru Bin Lakhe Na Satya Ko,
Guru Bin Miley Ne Moksh

No one can attain spiritual knowledge without the grace of the Guru and none can free himself or herself from the sins without his grace, Soul cannot free itself from Mind

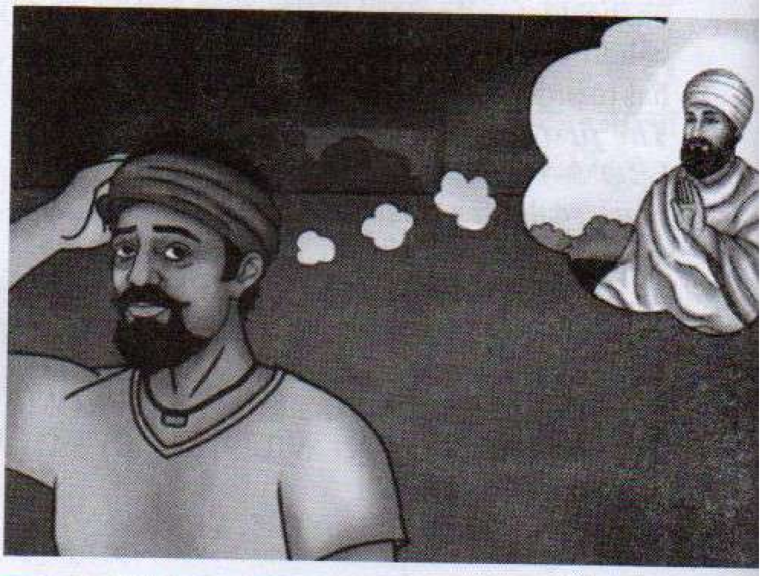

and Maya. In fact, it is the Guru who shows the path of Truth and enables the disciple to attain final liberation!

In the present day it is hard to find out the true followers of Gurus around us. We need more Bhoomi like innocent followers who understand the ultimate truth of life by merely following Guru's teachings.

Further insight by the Editor

Seema beti has very well quoted four spiritual preaches of Guru Nanak Dev Sahib. Yes, Vedas preach that until a true saint, Yogi, Rishi-Muni is met with an ordinary person, no eternal truth is realised and thus a great birth of human being goes in vain. Because there is fundamental law of ***God in Rigved mantra 1/22/3 that until the knowledge is given to an aspirant, the knowledge cannot be obtained.***

In this connection, I would also like to mention a true story of Mahabharat epic, mentioned in ***Sankhya Shastra, chapter 4, sutra 2.*** Idea of this true story is also this that if a preach is being given to a disciple etc., and simultaneously someone else is also listening then he would also gain the knowledge.

There was a learned acharya of Vedas who used to give Vedic preach to his disciple in a lonely place of jungle. Simultaneously, a demon was continuously listening to the preach of the learned acharya, while remaining hidden and while duly adopting the preach practically, the demon, after sometime, also became a learned of Vedas.

We must also know that if the preach is not attained by listening once then we must repeat the pious deed to listen to the knowledge again and again. ***Sankhya shastra, therefore, also preaches that the spiritual preach, if repeated again and again, leads the way to obtain realized knowledge. So, aspirants must listen to Vedas repeatedly.***

VIV

MEDICAL SCIENCE

Know about medicine from Atharvaved

Though the knowledge of medical science has been preached by God in all Vedas but especially we see the maximum knowledge about medicine in Atharvaved. So, as was in previous yugas, in present time also, we the human beings, for our self-protection from diseases and vices, should indulge in deep study of Atharvaved. See, ***Atharvaved mantra 6/15/1*** states that, God is the best and most supreme in curing the disease through medicines. So, we must also worship God according to Vedas only.

We must draw our attention towards ***Rigved mantra 10/137/2*** wherein God preaches that there are two types of air which work in body.

One- ***shwas vayu*** which enters through nostrils and reaches heart.

Second---- ***Prashwas vayu*** which is exhaled out through nostrils.

The ***shwas air gives you energy*** and ***prashwas air pushes out the diseases.***

So, we must daily do prannayam.

VIV

डॉ. वीना राज गुप्ता

उनकी फकीरी में ही गज़ब की अमीरी है

रोज़ सुबह बगीचे में पेड़ों से मुलाकात हो जाती है,
बेज़ुबाँ पौधे बिन कहे ही खुद की गुणवत्ता का प्रमाण,
अपनी आभा से, फूलों से, खुशबू से, फलों से दे जाते हैं,
अचानक एक नींबू के पेड़ पर नज़र गई,
वर्ष भर मैंने जिसे फलों से लदा देखा,
उसमें सदैव रस से लबालब नींबू,
वर्ष भर लगे ही रहते हैं,
हाँ! उस फकीर की अमीरी भी लाजवाब है,
फूलों की तरह बेज़ुबाँ बने रहते हैं,
पर उनके नयन, सूरत, आभा, हँसी,
उनके व्यक्तित्व का ब्याँ कर जाती हैं,
आह! कड़ाके की सर्दी,
वृक्ष पर मात्र कुछ पत्ते ही रह गए हैं,
कुदरत का करिश्मा, वृक्ष फिर भी फलों से लदा है,
यह अद्‌भुत दृश्य देख मैंने,
सृष्टि रचयिता को नमस्कार किया,
नींबू से बोली मैं तेरा कर्ज़ चुका ना पाऊँगी,
तू बस देता ही देता है, कुछ भी नहीं लेता,
फिर मैंने धरा को देखा,
उसे भी प्रेमपूर्वक मस्तक झुकाया,
ऐ धरती माँ! तू भी सबकुछ देकर कुछ नहीं लेती,
अनायास विश्व संस्कृति के प्रतीक ऋषि-मुनियों का आभास हुआ,
और उनका वेद मार्ग पर चलना, कठोर तप करना,
इस ओर मेरा ध्यान गया,
अनादिकाल से जो यह ऋषि हमपर,
वेद ज्ञान की वर्षा करके सुख देते चले आए हैं,
इन्होंने दिया वेद ज्ञान हमको, हम इन्हें कुछ ना दे पाएँ हैं,
हमारे कर्मों का बोझ अपने शरीर पर झेल जाते हैं,
अष्टाँग योग के ये तपस्वी,
बार-बार हमसे सुखदायक यज्ञ करवाते हैं,
साथ ही विश्व को देवपूजा, संगतिकरण, दान का उपदेश दे जाते हैं।
ऋषियों ने दिया वेद ज्ञान हमको, हम इन्हें कुछ ना दे पाएँ हैं। VIV

HAPPY
BAISAKHI
Parshotam Kumar
Brij Bushan
WHOLESALE
& RETAILER OF
KARYANA ITEMS
Ware House Road, Vikram Chowk, Jammu (J&K).
Ph.: 0191-2454900, Mob.: 94191-29721

KAVITA BOUTIQUE
Happy
Baisakhi
SPECIALIST IN :
Designer Suit Stitching
Designer Blouses
Laces
Lehangha Choli
Western Dresses
Night Suit & Nighty
Machine & Hand Embroidery
Hand Work Material
OPP. DEWAN JANJ GHAR, MANDIR MORH, SARWAL, JAMMU
Mb.: 90861-36713

HAPPY
DIVINE
... Daily Needs Store
BAISAKHI
SHOP No. 8, SHIV MANDIR SHOPPING COMPLEX, GANDHI NAGAR, JAMMU. Ph.: 60067-82173

Informationlord.com

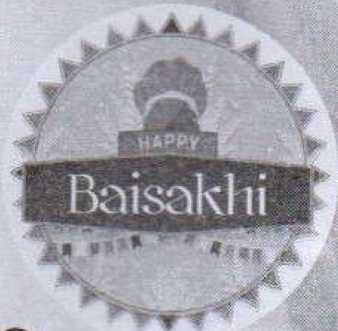

WE PROVIDE DIGITAL MARKETING SOLUTIONS

Easily enter into
Online World with
Search Engine Optimization,
Social Media Marketing,
& Brand Management.

Contact us: +918800101170

mail: mail@somesh.me

With best wishes from :

Smt. Charu Jamwal & Family

Koul Family | Gupta's Family

Smt. Anu Choudhary, Arjun & Nakul

Choudhary Family | Yadav Family

Anupama - K. Guruprasad - Manisha

Late Smt. Parveen & Sh. K.S. Sivaraja; Devyani

Smt. Madhu Gupta, Seema & Sandeep Gupta

Smt. Tripta Modi & Late Sh. R.K. Modi, Mona & Ratnesh Puri

Late Smt. Chanchal Gupta & Late Sh. C.D. Gupta, Sheetal & Rakesh Gupta

Smt. & Sh. Kulbushan Sharma & Rama Sharma

Dubey Family | Shah Family | Dewan Family

Smt. Satya Gupta & Sh. Kewal Krishan Gupta

Smt. Rekha Rani & Sh. Vishnu Kumar

Smt. Aparajita & Sh. Somesh Chaudhary

''ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयामशरदः
शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥''

RAGHAV KHAJURIA
1st APRIL

SHIVAANSH KHAJURIA
20th APRIL

KETVI
29th APRIL

RIDHI MAHAJAN
11th MAY

PRANAV GUPTA
28th JUNE

TEJ RITESH SURANA
3rd JULY

PUSHKAR GUPTA
24th AUGUST

GAUTAM ABROL
11TH SEPTEMBER

SOMIN SINGH
16th SEPTEMBER

JAYENDRA S JASROTIA
20th SEPTEMBER

G. MANISHA
27th SEPTEMBER

MANIT DUBEY
30th SEPTEMBER

RAKESH GUPTA	15th JUNE
VEENA	9th JULY
RENU	15th JULY
PARSHOTAM GUPTA	16th JULY
AKUL DEWAN	31st JULY

Birthday
Wishes

RAJ KUMAR & BROS.

Thathri Wale

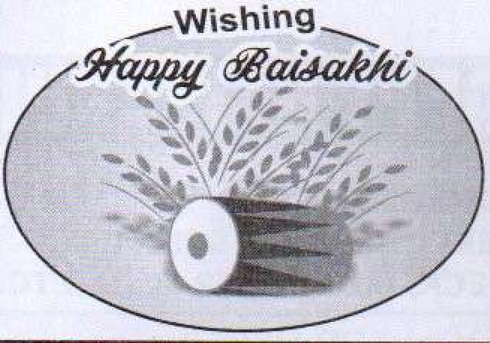

Deals in :
Pulses & All Dry Fruits
(Wholesale)

2-C, Nehru Market, Ware House, Jammu
Mob. : 94191-91371, 94192-27741

''समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥''

ANJANA - RAKESH DEWAN
(19th APRIL)

Dr. SUREKHA - RAKESH KOUL
(22nd APRIL)

SEEMA - NARESH KHAJURIA
(2ND MAY)

SHEETAL - RAKESH GUPTA
(11th MAY)

SANIA - VISHAL SHAH
(13th MAY)

NEHA - ARUN MAHAJAN
(18th MAY)

ANUPAMA - K. GURU PRASAD
(24th JULY)

Wedding Anniversary Wishes

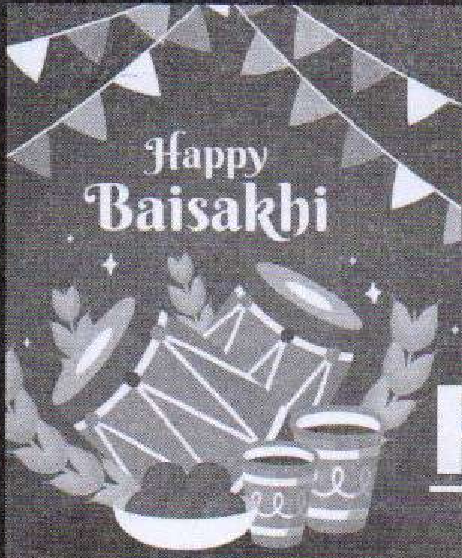

Dr. Mohi Kalsotra
Physician Specialist
MD Medicine

Dr. Vikas Sharma
Child Specialist
ASCOMS, Jammu

Mahesh Khajuria
9103198155

Prachi Medicate

Indira Vihar, Near Amba Theatre (Old Janipur) Jammu.
Ph.: 0191-2538155 Mob.: 94191-48155, 90700-69700

SANSIDHI HERBAL OIL

SANSIDHI_PHARMA

YouTube Sansidhi_pharma

A COMPLETE REMEDY FOR ALL PAINS

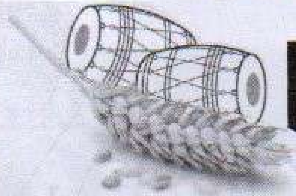

HAPPY BAISAKHI

INDICATIONS :
JOINT PAINS, CERVICAL PAIN, SCIATICA, DISC PAIN, STIFF NECK, MUSCULAR PAIN, ETC.

DIRECTION FOR USE :
TAKE 2 TSP. OF LUKEWARM OIL & LIGHTLY MASSAGE OVER AFFECTED AREA. DO NOT RUB VIGOUROUSLY.

*HARIDRA *DARU HARIDRA *ASHWGANDAN *AJWAIN *HARITKI *SOYA *KUTKI *KARANJ BEEJ, TEJPAAT *SAINDHAV LAWAN

SANSIDHI PHARMACEUTICALS

594, KRISHNA NAGAR:143521, PUNJAB, TEEKA LEHSAR, YOL BAZAR, YOL CANTT (H.P.)

FOR ANY QUERY CONTACT : 80544-18607

Happy Baisakhi

HUMANAL HARMONY

Collective Divine Inspiration

GLOBAL MESSAGE

deedee

- COMPLETE OFFSET PRINTING SOLUTION AND MFG OF EXCLUSIVE CARDS & BOXES WITH COMPLETE IN-HOUSE FACILITY INCLUDING DESIGNING & **CTP PROCESSING.**
- COMPLETE BINDING SOLUTIONS AND MFG. OF PAPER CARRY BAGS & ENVELOPS.
- COMPLETE PACKAGING INDUSTRY FOR MFG. OF MONO CARTONS, LABELS & OTHER PACKAGING MATERIALS.

dee dee reprographix - 3, AIKTA ASHRAM, NEW REHARI, JAMMU.
PH.: 2543038, 94191 08620, 99061 39999 e-mail: deedeereprographix@gmail.com

dee dee experts - 17-A, NEW REHARI, JAMMU.
PH.: 99061 39999 e-mail: deedeeexperts@gmail.com

dee dee packaging industries - LANE No. 4, PHASE II, SIDCO INDUSTRIAL COMPLEX, BARI BRAHMANA, J&K. PH.: 01923-222949, 94191 81240 e-mail: pi.deedee@gmail.com

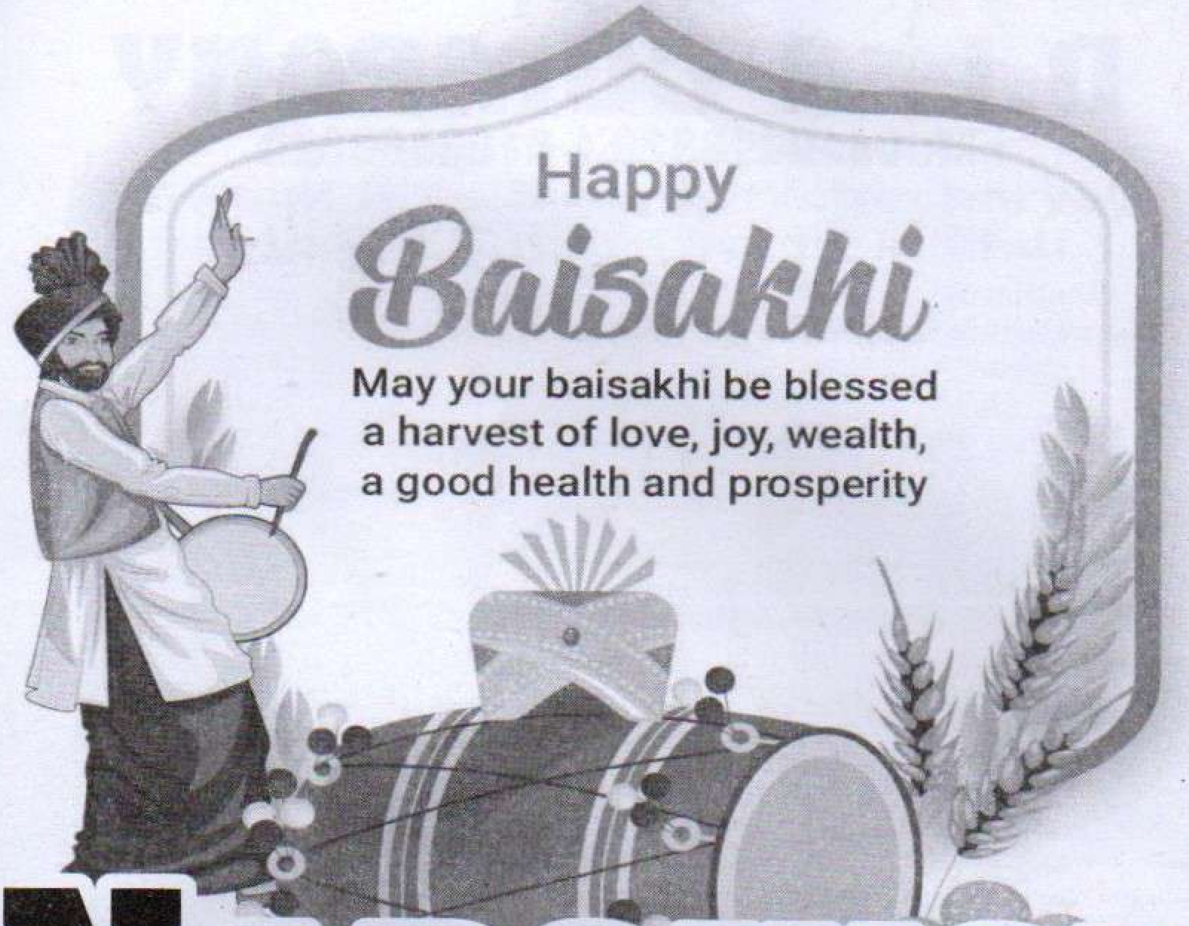

NARSINGH
STONE CRUSHER

Specialised in Railway Blast 65mm

Deals in : Washed Sand,
10mm, 20mm, 40mm, aggregate

TARNAH NALLAHA, DAYALACHAK, JAMMU (J&K)
Mob. : 9419208007

ओ३म्

D.L. & COMPANY

M: 9419198320 | 9103668320

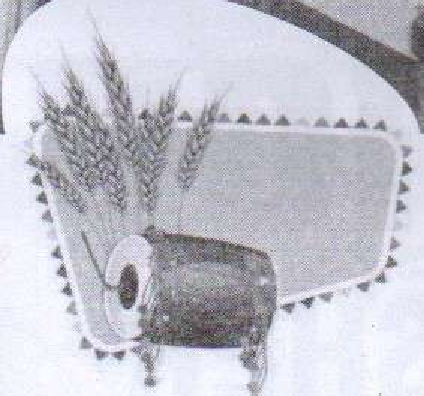

HAPPY BAISAKHI

DEALS IN : BARDANA SUTLI PLASTIC, HOUSE HOLD PRODUCTS, PLASTIC BAREELS & ALL KIND OF PLASTIC FURNITURE, ALL CASAROL SET, JAR RANGE, TIFFEN MILTON

WHOLESALE PRICE

H/O : NEAR POLICE POST, VIKRAM CHOWK, JAMMU.

B/O : OPP. FAIRDEAL PETROL PUMP, NATIONAL HIGHWAY, GANGYAL, JAMMU.

SANDEEP KUMAR & BROS, NEAR PUMA FACTORY OUTLET, GANGYAL, JAMMU.

SANDEEP GUPTA	SUNIL GUPTA	VISHAL GUPTA	JATIN MAHAJAN
9419198320, 9103668320	9419123320, 7006612785	9419196320, 9682147426	9070928888, 7780860923

Correspondence between Swami Ram Swarup 'Yogacharya' & Late S. Khushwant Singh Ji

Original Letter

(Continued)

(on the subject of Atheism & Casteism etc.)

(16) 10 Jan 2006

10 Jan. 2006

Dear Swamiji,

Thanks for enlightening me..... In the Guru Granth Sahib, the name of God appears ..... 16,000 times- more than half of them are Hari followed by Ram, Govind, Madhav, Vithal etc. Wahey Guru appears only 16 times, only used by bhakts not by the gurus. I presume by the time the Granth sahib was complied (late 16th century) Hari had become the most popular name of God in the north. Since he is the dark one, I presume it refers to Krishna.

I trust you are in good health.

Yours

Khushwant Singh.

(17) 25 Jan 2006

25th Jan. 2006

Dear Swamiji,

Thanks for your letter of 22nd Jan, I think you are wrong about Amen and Ameen. The words are used at the end of Christian and Muslim prayers and mean "So be it". They do not stand for peace nor have anything to do with Om. Likewise Omen is not translation of Om or Amen. It simply means........ of things to come.

I read the rest of your text with great interest. But I do think you take describing words too far ...... them with meanings they do not have. Forgive me for being blunt. I trust this finds you in good health and happy.

Yours

Khushwant Singh.

Shri Khushwant Singhji
49-E, Sujan Singh Park
New Delhi-110003

Swami Ramswarup, Yogacharya,
Ved Mandir, Tikka lehsar,
Yol bazaar, Yol Camp,
District Kangra, H.P.
Dated- 22nd Jan 2006.

Most Respected Shri Khushwant Singhji,
Namaste,
I hope this letter finds you in the best of your health. Received your two loving letters, dated 10th Jan 2006 and 25th Jan 2006, today on 1st Feb 2006.

Regarding OM, Amen and Ameen, I agree with your golden views. I shall also try to explain the words in short. Actually, based on the divine vanni of Vedas, learned have proved that in the universe, for the first time, divine vanni i.e., Vedic Sanskrit is adopted by all and it is the only means of communicating language in the beginning.

Thereafter, from the divine vanni, worldly Sanskrit and Sanskrit grammar is originated and thus Sanskrit is the mother to generate all the other languages. Its greatness coupled with modern attributes lies in this fact as well that it is more user-friendly and has the ability to express more thoughts in fewer words and due to this quality, Sanskrit language has been readily accepted by the computer.

It is a fact that other languages are the gift of Sanskrit language to mankind and hence all languages owe their origin from Sanskrit language and are respectable.

For instance,
ख. 'Khaha' is a Sanskrit word. The meaning of the said word is sun, space, Brahma etc.
'उ' 'Uhu' is another Sanskrit word, the meaning of which is several names of God, which have already been explained to your Excellency, while describing OM (Aa+O+M).
श. 'Sha' word means merriment. So from (ख+उ+श) Kha+U+Sh --- "Khush" word is made which is the name of Your Excellency made from divine Sanskrit vanni. The hindi meaning of Khush is happy. Further, (वः) Waha means air, good omens etc. When 'Wa' is added with half Na (न्), then it becomes Wan i.e., (वन्). The meaning of Wan is to respect, help etc. Ta (त) means chest, warrior, everlasting etc. So, the meaning of "want" becomes

Wan (वन्) is to respect, to help Ta (त) is a warrior,
i.e., a warrior who respects learned and helps the poor. And
Singh (सहि) means the lion!

Please, peruse one more example---

The word "Azharudin" is made from "Az+ha+ru+din".
"अज़हरुदीन" = अज़+ह+अरु+दीन
Word "Az" (अज़) means immortal
Ha (ह) means knowledge

Ru (रु) means to make sound, to scream, to roar.
Din (दीन) means poor, pitiable, needy.
So this is the meaning of Azharudin.

So Sanskrit language is the mother of all languages, however very few know this fact and therefore Amen, Omen, Ameen are the distorted versions of Om. However, Muslims and Christians have no concern with Om.

Based on the views of ancient rishis in Shastras/ Upnishads and the views of present learned persons, it has been concluded that the process of teaching, learning and studying of Sanskrit language is an old and even eternal tradition followed since time immemorial.

In Vedas, a word "Dev" (Devata) has been used. According to the situation, its meaning varies. So one meaning is "He who is learned of divine knowledge of Vedas, is "Dev" and women is called "Devi". Therefore Sanskrit language is usually called "Dev Bhasha" or "Dev vanni" because for the first time in the world, it is spoken only by Dev and others only become learned by listening from Dev, that is why, Vedas are also called "Shruti" i.e., listened knowledge. It is also very well clarified in Rigved mantra 8/100/11-

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु॥

i.e. Devim vachamajanayanta Devastaam viswharupaḥa pashwo vadanti,
Sa no mandreṣhmoorjam duhana dhenurvagasmanup suṣhṭutaitu.

"Devaha"= learned of Vedas, "Devim"= divine; "vacham"= voice/vanni; "ajanayant"= pronounces/ chants; "vishwarupaha"= several; "Pashvaha"= ordinary people; "Taam"= that vanni;
"Vadanti"= speaks (i.e., after listened from Dev, the ordinary people then start speaking); "Saa"= that Ved vanni; "Neha"= ours; "Vak"= voice/ vanni, "Eesham"= of food grains; "Vrjam"= of energy; "Duhana Dhenuhu"= like milch cow; "Usman"= to us; "mandra"= sweet; "Sushtuta"= makes us able to speak easily; "Up Etu"= are acquired; "Swaha"= auspicious praise.

Meaning:- The learned of Vedas (Dev) when first time pronounces/ chants the divine voice/ vanni of Vedas, then ordinary people after listening from them start speaking the divine vanni. That ved vanni is ours and it provides us with food grains, energy like milch cow; with the result we become sweet spoken and chant the mantras easily.
Swaha= this is our auspicious praise of divine ved vanni as well as to God from whom, it emanates at the beginning of the earth.

Idea of the mantra:-

1st TIME PRONOUNCE:- 1st time pronounce means ***Yajurveda mantra 31/7 and Atharvaveda mantra 4/1/1 and Shastras like Yog Shastra Sutra 1/26*** are proof that the

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

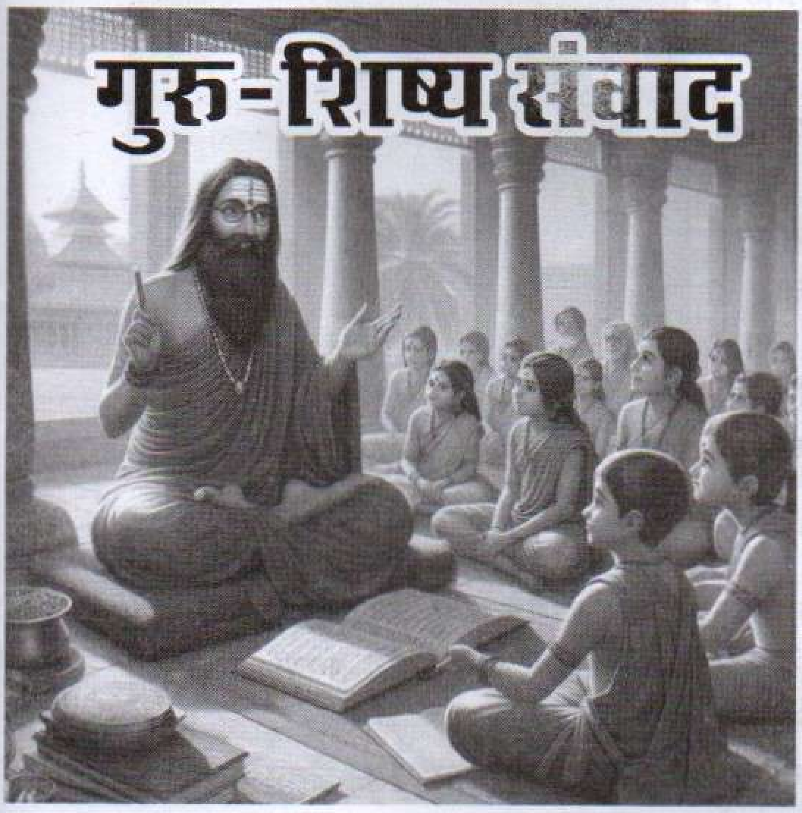

अप्रैल का महीना गर्मी का आह्वान करता है। जैसे ***ऋग्वेद मन्त्र 1/1/1*** में उपदेश है– ''ऋत्विजम्'' अर्थात् ईश्वर प्रत्येक ऋतु में पूजनीय है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह अप्रैल आदि के महीनों में, जब भीषण गर्मी का प्रकोप होता है, उसमें भी वह नित्य ईश्वर की वेदानुसार उपासना करते रहें एवं ***अथर्ववेद मन्त्र 20/96/9*** में स्पष्ट उपदेश है कि इस प्रकार साधक वैदिक मार्ग पर चलता हुआ ***100*** वर्ष से भी अधिक स्वस्थ आयु प्राप्त करे। यहाँ यह भी विचार करना आवश्यक है कि प्रत्येक ऋतु में आसन–प्राणायाम, नाम स्मरण आदि योग साधना करते हुए जो भी कष्ट साधक के समक्ष आते हैं, उन्हें सहते हुए, प्रत्येक ऋतु में ईश्वर उपासना–साधना करने को ही तप कहते हैं, जिसे अत्यन्त पुरुषार्थ से साधक को करते रहना चाहिए। ***वेदों में उपदेश है कि जिज्ञासु वेद ज्ञाता, विद्वानों के समीप जाकर अनेक प्रकार के प्रश्नों को, उनके सम्मुख रखें एवं उनका उत्तर प्राप्त करके, समझ के और दूसरों को भी ज्ञान देकर विद्या को बढ़ावें एवं सत्य तथा असत्य को यथार्थ भाव से समझाएँ।***

वेद मन्दिर में जिज्ञासु, ब्रह्मचारी अपने कक्ष में स्थान ग्रहण करके, अपने आचार्य की प्रतीक्षा में बैठे हैं एवं परस्पर वेद मन्त्रों का मनन–चिन्तन भी कर रहे हैं। कुछ समय पश्चात् आचार्य कक्ष में प्रवेश हुए, सभी विद्यार्थियों ने उठकर उनका अभिनन्दन किया। आचार्य जी ने अपना स्थान ग्रहण करके सोमेन्द्र से पूछा–

आचार्य– हे सोमेन्द्र! क्या आप ***ऋग्वेद मन्त्र 1/18/9*** का अर्थ समझा सकते हो ?क्योंकि मन्त्र में आए पद ***''नराशंसम्''*** का अर्थ किसी ने अवतारवाद से जोड़ दिया है।

सोमेन्द्र– प्रणाम, आचार्य! मुझे याद है कि एक बार आपने ***''नराशंसम्'' पद का अर्थ, ''सब मनुष्यों द्वारा स्तुति करने योग्य''*** किया था। अब मैं आपके

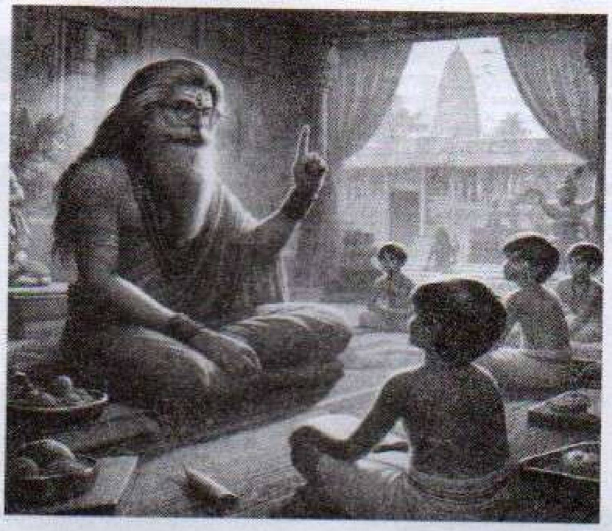

आदेशानुसार, आपके कहे मन्त्र का अर्थ प्रस्तुत-करता हूँ।

अर्थ– मैं ***(न)*** जिस प्रकार सूर्य–चन्द्रमा आदिकों के प्रकाश से ***(सद्ममखसम्)*** जिस प्रकाश में प्राणी स्थिर होते हैं, जीवन व्यापन करते हैं और सम्पूर्ण जगत् भी उस प्रकाश को प्राप्त होता है ***(सप्रथस्तमम्)*** जो बड़े–बड़े आकाश आदि पदार्थों के साथ अच्छी तरह व्याप्त है अर्थात् जो परमेश्वर सर्वव्यापक है, सबमें है ***(सुधृष्टमम्)*** उत्तमता से सब संसार को धारण करने वाले ***{तैत्तिरीयोपनिषद् ब्रह्मानन्द वल्ली,*** अनुवाक ***6*** के अनुसार ***''तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्''*** अर्थात् उस जगत् की रचना करने वाले परमेश्वर ने जगत् की रचना करने के पश्चात् ''तत् एव'' वह परमेश्वर उसी में ***''अनुप्राविशत्''*** साथ–साथ प्रवेश कर गया। इसी परमेश्वर की वेद–शास्त्रों में स्तुति–प्रशंसा की जाती है।}

(नराशंसम्) सब मनुष्यों द्वारा स्तुति करने योग्य ***(सदसस्पतिम्)*** सब जड़–चेतन तत्त्वों के स्वामी, परमेश्वर को ***(अपश्यम्)*** योग–दृष्टि द्वारा देखता हूँ।

भाव है कि जैसे प्रत्येक मनुष्य सूर्य–चन्द्रमा आदि के प्रकाश को देखता है, जो प्रकाश चारों ओर फैला हुआ होता है उसी प्रकार वेद मार्ग पर चलकर, ईश्वर नाम– स्मरण, अष्टाँग योग साधना, अग्निहोत्र–यज्ञ आदि विद्या को आचार्य के अधीन रहकर उसका कठोर एवं दीर्घकाल तक अभ्यास करके ईश्वर को जानकर सदा सुखी रहे।

आचार्य– शाबाश सोमेन्द्र! आपका स्वाध्याय अति उत्तम है। आपको मेरा बहुत–बहुत आशीर्वाद। इसी तरह आगे बढ़ते रहो। आप जानते ही हैं कि प्रत्येक सृष्टि के आरम्भ में वेदवाणी ईश्वर से उत्पन्न होकर चार ऋषियों के हृदय में प्रकट होती है। अत: यहीं से वेद विद्या का चार ऋषियों द्वारा प्रचार होता है। इसके अतिरिक्त विश्व में कोई भी अन्य वाणी एवं वर्तमान काल का सत्संग इत्यादि नहीं होता था। अत: वेद वाणी से ही विश्व में ज्ञान का प्रचार हुआ है और सत्य ईश्वर से उत्पन्न वेदवाणी ही सत्य है।

हे पुत्री, ऋचा! आप बताएँ कि कौन मनुष्य काल की सूक्ष्म गति (जो व्यर्थ खोने के योग्य नहीं है) को जाने?

ऋचा– प्रणाम आचार्य! यह मनुष्य का जीवन अमूल्य है क्योंकि मनुष्य जीवन में ही आचार्य के अधीन रहकर वेदाध्ययन एवं वैदिक शिक्षा पर आचरण करके नर–नारी ईश्वर उपासना द्वारा मोक्ष पद प्राप्त कर सकते हैं। यदि कोई नर–नारी इस काल की गति को नहीं जानता और एक क्षण भी बिना वैदिक शुभ कर्म किए व्यतीत कर देता है तो वह अभागा है क्योंकि वह क्षण, जितना मर्ज़ी धन खर्च कर लो, वापिस नहीं आएगा और जीवन का वह क्षण व्यर्थ चला जाएगा एवं जिसे एक क्षण भी जीवन का बर्बाद करने का अभ्यास हो गया है वह घंटे–सप्ताह, मास, वर्ष और अन्त में जीवन भी बर्बाद कर लेगा। अत: जीवन का प्रत्येक क्षण बहुमूल्य है, इसे व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1/30/20 में उपदेश है कि पुरुषार्थ करने का समय उषाकाल की वेला से प्रारम्भ होता है। अत: ***प्रत्येक नर–नारी प्रात:काल से उठकर रात्रि में जब तक सोने का समय ना हो तब तक एक क्षण भी व्यर्थ ना गँवाए।*** फलस्वरूप ही जीव सब काल में सुखी रह सकते हैं। विपरीत में जो पुरुषार्थी नहीं है, आलसी हैं, वे कभी भी सुखी नहीं रह सकते।

अगले ही मन्त्र में उपदेश है कि मनुष्य भूत, भविष्य और वर्तमान काल को भली प्रकार जानें, समय के प्रभाव को जानें, उषाकाल को जानें एवं पुरुषार्थ द्वारा समय का सदुपयोग करें जिससे ***कोई भी मनुष्य कभी भी क्षण भर भी व्यर्थ समय ना गँवाए विद्वानों से समय का महत्त्व जानकर समय को व्यर्थ ना जानें दें।*** उसका वेदानुसार ठीक–ठीक उपयोग करें।

हे आचार्य! ***अथर्ववेद मन्त्र 19/63/1 में ईश्वर ने विद्वानों को भी आदेश दिया है कि हे वेद के रक्षक, विद्वान्! आप उठो और वेद के जिज्ञासुओं को यज्ञ द्वारा विषय–विकार, आलस्य, निद्रा आदि से जगाओ एवं यजमान को तथा उसके जीवन, प्राण, प्रजा, पशु और उसकी कीर्ति को बढ़ाओ।*** इससे वेदों का प्रचार होता है एवं मनुष्य अज्ञान त्याग कर ज्ञानवान् बनता है। इससे मनुष्य समय के दुरुपयोग से बचता है। वेद ज्ञाता, विद्वान् आचार्य ही वेद विद्या के स्रोत्र हैं। उनके अभाव में कोई भी ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। अत: हम वेद ज्ञाता, विद्वानों की शरण में वेद ज्ञाता, विद्वानों की शरण में जाकर, वेद विद्या प्राप्त करके, वेदों में कही शिक्षा को आचरण में लाकर, इस प्रकार एक क्षण भी व्यर्थ ना करते हुए सुखी जीवन व्यतीत करें तथा मोक्ष पद प्राप्त करें।

हे आचार्य! ***सामवेद मन्त्र 1826 में भी उपदेश है कि जो मनुष्य उषा काल में जागता है एवं वेद विद्या का अध्ययन करता है, उसको ऋग्वेद के मन्त्र चाहते हैं। क्योंकि वेद मन्त्र चेतन ब्रह्म के समान हैं। वह जिज्ञासु सामवेद के वचन प्राप्त करता है। जो उषा काल में जागता है उसको परमेश्वर कहते हैं कि वह उसके मित्र हैं। अत: कोई भी नर–नारी जीवन***

में एक क्षण भी व्यर्थ ना करे। प्रात: उठकर सोने के समय तक शुभ कर्म करते रहें। यही जीवन का सर्वोत्तम सुख देने वाला कर्म है।

आचार्य– शाबाश, बेटी ऋचा! आपका भी वेदाध्ययन एवं नित्य अग्निहोत्र करना, गृहस्थ आश्रम के नियमों को निभाना अति उत्तम है। आप अपने सुपुत्र इयान बेटे का पालन–पोषण भी वेदानुसार उत्तम प्रकार से करती हो। पति की एवं अपनी माता समान सास की भी सेवा में कोई कमी नहीं आने देतीं। बेटी, आपको जो सुपुत्र इयान ईश्वर कृपा से प्राप्त हुआ है, वह बुद्धिमान्, ज्ञानवान्, दीर्घायु–युक्त, अति सुन्दर, सुखदायक, हँसमुख पुत्र प्राप्त हुआ है। उस नन्हें–मुन्हें को भी बहुत–बहुत आशीर्वाद। बेटी, आप दोनों समय अग्निहोत्र करके निश्चय ही गृहस्थ का वातावरण आध्यात्मिकवाद से परिपूर्ण करके उसे सुखदायक बना देती हो।

हे पुत्र, ओमेन्द्र! आप बताएँ की परमेश्वर कहाँ रहता है?

ओमेन्द्र– प्रणाम, आचार्य! ऐसे तो परमेश्वर सर्वव्यापक हैं अर्थात् सृष्टि रचना करने के पश्चात् वह सम्पूर्ण सृष्टि के कण–कण में प्रवेश कर जाते हैं। परंतु जिस ऋषि–मुनि, योगी के हृदय में वह प्रकट होते हैं, वह उनका ऐसा पवित्र स्थान है जहाँ से परमात्मा उन ऋषियों द्वारा वेद के जिज्ञासुओं को वेद वाणी का उपदेश कराते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 10/21/5 के अनुसार भी वेदाध्ययन एवं वेदों में वर्णित शिक्षाओं को आचरण में लाने वाला स्थिर चित्त वाला योगी सर्वशक्तिमान् परमेश्वर को अपने हृदय में साक्षात् करता है– अनुभव करता है।

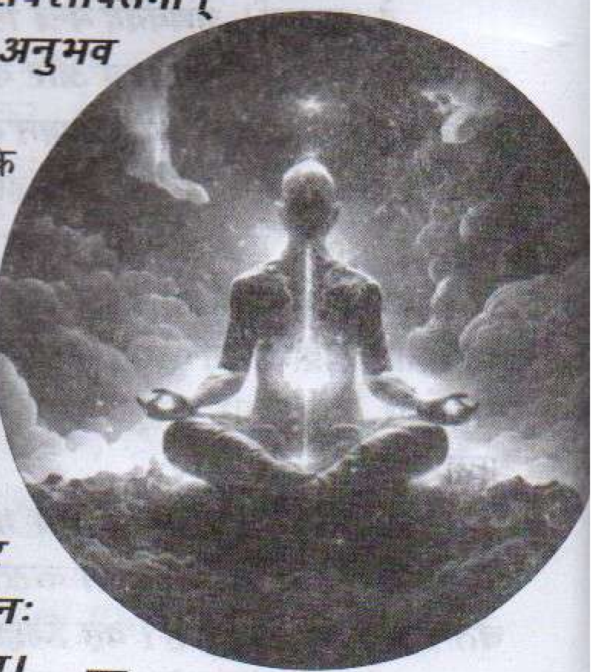

हे आचार्य! ***ऋग्वेद मन्त्र 10/22/1*** में उपदेश है कि परमेश्वर वेद मार्ग पर चलने वाले अधिकारी ऋषियों के निवास–स्थान में भी और उनकी बुद्धि में भी साक्षात् किया जाता है।

आचार्य– शाबाश, बेटा ओमेन्द्र! आप जैसे विद्यार्थियों से ईश्वर और ईश्वर से उत्पन्न चारों वेदों के विषय में सुनकर अति प्रसन्नता अनुभव होती है।

वर्तमान काल के बेटे–बेटियों में यदि सरकार वेद विद्या प्राप्त करने के साधन जुटा दे तो हमारा देश पुन: सोने की चिड़िया एवं विश्व गुरु की पदवी प्राप्त कर लेगा। VIV

बात जो दिल को छू गई

शीतल गुप्ता

बात कुछ महीने पहले की है मैं ऑनलाइन यज्ञ सुन रही थी। मेरे ***आचार्य स्वामी रामस्वरूप जी*** जो आज के युग में भी यज्ञ करवाते हैं जो श्री राम, श्री कृष्ण के युग में होते थे। मेरे आचार्य महर्षि हैं, अष्टाँग योग के ज्ञाता, महाज्ञानी और एक तपस्वी योगी हैं जो हमें वैदिक ज्ञान देते हैं। वैसे तो यज्ञ मेरे आचार्य के आश्रम योल कैन्ट में होते हैं लेकिन मेरे आचार्य बहुत विशाल और उदार हृदय के हैं और जगत् कल्याण के लिए उनका यज्ञ ऑनलाइन भी आता है।

हमारे आचार्य कहानी तो कम ही सुनाते हैं लेकिन ज्ञान देने के लिए सुनाते हैं। मैं आनॅलाइन यज्ञ सुन रही थी। आचार्य जी ने बताया एक बार एक ***साहूकार*** था उसको किसी ने ***एक जिन्न*** दिया और कहा जो भी काम होगा इस जिन्न को कहना यह कर देगा। साहूकार पहले तो खुश हो गया अपने काम उसको बताने लगा। जिन्न झट से काम कर देता, कहता और बताओ। वह उसे फिर से और काम बताता। वह जिन्न वो भी झट से कर देता। वह साहूकार उसे बड़े–बड़े काम भी बताता, कई बहुत दूर–दूर के काम भी बताता, वह वो भी झट से कर देता। वह साहूकार से कहने लगा ***अगर आप मुझे और काम नहीं बताओगे तो मैं आपको खा जाऊँगा,*** साहूकार को समझ न आए अब वो क्या करे। वह बहुत परेशान हो गया क्योंकि ***अब वह जिन्न उसके लिए दुख का कारण बन गया था।*** वह किसी संत के पास गया और उसने सारी बात सुनाई। संत जी ने उसे बताया कि तुम ***एक बाँस का डंडा अपनी ज़मीन में थोड़ा गाड़ दो और उस जिन्न से कहो इस डंडे के ऊपर चढ़ और नीचे उतर।*** जब तुम्हें कोई काम होगा तो उससे करवा लेना और काम खत्म होने के पश्चात् कहना बाँस पर चढ़ और उतर। जिन्न बाँस पर चढ़ता और उतरता सारा दिन और रात, ऐसे करते–करते जिन्न बेहाल होने लगा। मेरे आचार्य ने हमें समझाया कि हमारा मन भी ऐसा ही है, मन में अलग–अलग तरह के विचार आते हैं, हमें मन डराता है, कभी परेशान करता है कभी उत्तेजित कर देता है, कभी विषय–विकार, क्रोध और आलस में डाल देता है इसलिए हमें भी इस मन को अच्छे कामों में लगाना है, हमारा मन शिव संकल्प वाला होना चाहिए। जब हम

कार्य कर लें फिर ***हमें अपने मन को साँसों के द्वारा उपर–नीचे नाम सिमरण में लगाये रखना है जिससे हमारी बुद्धि शुद्ध होगी अन्यथा जिन्न की तरह हमारा मन भी हमें खा जाएगा।*** सच अपने आचार्य की बात इतनी दिल को छू गई और लगा कितना सरल उपाय बताया है हमारे आचार्य ने इस शैतान मन से बचने के लिए।

संपादक के विचार

शीतल बेटी के दिल को जो बात छू गई, यह बात ही अपने आप में अति उत्तम बात है। कथा में जो कहा है कि भूत को वश में करने के लिए आंगन में एक मज़बूत और लम्बा बाँस गाढ़ दें और भूत को खाली समय में उस बाँस के ऊपर चढ़ने और नीचे उतरने का आदेश दें और यह चढ़ने और उतरने का क्रम तब तक चलता रहे जब तक कोई और कार्य कराने के लिए ना मिले। वास्तव में यह कहा है–

''यह मन भूत समान है, दौड़े दाँत पसार, बाँस गाढ़ उतरे–चढ़े, सब बल जावें हार''

कथा से सत्य समझने के लिए हम नीचे एक और भजन की पंक्तियाँ लिखते हैं:–

''बंगला भला बना दरवेश, जिसमें नारायण परवेश,
इस बंगले के नौ दरवाज़े, दसवाँ पवन का खम्भा,
आवत–जावत किसे ना देखा, है यह एक अचम्भा।''

भाव यह है कि यह मानव शरीर को एक बंगले का रूप दिया है जिसमें स्वयं परमेश्वर का भी निवास है। परमेश्वर साधक को, जो वेदानुसार साधना करते हैं, उन्हें इस मानव शरीर के अन्दर ही प्राप्त होते हैं। इस मानव शरीर में श्वास–प्रश्वास की क्रिया, बिना रुके, चलती रहती है। इस श्वास–प्रश्वास क्रिया को ही कथा में पवन के खम्भे का रूप दिया है और संकेत दिया है कि ***मन को इस पवन के खम्भे अर्थात् श्वास–प्रश्वास क्रिया में लगा दो एवं स्वाँस–स्वाँस में परमेश्वर का नाम भी चला दो अर्थात् श्वास–प्रश्वास में ईश्वर के नाम का स्मरण करते रहो।*** जब कोई गृहस्थाश्रम या आध्यात्मिकवाद का शुभ कर्म करना हो तब वह शुभ कार्य करो; कार्य समाप्त होते ही मन से पुन: नाम स्मरण स्वाँस–स्वाँस में करते रहो। इससे मन भटकेगा नहीं और ना ही आप (जीवात्मा) इसे भटकने दें। बस उस पवन के खम्भे के द्वारा ईश्वर का नाम स्मरण चलता रहे। भजन में कहा भी है:– ***हर साँस में हो सिमरन तेरा,***
ऐसा बना दे प्रभु जीवन मेरा। VIV

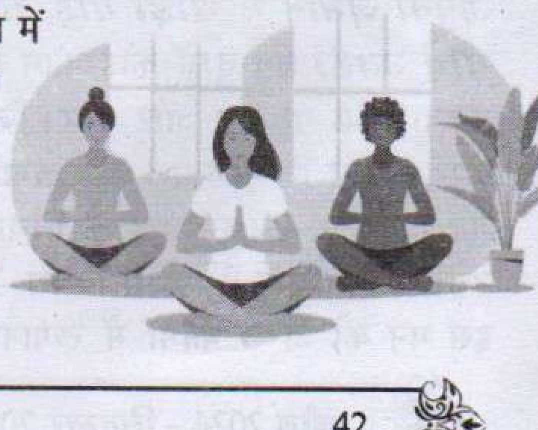

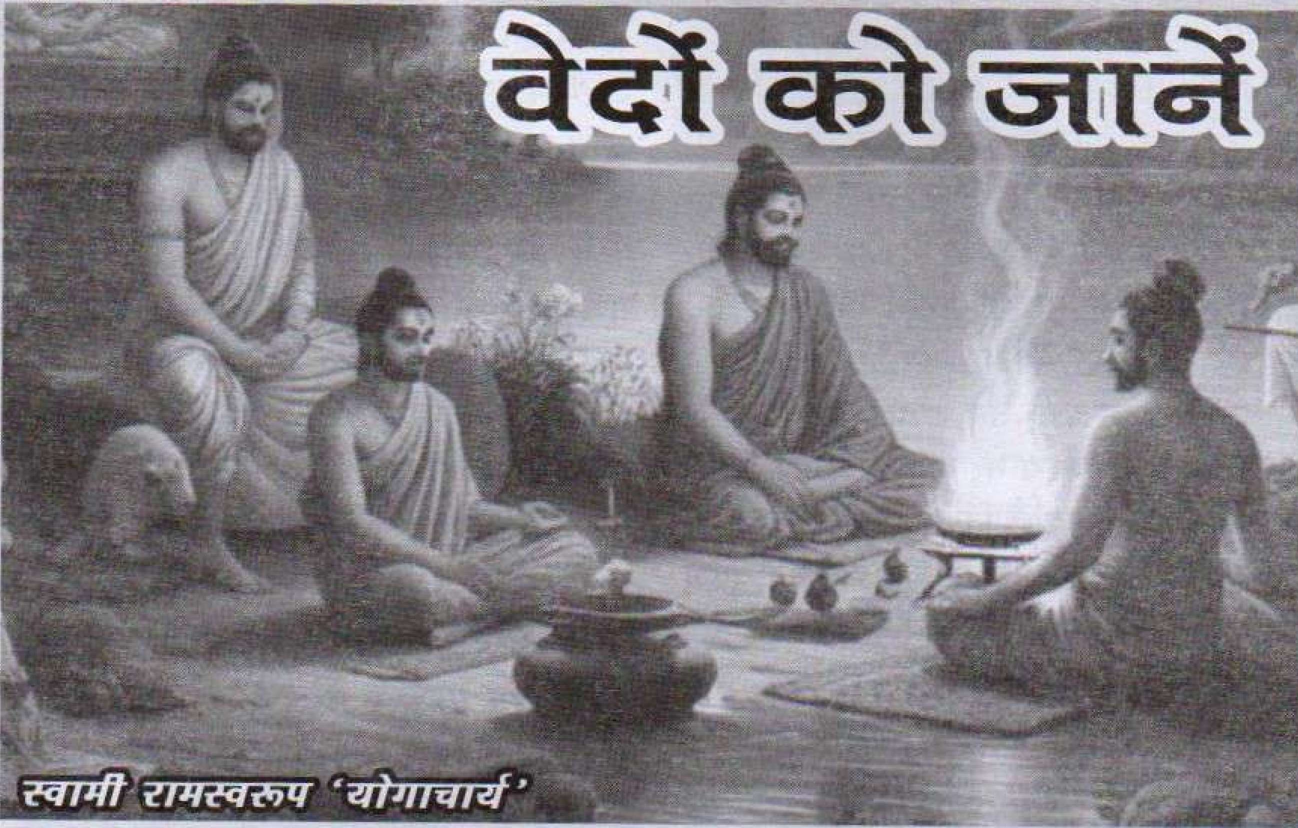

वेदों को जानें

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

यह निश्चित है कि ईश्वर भक्ति बिन सुख नहीं। अत: ईश्वर की भक्ति को जानने के लिए हमें प्रथम यह जानना आवश्यक है कि ईश्वर किसे कहते हैं और ईश्वर की भक्ति किस प्रकार की जाती है? इन प्रश्नों के उत्तर समझने से पहले हमें प्रकृति का एक नियम जानना आवश्यक है कि ***''ज्ञान दिए बिना ज्ञान नहीं होता''।*** दूसरा, यह जानना भी परमावश्यक है कि आदि काल में, प्रलयावस्था के पश्चात् जब ईश्वर सृष्टि की रचना करता है और उस समय ***ऋग्वेद मन्त्र 10/129/1,2,3*** आदि के अनुसार सृष्टि से पूर्व ना मृत्यु थी ना मोक्ष आदि था, ना रात्रि थी ना दिन था अर्थात् कुछ भी ना था क्योंकि वह प्रलयावस्था थी परंतु परमेश्वर, जो जन्म–मृत्यु से परे है, वह स्वसत्ता रूप से, बिना किसी की अपेक्षा, जीता–जागता ब्रह्म तत्त्व था। दूसरा, जड़ प्रकृति थी, जिससे संसार रचा जाता है और चेतन जीवात्माएँ थीं, जो कर्मानुसार अपने नए शरीर की प्रतीक्षा कर रहीं थीं और ईश्वर के आश्रय में थीं। चेतन ब्रह्म ने जड़ प्रकृति को लेकर इस समस्त संसार की रचना की। ध्यान रहे कि नई सृष्टि रचना में कोई भी वेद का ज्ञाता, ऋषि–मुनि, तपस्वी, योगी आदि नहीं था। जो पिछली सृष्टि में थे वे शरीर त्याग चुके थे। अत: नई सृष्टि में मनुष्यों को ज्ञान देने वाला, कोई भी ऋषि–मुनि, महापुरुष आदि नहीं था।

जैसा ऊपर कहा कि जब तक मनुष्य को कोई ज्ञान देने वाला नहीं होगा तब तक मनुष्य को

ज्ञान हो ही नहीं सकता। उदाहरणार्थ—वर्तमान में भी किसी नवजात शिशु को यदि एकान्त में रखा जाए और उसे भोजन, पानी, स्वास्थ्य सम्बन्धी आदि सब सुविधाएँ दी जाएँ तो वह नवजात शिशु यदि ***50*** वर्ष का भी हो जाएगा तब भी उसे संसार के किसी भी पदार्थ का ज्ञान नहीं होगा। ना वो बोल सकेगा। क्योंकि माता—पिता अथवा किसी अन्य ने उसे संसार के विषय में, बोलने आदि के विषय में, कुछ ज्ञान नहीं दिया। तब यह कैसे सम्भव है कि जब सृष्टि रचना के समय, जैसा कि ऊपर कहा, कोई ज्ञान देने वाला था ही नहीं, तब मनुष्यों को ज्ञान कैसे होता?

तब ज्ञान में पारंगत, जो इस सृष्टि से पहले, पिछली सृष्टि में वह ऋषि—मुनि, जो महा—तपस्वी थे परंतु उन्हें समाधि अवस्था में ईश्वर का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ था, ऐसे चार तपस्वियों को परमेश्वर चुनता है और नई सृष्टि में उन्हें मनुष्य का शरीर देता है। किसी भी अन्य ज्ञानी के ना होने के कारण, अनन्त ज्ञान को धारण करने वाले, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर, अपनी सामर्थ्य से उन, पिछली सृष्टि के चार तपस्वियों को एक—एक वेद का ज्ञान, उनके हृदय में प्रकट करते हैं। वेदानुसार ***(यजुर्वेद मन्त्र 40/8)*** ईश्वर ***''अकायम्'' अर्थात् शरीर रहित है—निराकार है। इसलिए ईश्वर ने चारों वेदों का यह ज्ञान उन तपस्वियों को ऋषियों को, बिना बोले और बिना पढ़े—लिखे दिया। अत: चारों वेद पुस्तक के रूप में कदापि नहीं हैं।*** अनादिकाल से मुँह—जुबानी ही ऋषियों द्वारा याद किए जाते रहे हैं। व्यास मुनि जी, जिनको गुरु—परंपरा से चारों वेद मुँह—जुबानी याद थे, ने मनुष्यों के कल्याणार्थ, चारों वेदों

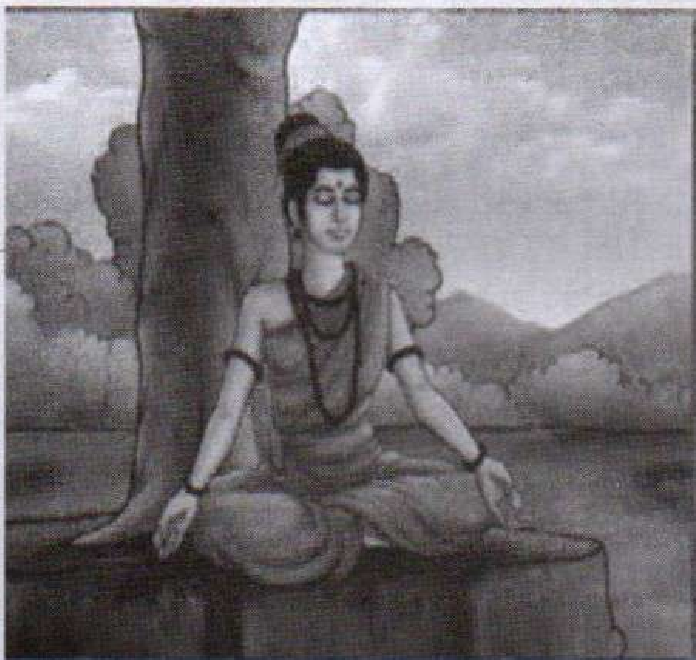

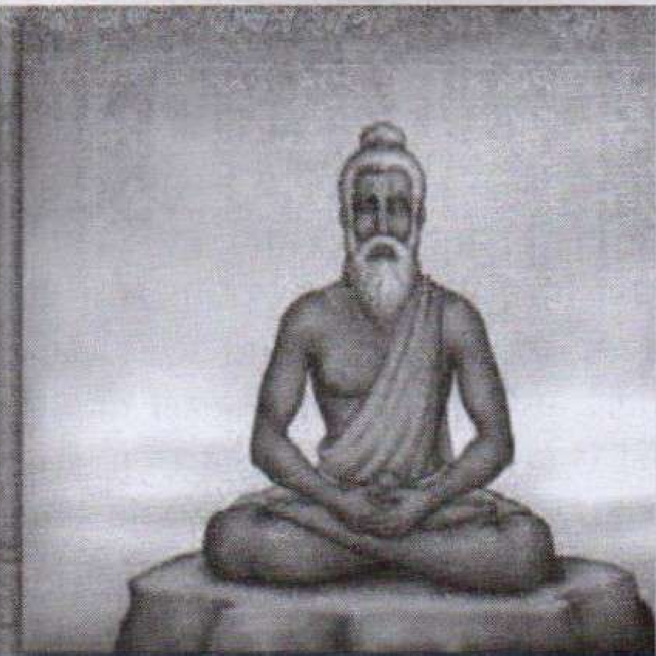

को भोज–पत्र पर लिख दिया। जिस दिन, यह वेद लिखने का पुण्यवान् कार्य पूर्ण हुआ, उस दिन को ही व्यास–पूजा का दिन कहते हैं और वेदों के ज्ञाता इस दिन को बहुत हर्षोल्लास से मनाते हैं और व्यास मुनि जी को याद करके उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं। अतः वेद ईश्वरीय वाणी हैं। इस सत्य का प्रमाण ***ऋग्वेद मन्त्र 10/109/1*** में इस प्रकार है– कि ***सृष्टि के आरम्भ में प्रथम उत्पन्न अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा; ऋषियों के हृदय में, अपनी सामर्थ्य से परमेश्वर ने, क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद उत्पन्न किए।*** वेदों में अनन्त ज्ञान है। वेद अज्ञान, पाप से बचने का उपाय बताते हैं। वेद सुनकर ही समझ आता है कि ईश्वर क्या है, उसकी भक्ति का स्वरूप क्या है, आध्यात्मिकवाद क्या है, भौतिकवाद क्या है, इत्यादि। अनन्त ज्ञान से भरपूर चारों वेद जब ऋषियों के हृदय में प्रकट हुए तब अगले मन्त्र दो में कहा कि चारों ऋषियों की सेवा करके ब्रह्मा नामक ब्रह्मचारी चारों वेदों का ज्ञान, उन चार ऋषियों से प्राप्त कर लेता है।

अगले मन्त्र चार में उपदेश है कि चारों वेदों की विद्या, इन्द्रिय–संयम करने वाले जिज्ञासु को, परंपरागत गुरु से प्राप्त होती है। जो जिज्ञासु विद्वान् हैं, और साधारण मनुष्य हैं, वे वेद वाणी को अपने आचार्य से ग्रहण करके अन्य को देते रहे हैं, वर्तमान में भी दे रहे हैं। यही परंपरा मनुष्य के जीवन को सफल बनाने के लिए परमावश्यक है। मनुष्य का जन्म भी इसीलिए हुआ है।

ऋग्वेद मंत्र 10/181/1 का भाव भी यही है कि परमेश्वर से उत्पन्न वेदवाणी, जो अनन्त ज्ञान एवं विज्ञानों का भण्डार है, उसे परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा ऋषियों के हृदय में अपनी सामर्थ्य से प्रकट करता है। यह ऋषि वेदवाणी के प्रथम गुरु हुए हैं एवं ***योग शास्त्र सूत्र 1/26*** के अनुसार भी इन चार ऋषियों के गुरु स्वयं परमेश्वर हुए हैं। ब्रह्मा नामक ब्रह्मचारी ने चारों ऋषियों की सेवा

करके चारों वेदों का ज्ञान अपने हृदय में धारण किया और ब्रह्मा नामक ब्रह्मचारी अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा, इन चार ऋषियों का शिष्य हुआ। ब्रह्मा से ही गुरु–शिष्य परंपरा प्रारम्भ हुई, जो आज तक चली आ रही है।

अतः हम मनुष्य जन स्वयं परमेश्वर के विषय में कुछ नहीं कह सकते। जब तक, जैसा ऊपर कहा है कि ईश्वर जो शरीर रहित है और ***यजुर्वेद मन्त्र 40/8*** के अनुसार भी ईश्वर ***"अकायम्"*** अर्थात् शरीर रहित है, उस ईश्वर को जानने के लिए और उसकी भक्ति को जानने के लिए हमें केवल विद्वानों के आश्रय में रहकर वेद सुनने, समझने और वेद विद्या को जानकर अपने आचरण में लाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं है जिससे ईश्वर और उसकी भक्ति को जाना जाए।

यदि हम ***यजुर्वेद मन्त्र 31/18*** के ऊपर दृष्टि डालें तो उसमें उपदेश है कि यदि जिज्ञासु अज्ञान और अन्धकार से पृथक् उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वर को वेदानुसार ब्रह्मचर्य धारण करके और तप करके जान लेता है, तब उस परमेश्वर को जानकर ही वह (हम सब) दुःखदायक मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेता है। इससे अलग मोक्ष प्राप्ति का कोई भी मार्ग नहीं है एवं वेद में वर्णित ईश्वर को जाने बिना कोई भी मनुष्य ज्ञानी नहीं हो सकता और ना मोक्ष का सुख अनुभव कर सकता। अतः ईश्वर एवं ईश्वर की भक्ति को जानने के लिए वेदों और अष्टाँग योग विद्या को ज्ञाता, तपस्वी के आश्रय में रहकर (जैसा कि ऊपर वेदों में कहा कि अनादि और आदिकाल से चली आई गुरु–परंपरा द्वारा ज्ञान प्राप्त करना परमावश्यक है।) वेदों में वर्णित ज्ञान सुनना, समझना और आचरण में लाना परमावश्यक है। वेदों में ईश्वर ने यही मार्ग समझाया है, इसके अतिरिक्त ईश्वर ने कहीं अन्य, कोई भी ज्ञान नहीं दिया है। अतः हम सब मनुष्यों का, जैसा कि अनादि एवं आदि काल से होता चला आया है, विद्वानों से वेदों का ज्ञान प्राप्त करना परमावश्यक है।

VIV

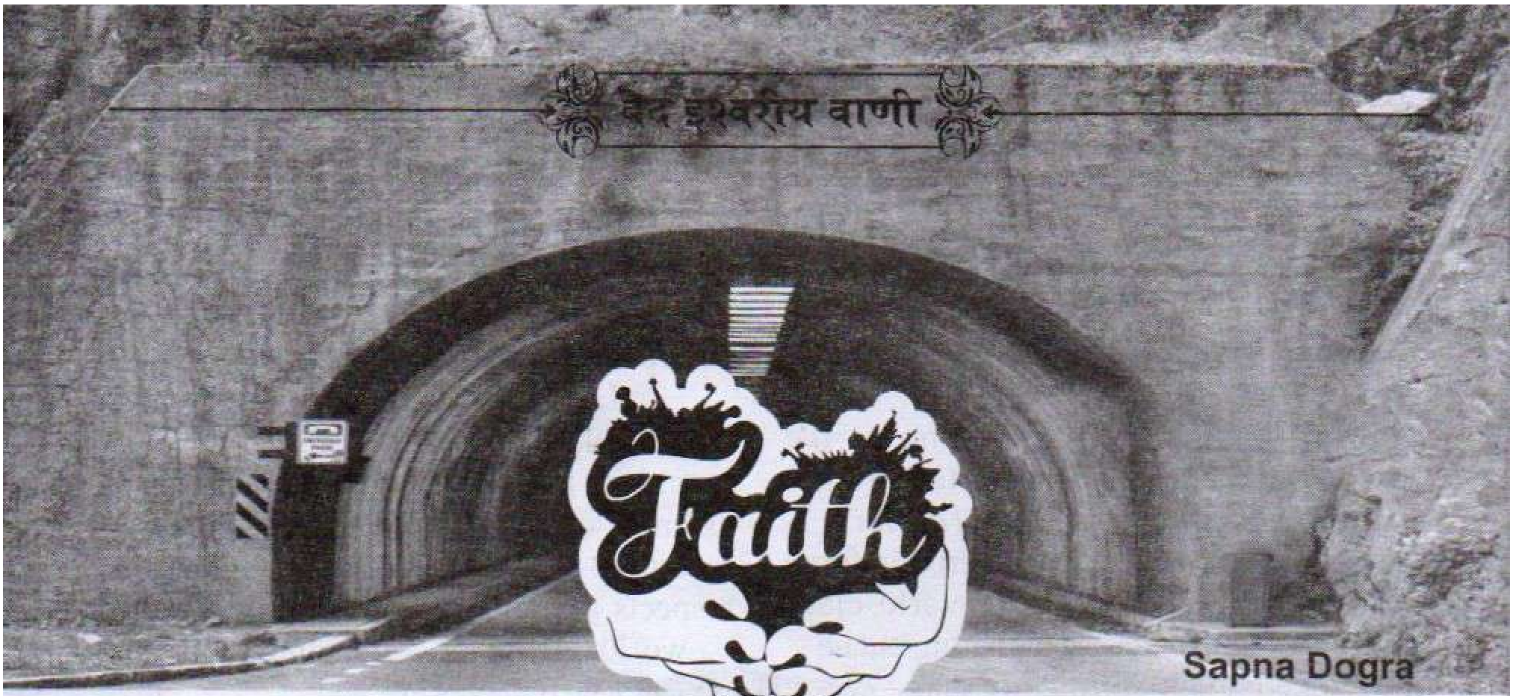

Sapna Dogra

Will Move Mountains

The world watched with bated breath as the ***rescue operation to save the 41 workers*** trapped in the Silkyara tunnel in Uttarakhand for 17 days unfolded.

It was a moment of immense relief and joy when all the workers emerged from the tunnel unharmed on November 28, 2023. This was one of the most challenging and complex rescue missions ever, as it involved technical, logistical, and environmental hurdles.

Indian and international teams worked relentlessly day and night to free the 41 people from the collapsed tunnel. Everyone empathized with the plight of the trapped men and prayed for their safe and quick rescue. And when they were finally rescued, it was nothing short of a miracle. The prayers of millions had made it happen.

While the local people blamed the collapse of a part of the under-construction tunnel on the anger of their deity, the experts cited that the tunnel was being built in a geological fault and safety measures were ignored.

The cause of the tunnel collapse is for the experts to determine, but the whole operation reaffirmed the faith in God to overcome any situation.

The spirituality of the locals reflects their trust in the power of God and the importance of respecting nature. It also shows their compassion and solidarity with the trapped workers and their families, who were waiting anxiously for the news of their fate.

The prayers of the locals might have had a positive impact on the morale and motivation of the rescue team, as well as the survival and well-being of the workers. ***Even though human beings have explored outer space, there are still so many things that are beyond the scope of***

human intelligence. These aspects are controlled by the only one who is the most powerful, omniscient, and omnipresent - God. And with faith, we can feel Him and see His miracles.

A man who was leading in the rescue operation - the international tunneling expert ***Arnold Dix*** - demonstrated how faith is the driving force of this world. Dix had world-class machinery and expertise with him, but he also talked about spirituality and faith. He viewed nature with immense reverence and respect. He believed in a divine power that could fix anything.

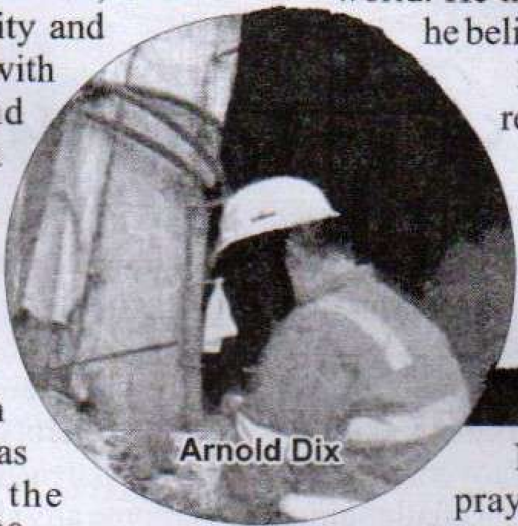
Arnold Dix

In a video that went viral on social media, Dix was seen addressing the mountain where the tunnel was built as "ma'am". He called the situation 'an epic from 3,000 years ago'. He said, "Here's a mountain and she takes 41 young and good men who have not done anything wrong. She gives them protection and lets us put some emergency pipes for food, water, and more. She keeps them warm. She doesn't let them see the sun but keeps them warm. She lets them have food medicine and more. And we people are asking her, that please give us our children back. And when we say 'ma'am' give us, she is like maybe..."

This is a beautiful example of a man's faith in the Almighty.

Dix also said that - "When I go to the tunnel, I do a small prayer because I need help. Till the time she (mountain) doesn't want to release them (41 workers) I cannot do anything."

Later Dix said as someone who works underground, he was completely humbled by the universe. Dix is an example of what the world needs more of today. He has a scientific mind, but he also respects a higher power that governs this world. He never doubts the power that he believes in.

It was also faith in their respective God that kept the 41 workers going while trapped underground. One could rightly say that mountains are moved by faith.

Further insight by the Editor

No doubt, that based on the prayers of several spiritual minded persons, by the grace of Almighty God, 41 workers were rescued safely from Silkyara tunnel in Uttarakhand after 17 days.

Everybody thanked the rescue team for their relentless efforts to rescue the workers. May God bless the rescue team along with their families for a long, happy life. God also favoured, as the head of the rescue team was God fearing person, who also used to pray for the success of the operation.

So, I also salute to Mr. dix for his relentless efforts in the matter.

VIV

जुआ

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

यह एक नियम भी है और स्वाभाविक भी है कि ज्ञान देने वाला जब किसी को ज्ञान देता है तब ही ज्ञान लेने वाले को ज्ञान होता है। उदाहरणार्थ नवजात शिशु को यदि माता–पिता अथवा अन्य कोई विद्वान् बोलना न सिखाए तो उस बालक को कदापि बोलना नहीं आएगा। अतः यह सिद्ध है और अनादि सत्य है कि ज्ञान दिए बिना ज्ञान नहीं होता। आज भारत वर्ष का यह दुर्भाग्य है कि हम ईश्वर से उत्पन्न चारों वेद जिसका ज्ञान अनादि काल से प्रजा के लिए यथावत् ईश्वर देता आ रहा है उस वेद ज्ञान को भारत–वर्ष की जनता ने प्रायः भुला दिया है और अपनी इच्छानुसार नए–नए भक्ति के मार्ग बना लिए हैं। इस पर परमेश्वर ***ऋग्वेद मंत्र 10/125/4*** में मनुष्यों को चेतावनी देता है कि मनुष्य ***(मम) मेरा (सः अन्नम् अत्ति)*** वह अन्न खाता है ***(यः विपश्यति)*** मेरी आँखों से देखता है ***(यः प्राणिति)*** मेरे द्वारा दिए प्राणों पर जीवित रहता है ***(यः इम् उक्तम् शृणोति)*** मेरे दिए कानों से कहे हुए को सुनता है परंतु ***(माम् अमन्तवः)*** मुझे नहीं मानता ***(ते)*** वे ***(उपक्षियन्ति)*** नाश को प्राप्त होते हैं ***(सत्य वचनम् वदामि)*** सत्य वचन कहता हूँ।

हमें इस वेद के सूक्त के गहन मनन चिन्तन के द्वारा यह समझना पड़ेगा कि ईश्वर सत्य वचन कह रहा है कि जो मनुष्य वेदों में वर्णित परमेश्वर को, जो हमें पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय, मन–बुद्धि, अन्न आदि देता

है, त्याग कर किसी अन्य परमेश्वर की पूजा करते हैं तो वे मनुष्य नाश को प्राप्त होते हैं।

आज पृथिवी पर प्रलय की सी जो अवस्था है सम्भवत: वह ईश्वर से उत्पन्न वेद के त्याग के कारण ही है, ऐसा उक्त मन्त्र में भी कह दिया गया है। उदाहरणार्थ वर्तमान काल में अधिकतर प्राणी जुआ खेलकर अपना जीवन कष्ट में, दु:ख में डाल देते हैं और परिवार बिलखता रहता है। आज अधिकतर प्राणी शराब, कई प्रकार के नशे, सिग्रेट आदि का सेवन करते हैं, जो कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्राणघातक है, परंतु अधिकतर मनुष्य जुआ आदि खेलने की हानि जो है, जिसका वर्णन ईश्वरीय वाणी ***ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 34 में है,*** उसे विद्वानों से नहीं सुनते जिस कारण मायावश वह निन्दनीय कर्मों में फंसकर जीवन नष्ट कर लेते हैं। ईश्वर का उपदेश है कि प्रत्येक मनुष्य यज्ञ में बैठकर वेदवाणी सुने ***(देखें सामवेद मंत्र 50)।***

वेद कहते हैं कि जुआ एक ऐसा दुष्कर्म है जो मनुष्य को अमीर से अति गरीब बनाकर परिवारों को नष्ट कर देता है। फ्राँस के एक डॉक्टर के जुए के विषय में ये विचार हैं, ***"I have several times had the mortification of seeing patients sink into graves who would have recovered had they not being enticed into one of the most pernicious form of all excitements gambling.... The removal of this Evil from the beautiful shores of the Riviera would certainly be a benefit to our fellow-men and advance our saviour's Kingdom"***

अर्थात् मुझे अनेक बार ऐसे रोगियों को देखकर आत्मग्लानि होती थी जो स्वयं ही अपनी कब्र खोदकर उसमें धंसने को तत्पर थे, जो शायद अपने सामान्य जीवन में वापिस आ जाते अगर वे जानलेवा जुए की बीमारी से ग्रसित न होते... इस बुरी आदत से **Riviera (Mediterranean coast of France)** को बचाना मनुष्यता के लिए कल्याणकारी होगा।

यदि गंभीरता से विचार किया जाए तो ताश के पत्तों से खेलना अथवा ऐसा जुआ जिसमें पाशे फैंके जाते हैं, यही जुआ नहीं है। वर्तमान में जुए के सूक्ष्म रूप को भी हमें समझना चाहिए जैसे शर्त लगाना, शराब–सीग्रेट पीकर ज़िंदगी को दाँव पर लगाना आदि।

40–50 साल पुरानी बात है। मैं करोल बाग की सड़क पर पैदल जा रहा था। वहाँ एक मंडली बैठी हुई थी वो बोली कि

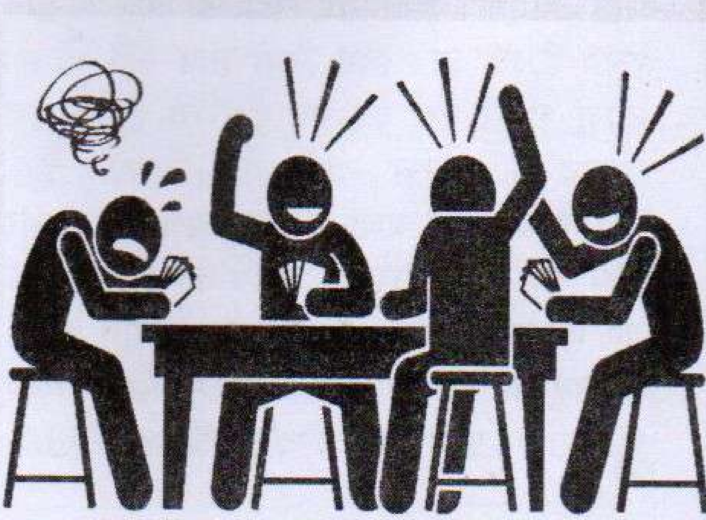

धन को दोगुना कर लो। उन्होंने ऐसा खेल रचा कि मेरी जेब में जो पैसे थे वो भी लूट लिए। ये सब जुए ही तो हैं। ***वेद का ज्ञान न होने के कारण हम ब्रह्मचर्य– जो एक दुःख निवारक मणि है, उसका पालन नहीं कर पाते अतः अपने से विपरीत (नर–नारी) शारीरिक विषय–विकार की वृत्ति–आकर्षण के कारण शारीरिक विषय विकार को प्रेम समझ बैठते हैं*** और अखबारों में पढ़ने या दूरदर्शन पर देखने–सुनने पर हमें ज्ञात होता है कि किसी 'केस' में कन्या की हत्या हो जाती है या लड़के की हत्या कर दी जाती है अथवा लड़की बुरे कर्मों में फंसा ली जाती है, इत्यादि। भाव यह है कि ज्ञान न होने के कारण लड़का–लड़की अपने जीवन को जुए पर चढ़ा देते हैं। ***अतः अच्छे–बुरे कर्मों का ज्ञान लेने के लिए हमें विद्वान् से वेद सुनने चाहिए। ऐसा वेदों में उपदेश है।*** घोड़े की दौड़ पर पैसा लगाना ये भी जुआ है।

लोभ–लालच में फंसकर किसी अपराधिक कार्य में पैसा लगाना अथवा जीवन को अपराध के हवाले कर देना, ये भी जुआ है। भाव है कि ये दुष्ट कर्म जुए के ही अनेक रूप हैं जिनसे हमें बचने की आवश्यकता है अन्यथा जीवन को जुए के हवाले कर देना स्वयं की आत्महत्या करने जैसा अपराध ही है।

रावण माता सीता को छल–कपट से उठाकर ले गया था। उसने भी लोभ–लालच, राग–द्वेष में अपनी बहन का बदला लेने के जोश में ***अपने जीवन के साथ एक जुआ ही तो खेला था जिसमें रावण के सभी पुत्र मारे गए, रावण भी मारा गया और सोने की लंका शीघ्र ही नष्ट हो गई।*** धृतराष्ट्र ने पाँच पाण्डवों, जो उसके भतीजे थे, उनसे उनका राज्य छीनने का एक जुआ ही तो खेला था जिसमें उसके सारे बेटे मारे गए थे और पाण्डवों ने युद्ध जीतकर अपना राज्य वापिस ले लिया था।

यहाँ मुख्य ज्ञान यही है कि राग–द्वेष, लोभ–लालच में फंसकर वेद–विरुद्ध जो कार्य होता है वह एक जुए के समान ही होता है और जो इस जुए में फँस जाता है, उसके जीवन का पतन भी शीघ्र होता है और जब तक जीता रहता है, वह दुःखी रहता है, अतः हमें किसी भी प्रकार का जुआ नहीं खेलना चाहिए। ***आओ देखें कि परमेश्वर ने जुए के विषय में क्या कहा है:–***

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 34 में ईश्वर ने जो जुए के प्रति मनुष्य जाति को सतर्क किया है, वह निम्नलिखित है

1. जुआ खेलने वाले जुआरी को जुआ खेलने में ऐसा आनन्द आता है- खुशी मिलती है मानो उसे परमेश्वर के दर्शन का आनन्द हो रहा है। अतः जुआरी जुआ नहीं छोड़ता। स्वयं और परिवार को बर्बाद कर देता है।
2. जुआरी अपनी ऐसी पत्नी को, जो जुआरी को कभी दुःख नहीं देती, उसका अनादर नहीं करती, अतिथि सत्कार करती है, परंतु एकमात्र जुए के दोष के कारण जुआरी ऐसी गुणवान् पत्नी को भी अपने से अलग कर बैठता है। जुआरी का उसकी सास कभी आदर नहीं करती। पत्नी उसे नहीं चाहती, उससे अलग हो जाती है। जुआरी का कोई साथ नहीं देता, कोई उसकी सहायता नहीं करता। उसे कोई सुख प्राप्त नहीं होता। जिसको भी जुए की बुरी आदत लग जाती है तो वह चाहता है कि धन कहीं से भी आए, चाहे चोरी-डकैती से ही आए।
3. वेद कहता है कि जुआरी की पत्नी को अन्य जुआरी सब ओर से वस्त्र-आभूषण आदि पकड़ते हुए उसे दूषित करते हैं। माता-पिता, भाई आदि कोई भी जुआरी का साथ नहीं देते। विपरीत में ऐसा कहते हैं कि हम नहीं जानते यह कौन है?राजकर्मचारियों को भी माता-पिता, भाई आदि कह देते हैं कि इसे बांधकर ले जाओ। और कहीं-कहीं तो जुआरी दुःखी होकर अपने जीवन को समाप्त भी कर लेता है।
4. जुआरी को जुए से राग है। वह जुआरियों में जुआ खेलने इस भावना से जाता है कि वह जीतकर ही आएगा। इसी लालच में उसका सब कुछ बिक जाता है और वह बर्बाद हो जाता है।
5. यदि जुआरी कभी जीतता भी है तो वेद कहते हैं कि वह जीत उसके लिए ऐसी है जो उसे पीड़ा देती है, जैसे मिठाई में किसी ने विष दे दिया हो और उसकी मृत्यु हो जाती है- ऐसी है जुए की बीमारी, इससे बचना चाहिए।

जुए में युधिष्ठिर भी अपनी पत्नी को हार गया थे। यहाँ यह कहना आवश्यक है कि युधिष्ठिर जुआ खेलने में प्रवीण नहीं थे और न कभी जुआ खेलना चाहते थे। वास्तविकता जो व्यास मुनि ने महाभारत ग्रन्थ में कही है वह यह है कि पाँचों पाण्डव सभा से उठकर चले गए थे। परंतु धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने अपने पिता को कहा कि आप युधिष्ठिर को आज्ञा दें कि वह जुआ खेले। उस समय का नियम था कि राजा की किसी भी आज्ञा का उल्लंघन कोई भी नहीं कर सकता था। अतः जब पाण्डवों को सूचना मिली की वह दुर्योधन के साथ जुआ खेलें तब विवश होकर पाँचों पाण्डवों को वापिस सभा में आना पड़ा और जुआ खेलना पड़ा। इस सच्चाई को आज तक छुपाया जा रहा है जिससे हमारी संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा है।

वेदों में तो जुए के विषय में और भी बहुत कहा है, यहाँ लेख बड़ा होने के भय से इस प्रसंग को यहीं विराम देते हैं। परंतु इतना अवश्य कहेंगे कि ईश्वर ने कहा कि जुआ खेलने वाले को ऐसा आनन्द आता है कि मानो उसे ईश्वर के दर्शन का आनन्द आ रहा हो। ऐसी अवस्था को ***योग–शास्त्र सूत्र 2/7*** में राग कहा है जो कि एक क्लेश है– दुःख है। राग का अर्थ है– सुखानुशयी रागः। अर्थात् जिस कर्म को करने से इन्द्रियों का नाशवान् सुख मिलता है और मन बार–बार

उस सुख को भोगने की इच्छा करता है उसे राग कहते हैं। जैसे किसी को शराब पीने में आनन्द आने लगा है अतः वह बार–बार शराब पीता है, कोई इतनी भी पी लेता है कि वो मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। और कोई–कोई शराब पीकर अपराधिक कर्म कर बैठता है। इसी प्रकार जुआरी जुआ खेलकर अपने जीवन को नष्ट कर लेता है। जुए से प्रत्येक मनुष्य को बचना चाहिए यह वेदों में ईश्वर की आज्ञा है।

याद रहे कि परमेश्वर ने हमें यह उत्तम मनुष्य का शरीर जुए आदि व्यसन और पाप कर्म करने के लिए कदापि नहीं दिया है। परंतु मनुष्य को स्वतंत्र किया है कि वह पाप कर्म करे या शुभ कर्म करे, इसके लिए वह स्वतंत्र है। लेकिन शुभ कर्म करने का फल सुख प्राप्ति एवं ब्रह्म प्राप्ति है और यह फल स्वयं ईश्वर देता है। अतः हम ईश्वर से उत्पन्न वेदों को सुनें, जानें, समझें और ब्रह्माण्ड का सर्वश्रेष्ठ कर्म, जो यज्ञ है, उसे करते हुए ईश्वर को प्राप्त करें।

VIV

शुचि दक्षः

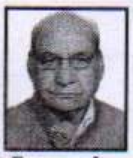

पी.आर.मेहरा
रिटायर्ड अध्यापक
(के.वी., योल)

"शुद्धम् अपापविद्धम्" (यजु. 40/8), ईश्वर के असंख्य गुणों में एक गुण यह है कि ईश्वर शुद्ध स्वरूप है, पाप से परे है अर्थात् उसे पाप छू तक नहीं सकता, वह परमेश्वर शुद्ध, बुद्ध, चेतन है। ईश्वर चाहता है कि मेरे साधक भी शुद्धता धारण करें, पवित्र बनें तभी उनकी बुद्धि मेरे द्वारा दिया गया वेद मन्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होगी। इसीलिए परमेश्वर प्रेरणादायक शब्दों द्वारा प्रत्येक शरीर धारी प्राणी को ***"शुचि दक्षः"*** होने की प्रेरणा दे रहा है।

लौकिक भाषा में ***"शुचि"*** शब्द का अर्थ ***"पवित्र होना"*** और ***"दक्षः"*** का ***"प्रवीण होने"*** से है अर्थात् जो नर–नारी पवित्रता प्राप्त करने में प्रवीण है, जिसने वेद मन्त्रों से "शुचि" यानि पवित्र होने से प्रेरणा युक्त विचारों को अपने अन्दर प्राप्त करने की दक्षता प्राप्त कर ली है या दक्षता प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहता है, वही साधक दु:खों से छुटकारा पा सकता है।

यजुर्वेद के अनगिनत मन्त्र अग्निहोत्र (हवन) एवम् यज्ञ करने की प्रेरणा दे रहे हैं क्योंकि हवन पवित्रता फैलाता है। ***"वसोः पवित्रम् असि"*** (यजुर्वेद मन्त्र 1/2), इस मन्त्र में ईश्वर उपदेश करते हैं कि ***"वसोः"*** यानि यज्ञ तीनों लोकों में पवित्रता फैलाता है अर्थात् ईश्वर सभी प्राणियों को नित्य यज्ञ एवं अग्निहोत्र करने की प्रेरणा दे रहा है। ***अतः पवित्र होने में दक्ष होने के लिए प्रत्येक नर–नारी कभी भी यज्ञ एवं अग्निहोत्र का त्याग ना करें।*** परोक्ष रूप में ईश्वर संकेत दे रहे हैं कि जिस स्थान पर, घर में, यज्ञ शाला में अग्निहोत्र एवम् यज्ञ होता है, वह स्थान हर तरह से 'शुचि' यानि पवित्र होना चाहिए। नित्य सफाई होनी चाहिए क्योंकि ईश्वर वेदों में बता रहे हैं कि वह स्थान, उसमें प्रयोग में आने वाले हवन कुण्ड, चम्मच,

घी, हवन सामग्री एवं समिधाएँ आदि सभी ब्रह्म हो जाती हैं। यहाँ तक की मोक्ष प्राप्त जीवात्माएँ उस पवित्र यज्ञशाला में, जहाँ पर ब्रह्म ऋषि द्वारा यज्ञ हो रहा होता है, यजमान को आशीर्वाद देने के लिए आकर वहाँ ***'सींदत'*** बैठ जाती हैं। यज्ञ में प्रज्वलित आह्वानी अग्नि उन मोक्ष प्राप्त जीवात्माओं का आह्वान करती है।

हर नर–नारी का यह कर्तव्य है कि अग्निहोत्र एवं यज्ञ में प्रयोग होने वाले, जैसे आचमन के बर्तन, चादरें, दरियाँ, घी के बर्तन, प्रसाद एवं समिधाएँ आदि शुद्ध एवं पवित्र होने चाहिए। यज्ञ में बैठे हुए सभी साधकों का तथा यजमान के मन, बुद्धि में पवित्र भाव का होना भी अति आवश्यक हो जाता है। तभी इस प्रकार से नित्य किया जाने वाला अग्निहोत्र एवम् यज्ञ सर्वत्र पवित्रता फैलाएगा।

*अब प्रश्न यह उठता है कि **''शुचि दक्षः''** अर्थात् पवित्रता में प्रवीण होने के लिए साधक को किन–किन साधनों की ज़रूरत है?*

1. नर–नारी के अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि में पवित्रता का भाव होना चाहिए।
2. नित्य स्नान एवं स्वच्छ वस्त्रों का धारण करना, आँख, नाक, कान, इन्द्रियाँ स्वच्छ रखना।
3. साधक को साधना, तप, स्वाध्याय के अटूट अभ्यास द्वारा अन्दर छुपकर बैठे शत्रु–काम, क्रोध, लोभ–मोह आदि को जड़ से खत्म करना चाहिए।
4. नित्य अग्निहोत्र करना, यज्ञ करना आदि।

मनुष्य देह जब पूर्ण रूप से पवित्र होगी तभी जीव का स्वाध्याय, एकाग्र–चित्त होकर नित्य अग्निहोत्र एवं यज्ञ करना, नाम–जाप, आसन, प्राणायाम का अभ्यास सरल और स्वाभाविक होता जाएगा तथा ईश्वर एवं गुरु पर अटूट श्रद्धा होने लगेगी।

जिसके मन का भाव सदैव पवित्र एवं सच्चा होता है, उसके द्वारा किया गया प्रत्येक कर्म भी अच्छा ही होगा। यदि साधक का मन चंचल है, अशान्त है, तो उसका मन अशुद्ध होने के कारण कभी भी साधना, तप, स्वाध्याय इत्यादि में नहीं लग पाएगा। इसलिए हमारे ***श्रद्धेय स्वामी राम स्वरूप जी,*** अपने दैनिक प्रवचनों में बार–बार मन की वृत्ति के बारे में सचेत करते रहते हैं। यदि मन पवित्र है, शुचि– दक्ष है तो जीव के द्वारा किए गए सभी कर्म स्वयं ही पवित्रता की भावन से ओत–प्रोत होकर सदैव पवित्र ही होंगें।

संपादक के विचार

मनु स्मृति श्लोक 5/105 में मनु भगवान् ने उपदेश किया है कि ***ज्ञान, तप, अग्नि, आहार, मिट्टी, मन, लेप करना, वायु, कर्म, सूर्य और काल; यह प्राणियों की शुद्धि करने वाले पदार्थ हैं।***

वस्तुत: जो धर्म अर्थात् वेदानुसार कर्तव्य–कर्म करने से पदार्थों का संचय करना है वही सब पवित्रताओं में उत्तम पवित्रता है। अर्थात् जो अन्याय से किसी पदार्थ का ग्रहण नहीं करता वही पवित्र है। किंतु जल, मिट्टी आदि से जो पवित्रता होती है, वह धर्म के समान उत्तम नहीं होती। ऐसा मनु भगवान् का उपदेश है। अत: मनुष्य सदा वेदानुसार शुभ कर्तव्य–कर्म करता हुआ पदार्थों, धन आदि का प्रयोग करे। चोरी आदि अशुभ कर्मों द्वारा एकत्रित पदार्थ सुख–दायक नहीं होते। पुन: क्षमा द्वारा वेद विद्या आदि शुभ गुणों के दान से ब्रह्मचर्य तथा वेदों पर आधारित सत्य भाषण आदि से विद्वान् शुद्ध होते हैं।

पुन: मनु भगवान् उपदेश करते हैं कि जल से शरीर और सत्य आचरण से मन शुद्ध होता है। ***अत: नित्य स्नान और वेदों के अनुसार सत्याचरण, सत्य भाषण करना शुद्धिकरण के लिए आवश्यक है।*** और वेद ज्ञान प्राप्त करके बुद्धि शुद्ध होती है। अत: वेदाध्ययन एवं वेदों में दिए गए उपदेशों पर आचरण बुद्धि शुद्ध करने के लिए परमावश्यक है। केवल रट कर भाषण आदि देने से पाप–वृत्ति बढ़ती है।

शुद्ध बुद्धि से शुद्ध कर्म होते हैं जो समाज के लिए हितकारी हैं। अशुद्ध बुद्धि से भ्रष्ट कर्म होते हैं जो समाज के लिए दु:ख दायी होते हैं। ***इसलिए जीवन में जितना भी अधिक से अधिक वैदिक ज्ञान हम प्राप्त करेंगे उतना ही हमारी बुद्धि शुद्ध होकर हमारा एवं समाज का कल्याण करने में समर्थ होगी।*** वेद ज्ञान अनन्त विद्याओं का भण्डार है और सृष्टि रचना के आरम्भ में ईश्वर से उत्पन्न होकर चार ऋषियों के हृदय में प्रकट होता है। सब

विद्याओं का शुद्धता का, सुख–शांति का, निरोगता का, दीर्घायु का मनुष्य के लिए हित करने वाला धर्मानुसार सब सुखों को प्राप्त करने का केवल एक ही माध्यम है और वह है ईश्वर से उत्पन्न वेदों का ज्ञान, जो अनन्त विद्याओं का भण्डार है और सृष्टि रचयिता परमेश्वर से उत्पन्न ज्ञान है, किसी मनुष्य आदि द्वारा दिया गया ज्ञान नहीं है। हमें वातावरण को शुद्ध रखना है, शरीर को शुद्ध रखना है, मन और बुद्धि को शुद्ध रखना है क्योंकि ईश्वर को शुद्धता प्रिय है और शुद्धता से हमने परमेश्वर को प्रसन्न रखना है। VTV

विद्वानों के संग से जाना कि सर्वश्रेष्ठ कर्म क्या है

अंजना दीवान (इंडोनेशिया)

ओ३म् इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागम्
प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा वस्तेनऽईशत माघशंसो
ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि स्वाहा
(यजुर्वेद मंत्र 1/1)

यजुर्वेद के पहले ही मंत्र में हम ईश्वर से कितनी सुन्दर प्रार्थना कर रहे हैं ***(इषे त्वा)*** हे प्रभु हम अन्न इत्यादि के लिए तथा ***(ऊर्जे त्वा)*** शारीरिक तथा आत्मिक बल के लिए आप की शरण को प्राप्त हों। ***(सविता)*** तीनों लोकों को रचने वाला ***(देवः)*** सब पदार्थों को देने वाला दाता ***(वः)*** हमारी ***(वायवः स्थः)*** इन्द्रियों ***{पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ, पाँच कर्म इन्द्रियाँ}*** मन, बुद्धि और प्राणों को ***(श्रेष्ठतमाय कर्मणे)*** यज्ञ रूपी श्रेष्ठ कर्मों में ***(प्रार्पयतु)*** लगाए रखें। ***(प्रजावतीः)*** हमारे समाज में ***(अयक्ष्मा)*** क्षय जैसे रोग ***(अनमीवाः)*** संक्रामक रोग ***(अघ्न्याः)*** पापी ***(स्तेनः)*** चोर इत्यादि ***(मा ईशत)*** उत्पन्न न होवें। ***(मा अघशंसः ईशत)*** पाप की इच्छा करने वाले भी समाज में उत्पन्न न होवें। ***(अस्मिन् गोपतौ)*** इस सम्पूर्ण पृथिवी पर ***(बह्वीः)*** अति अधिक ***(ध्रुवाः)*** अटल सुख हो। ***(यजमानस्य)*** शुभ कर्म करने वाले यजमान के ***(पशून् पाहि)*** पशुओं तथा परिवार की रक्षा करो।

यजुर्वेद के इस पहले मंत्र को मैंने अपने आचार्य ***''योगाचार्य स्वामी राम स्वरूप जी''*** के मुख से असंख्य बार अर्थ सहित सुना है और नित्य सुबह–शाम के अग्निहोत्र में भी दोनों समय इस मंत्र का उच्चारण हम सब करते हैं। इस मंत्र में हम कितनी सुन्दर प्रार्थना कर रहे हैं कि हर कर्म हम सर्वशक्तिमान् ईश्वर के अधीन होकर करें। हमारे ऋषि–मुनि, तपस्वी, योगी–जन कितने महान् थे उन्होंने अष्टांग योग की कठोर साधना से ही यह जाना

''वायवस्थ वः श्रेष्ठतमाय कर्मणे''

ईश्वर हम सब मनुष्यों को पाँचों ज्ञान इन्द्रियाँ ***(आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा)*** पाँचों कर्म इन्द्रियाँ ***(हाथ, पाँव, मुँह, गुदा, उपस्थ)*** मन, बुद्धि और प्राणों को यज्ञ रूपी श्रेष्ठ कर्म में

लगाने की प्रेरणा दे रहा है। अब प्रश्न यह भी है कि क्या माता–पिता की सेवा, विद्यार्थी का मेहनत करके अच्छे अंक लाना और जीवन को सफल बनाना, मेहनत की कमाई करके परिवार की पालना करना, गृहस्थ के शुभ कार्य करना, किसान का मेहनत करके अच्छी फ़सल उगाना, दान करना इत्यादि क्या यह सब श्रेष्ठ कर्म नहीं हैं, जबकि हमारे ऋषि–मुनि, विद्वान्–जन तो यज्ञ को ही सर्वश्रेष्ठ कर्म कह रहे हैं। शुरू में जब हम भी ''योगाचार्य स्वामी राम स्वरूप जी'' के साथ जुड़े और उनके साथ यज्ञ में बैठने का जब भी हमें अवसर मिलता तो मन को बहुत अच्छा लगता था। स्वामी जी अक्सर वेदों से अनन्त ज्ञान यज्ञ में देते थे। लेकिन इस बात को समझने में कई साल लग गए कि यज्ञ ही संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है जबकि शब्दों से हम ने यह याद कर लिया था कि यज्ञ का अर्थ है देवपूजा, संगतिकरण और दान। इसका पहला कारण तो साफ़ था कि हमारी मन और बुद्धि में विवेक नहीं था अर्थात् अविद्या ग्रस्त थी। दूसरा कारण यह भी था कि संसार के अधिकतर लोग तो पता नहीं कौन–कौन सी पूजा कर रहे हैं और यज्ञ तो कोई बिरला ही कर रहा है।

मनुस्मृति श्लोक 5/109 में कहा ''बुद्धि ज्ञानेन शुद्धयति'' अर्थात् बुद्धि ज्ञान द्वारा ही शुद्ध होती है। ईश्वर और गुरु कृपा से जैसे–जैसे अधिक से अधिक यज्ञ जीवन में जुड़ने लगे, तो मन और बुद्धि पे पड़ा अविद्या, अंधविश्वास और अंधकार का पर्दा भी दूर होने लगा और आचार्य का दिया हुआ ज्ञान भी धीरे–धीरे बुद्धि में प्रवेश करने लगा, वेद मन्त्रों से प्यार होने लगा। यज्ञ का पहला नियम देव पूजा भी समझ में आने लगा। देवपूजा–माता–पिता, अतिथि, विद्वान् गुरु की तन–मन, धन, प्राण से सेवा करना अर्थात् माता–पिता की सेवा का कर्म तो यज्ञ से आया है।

आज अगर हम यह कहते हैं कि माता–पिता की सेवा करना परम धर्म/कर्म है तो ऋग्वेद में ईश्वर कहता है कि ज्ञान दिए बिना कभी ज्ञान नहीं होता। निश्चय ही ईश्वर का यह नियम/ज्ञान हमारे ऋषि–मुनियों ने ही यज्ञ में बताया है। अतिथि (एक वेद का ज्ञाता) और विद्वान् गुरु की सेवा का कर्म भी यज्ञ से ही आया है। चारों वेदों में विद्वान् गुरु की सेवा के अनेक मंत्र हैं।

यज्ञ के दूसरे नियम संगतिकरण से हमने जाना कि सिर्फ विद्वानों के संग से ही सत्य विद्या को जाना जाता है और उस को समझ करके ही शुभ कर्म किए जाते हैं अन्यथा हम अपनी मन और बुद्धि के आधार पर मनगढ़ंत कर्म तो कर सकते हैं लेकिन ईश्वर के बताए हुए नियमों को कभी नहीं जान सकते हैं। ईश्वर के नियम ***''त्रयं ब्रह्म सनातनं''*** ज्ञान, कर्म और उपासना इन तीनों विद्या का ज्ञान वेदों में दिया है और यही सुखी जीवन व्यतीत करने की नींव भी है। ईश्वर ने वेदों में हर एक पदार्थ और कर्म का ज्ञान दिया है और साथ में यह नियम भी बताया है कि विद्वानों की शरण में जाओ और उन की सेवा करके उनसे विद्या ग्रहण करो।

वेद ईश्वरीय वाणी

संपादक के विचार

यह जगत् ईश्वर ने प्रकृति को लेकर रचा है। अत: परमेश्वर ही जड़ जगत् एवं दूसरा चेतन जगत् है, जो जीवात्माएँ हैं; इन दोनों का स्वामी है। जगत् रचना के समय सभी प्राणी अज्ञानी होते हैं। तब परमेश्वर ही चार ऋषियों के हृदय में चारों वेदों का ज्ञान प्रकट करता है, जो ब्रह्मा के द्वारा समाज में पहुँचता है। इस ज्ञान का वर्णन ***ऋग्वेद मन्त्र 10/181/1, 2*** में परमेश्वर द्वारा उपदेश किया गया है। जब कोई जिज्ञासु वेद के ज्ञाता, आचार्य से वेदों का ज्ञान प्राप्त करता है, तब वह जिज्ञासु ही जानता है कि सब विद्या का दान, वेद के ज्ञाता, आचार्य ही करते हैं। उन्हीं से वेद विद्या को जाना जाता है। अंजना बेटी भी वर्षों से वेद ज्ञान सुन रही है और हमें प्रसन्नता है कि वह अपने, वेदों पर आधारित, लेख लिखती रहती है। यह उनका परोपकारिक कर्म सराहनीय है।

यजुर्वेद मन्त्र 1/1 में अति उत्तम उपदेश है कि परमेश्वर हमें प्रेरणा देते हैं कि हम विश्व के सर्वश्रेष्ठ कर्म, यज्ञ से जुड़े रहें, जो यज्ञ सब प्राणियों के उपकार के लिए, एक कर्तव्य–कर्म है। हम कर्तव्य से कभी पीछे ना हटें। नित्य अग्निहोत्र करते रहें। यह अग्निहोत्र स्वयं, परिवार एवं समस्त संसार का कल्याण करने वाला सर्वश्रेष्ठ शुभ कर्म है। यज्ञ करने से अन्न–धन, सुख, ऊर्जा, सब कुछ प्राप्त होता है और जीवन में सब तरह से उन्नति होती है। प्रजा में दु:ख का नाश होता है। संक्रामक रोगों का नाश होता है। पशुओं की रक्षा होती है। समाज में पाप और पापियों का नाश होता है। पापी और चोर समाज में हिंसा करने योग्य नहीं रहते, इत्यादि। समाज में सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। भाव यह है कि ***चारों वेदों में ईश्वर ने यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा है और मानव जाति को नित्य यज्ञ करने की/अग्निहोत्र करने की प्रेरणा दी है।*** मंत्र में ***''सविता''*** शब्द को लेकर ईश्वर ने ज्ञान दिया है कि ईश्वर सब जगत् को उत्पन्न करने वाला है और सब सुखों का दाता है। अत: ईश्वर को 'सविता' भी कहते हैं।

धीरे–धीरे जनता जानने लगी है कि चारों वेदों में जो अनन्त एवं अविनाशी ज्ञान है, वह ईश्वर से उत्पन्न है। ***अत: अब हमें पुन: विचार करना है कि हमें ईश्वरीय ज्ञान चाहिए, जो अविनाशी है एवं सब सुख देता हुआ ईश्वर तक को प्राप्त करा देता है अथवा विपरीत में क्या हमें ईश्वर का ज्ञान त्यागकर मनुष्यों द्वारा बनाए भक्ति के मार्ग पर चलना चाहिए जो ईश्वर के समान नहीं हैं, वेद–विरुद्ध हैं।***

VIV

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

परमेश्वर विद्वानों के निकट और अविद्वानों से दूर है

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।

(यजुर्वेद मन्त्र 40/5)

सामवेद मन्त्र 350 में ज्ञान दिया है कि परमेश्वर शुद्ध है। अतः शुद्ध मन और शुद्ध वेद–मन्त्रों से परमेश्वर की स्तुति करें। शुद्ध मन तब होता है जब जिज्ञासु वेदानुसार साधना करता है। उक्त ***यजुर्वेद मन्त्र 40/5*** में उपदेश है कि ***(तत्)*** वह ब्रह्म ***(एजति)*** चलता है (भाव यह है कि परमेश्वर कण–कण में वास करता है। अतः उसे चलने की आवश्यकता नहीं है। किंतु वेद ज्ञान के अभाव में अज्ञानी पुरुष ऐसा कह देते हैं कि परमेश्वर चलता है।)

(तत्) वह परमेश्वर ***(न)*** नहीं ***(एजति)*** चलता है (सर्वव्यापक होने के कारण, विश्व में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ परमेश्वर ना हो। अतः वेद के ज्ञाता समझते हैं कि परमेश्वर नहीं चलता।)

(तत्) वह परमेश्वर ***(दूरे)*** जो धर्मात्मा नहीं हैं, वेद के ज्ञाता, विद्वान् नहीं हैं, अष्टाँग योगी नहीं हैं; उनसे परमात्मा दूर है अर्थात् उनको प्राप्त नहीं होता। ***(तत्)*** वह परमात्मा ***(उ)*** निश्चय से ***(अन्तिके)*** धर्मात्मा, विद्वान् एवं योगियों के समीप है अर्थात् इनको प्राप्त है ***(तत्)*** वह परमात्मा ***(अस्य सर्वस्य)*** इस सब जगत् एवं जीवों के (अन्तः) अन्दर विराजमान है। ***(तत्)*** वह परमात्मा ***(उ)*** निश्चय से ***(अस्य)*** इस प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जगत् के ***(बहिः)*** बाहर भी विद्यमान है।

***शब्दार्थ*:–** वह ब्रह्म चलता है। भाव यह है कि परमेश्वर कण–कण में वास करता है। अत: उसे चलने की आवश्यकता नहीं है। किंतु वेद ज्ञान के अभाव में अज्ञानी पुरुष ऐसा कह देते हैं कि परमेश्वर चलता है। वह परमेश्वर नहीं चलता है। सर्वव्यापक होने के कारण, विश्व में ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ परमेश्वर ना हो। अत: वेद के ज्ञाता समझते हैं कि परमेश्वर नहीं चलता।

वह परमेश्वर, जो धर्मात्मा नहीं हैं, वेद के ज्ञाता–विद्वान् नहीं हैं, अष्टाँग योगी नहीं हैं; उनसे परमात्मा दूर है अर्थात् उनको प्राप्त नहीं होता। वह परमात्मा निश्चय से धर्मात्मा, विद्वान् एवं योगियों के समीप है अर्थात् इनको प्राप्त है। वह परमात्मा इस सब जगत् एवं जीवों के अन्दर विराजमान है। वह परमात्मा निश्चय से इस प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जगत् के बाहर भी विद्यमान है।

भावार्थ*:– *ऋग्वेद मन्त्र 1/22/3 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि ज्ञान दिए बिना कोई ज्ञान प्राप्त नहीं होता। जैसे नवजात शिशु को उसकी माता प्रेमपूर्वक बोलना सिखाती है तो बच्चे को धीरे–धीरे बोलने का ज्ञान प्राप्त होता है। यदि माता बच्चे को बोलना ना सिखाए और बच्चे का पालन–पोषण एकान्त जंगल में किया जाए तब बच्चा पचास वर्ष का भी हो जाएगा तब भी उसे बोलना नहीं आएगा क्योंकि माता ने या अन्य किसी रिश्तेदार आदि ने उसे बोलना नहीं सिखाया। इसी प्रकार प्रत्येक सृष्टि की रचना के आरम्भ में जब नर–नारी के जोड़े उत्पन्न होते हैं, उस समय उन्हें कोई भी ज्ञान नहीं होता। सब अज्ञानी होते हैं। तब परमेश्वर ने कृपा करके अपनी सामर्थ्य से चारों वेदों का ज्ञान चार ऋषियों के हृदय में प्रकट किया। तब वे ज्ञानी हुए। ऋषियों ने वेद ज्ञान ब्रह्मा को दिया। ब्रह्मा से गुरु–शिष्य परंपरा चली और वह ज्ञान समाज में आज तक प्राप्त होता आ रहा है और जो जन इस वेद ज्ञान को लेने से भटक गए, वे आज तक यह नहीं जान पाए कि ईश्वर किसको कहते हैं, वेद ज्ञान क्या है, सत्य क्या है–असत्य क्या है, इत्यादि। ऊपरलिखित मन्त्र ***यजुर्वेद का 40/5*** मन्त्र है। क्योंकि ईश्वर से उत्पन्न वेद ज्ञान अब सुलभ सा हो गया है (अर्थात् जिज्ञासु यदि चाहे तो ईश्वर के वेदों में दिए उपदेश के अनुसार किसी वेद ज्ञाता को खोजे और उसके पास जाकर वेद विद्या ग्रहण करे।) इसलिए वैदिक पुस्तकों एवं पत्रिकाओं आदि के माध्यम से वेद मन्त्रों का ज्ञान (शब्द–ब्रह्म) प्राप्त करना सुलभ है। इसी आधार पर इस ***यजुर्वेद मन्त्र 40/5*** का आप यहाँ अध्ययन कर सकते हैं।

मन्त्र का भाव है कि ब्रह्म चलता है अर्थात् जो वेद ज्ञान नहीं जानते, उन अविद्वानों की दृष्टि में ब्रह्म चलता है। परंतु यह झूठ है कि ब्रह्म चलता है। परमेश्वर के असंख्य दिव्य गुण हैं। एक गुण यह भी है कि

परमेश्वर निराकार है, उसका शरीर, हाथ—पैर इत्यादि कर्मेन्द्रियाँ एवं ज्ञानेन्द्रियाँ नहीं होती। इसलिए वह चल नहीं सकता। दूसरा ना चलने का मुख्य कारण यह भी है कि परमेश्वर सर्वत्र है अर्थात् सर्वव्यापक है। अत: कण—कण में होने के कारण, ऐसा कोई स्थान नहीं बचा जिसमें परमेश्वर ना हो। अत: परमेश्वर को एक स्थान से दूसरे स्थान चल कर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। परंतु यह ज्ञान केवल उसी नर—नारी को है जो वेद का ज्ञान जानकर विद्वान् हो गए हैं। इस सत्य प्रमाण का ज्ञान जिसको भी है कि परमेश्वर सर्वव्यापक है तो वह जब यह कथा सुनेगा कि नदी में हाथी का पाँव मगरमच्छ ने पकड़ लिया तो भगवान् गरुड़ छोड़कर नदी की तरफ भागे और हाथी को बचाया तब वह सोच—विचार में पड़ जाएगा कि वेद तो प्रमाण दे रहा है कि ईश्वर का शरीर नहीं है और वह सर्वव्यापक हैं एवं चल नहीं सकते तब विष्णु भगवान् गरुड़ की सवारी करके कहीं जा रहे थे तो बीच में गरुड़ को छोड़कर एवं भाग कर नदी के किनारे हाथी को बचाने कैसे चले गए, इत्यादि। मन्त्र ने यह भी स्पष्ट किया कि वह परमेश्वर नहीं चलता। भाव यह है कि सर्वव्यापक होने के कारण विश्व में ऐसा कोई स्थान ही नहीं है जहाँ परमेश्वर ना हो। अत: वेद के ज्ञाता जानते हैं कि परमेश्वर नहीं चलता। एक ही स्थान पर स्थित रहकर भक्तों के सब कार्य करता है।

पौर्णमासी और अमावस्या

की आगामी तिथियाँ

(अप्रैल 2024 – सितम्बर 2024)

अप्रैल 2024	मई 2024
08 – अमावस्या 23 – पौर्णमासी	08 – अमावस्या 23 – पौर्णमासी

जून 2024	जुलाई 2024
06 – अमावस्या 22 – पौर्णमासी	05 – अमावस्या 21 – पौर्णमासी

अगस्त 2024	सितम्बर 2024
04 – अमावस्या 19 – पौर्णमासी	02, 03 – अमावस्या 18 – पौर्णमासी

Sugandh 'Sudhi'

Sugarcane

The Summer Saviour

In my college days, we often went to the sugarcane juice vendor outside the campus after our classes. It was because the fresh sugarcane juice helped us boost our mood and rejuvenate us for the rest of the day. Sugarcane juice mixed with lemon, mint leaves and ginger really gives an instant shot of energy.

Sugarcane is a rich source of sucrose. India is the second largest producer of Sugarcane, Brazil being the first. Uttar Pradesh is India's largest sugarcane producer, followed by Maharashtra and Karnataka.

80% is grown in these states and rest in other states such as Tamil Nadu, Andhra Pradesh, Gujarat, Bihar, Haryana and Punjab.

Sugarcane juice is a highly famous nutrient-packed drink and has been used in the Ayurveda system of medicine.

Some Benefits of this popular fibrous plant are as follows:

- **Helps to cure acne**
- **Keeps bad breath and tooth decay at bay**
- **Helps the body to fight cancer.**
- **Enhances liver function**
- **Aids in the development of bones and teeth**
- **The famous "Ganne ka Juice" not only improves digestion but also maintains kidney health.**
- **It is good for skin and hair as it helps to maintain hydration.**
- **Additionally, sugarcane also contains glycolic acid, which helps to recover the lost protein from the skin.**
- **It also acts as an Immunity booster.**

- It has antioxidant properties.
- It is a Remedy for jaundice.
- It helps in reducing weight and cholesterol.
- It helps restore the protein lost during fever.
- It treats sore throat, cold and flu.
- It is a remedy for anti-ageing and fine skin lines.
- It helps moisturize the skin and makes it soft and glowing from the inside.
- It is said to be rich in potassium, phosphorus, magnesium, calcium, iron, and vitamins such as vitamins A, B1, B2, B3, B5, B6, C and E.

The nature of sugarcane juice is cold. It has the properties to calm down the pitta dosha (acid reflux, indigestion, gas, etc,.) and increase kapha dosha. Natural coolant drink is another name for sugarcane.

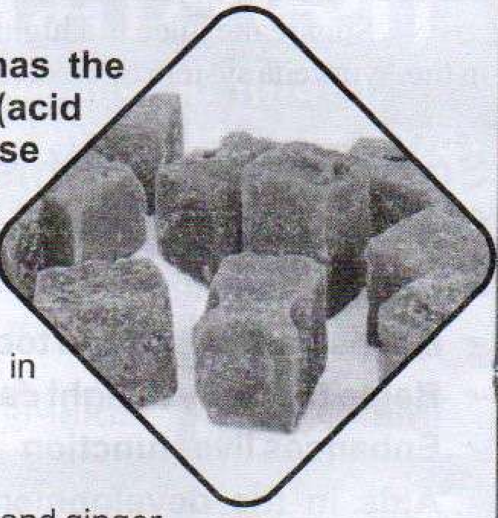

SOME USES OF SUGARCANE :

- It is used in producing brown sugar which is high in demand these days.
- It is used to making sugarcane juice.
- It used to make jaggery, syrup and molasses.
- It is used and mixed with other juices, such as lime and ginger juice.
- Sugarcane stems are cut into small cubes and chewed to strengthen the jaw bones and teeth.

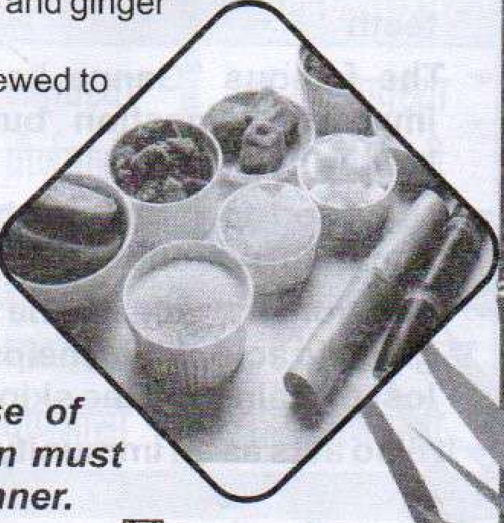

Sugarcane is also one of the best examples of a renewable natural resource as its by-products like biofuel; fiber and fertilizer are known to benefit the environment.

We must be aware that an overdose of anything is bad. Therefore the consumption must be done in a restricted and proportionate manner.

VIV

My Guiding Light

My dear Naanupapa, words can't express the gratitude I feel,
For all you've done, for me, making my heart heal.
You've been my guiding light, my mentor, my friend,
Teaching me life's lessons, helping me transcend.
In studies and in life, you've shown me the way,
Encouraging me to strive, to never go astray.
You've introduced me to God's love and grace,
Guiding me through this world's hectic pace.
Your wisdom and kindness, they shine so bright,
Always reminding me to keep my spirits alight.
I cherish the moments, the memories we share,
For you, Naanupapa, show me how to care.
I may not always say it, but I truly appreciate,
Every little thing you do, the love you radiate.
Thank you, Naanupapa, for being by my side,
For being my source of strength, my loving guide.
So here's to you, Naanupapa, with love so true,
Forever grateful for all that you do.
You hold a special place within my heart,
And I'll cherish you always, even when we're apart.

Swami Ram Swarup 'Yogacharya'

Shubhra
Studying Bachelor's of Business (majoring in Entrepreneurship and innovation) (Australia)

Shubhra Sharma is my grand-daughter [daughter's daughter]. Right from childhood she has been performing daily agnihotra, both times with her mother. She is studying in Australia. Even there, she never fails to perform daily agnihotra with ved mantras and also has been studying Vedas. She has written a poem, from within core of her heart, which has lovingly shaken my heart and soul. Her poem with a pious thought to implement daily agnihotra with ved mantras has been selected to be published in this magazine. Swami Ram Swarup, Yogacharya.

Swami ji's reply –

Thank you Shubhra, my loving daughter,
Your words are like ambrosial water.
I shower blessings, you being my soul,
Be happy be cheerful forever.
I am here you are there,
Can't meet but always you are remembered.

POST GRADUATE PROGRAMS FROM LEADING INDIAN & GLOBAL INSTITUTES

Ivory Education offers world-class programs using e-learning & physical learning in your city

MICA THE SCHOOL OF IDEAS

STEINBEIS UNIVERSITY BERLIN

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT CALCUTTA

IIT Delhi

Institute of Management Technology Ghaziabad

IVORY EDUCATION

For details, free application form & brochures, visit:
www.ivoryeducation.com